डॉ. राधाकृष्ण श्रीमाली

हनुमान तंत्र साधना

ISBN : 81-7182-992-9

प्रकाशक	:	**डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि.** X-30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II, नई दिल्ली-110020
फोन	:	011-51611861
फैक्स	:	011-51611866
ई-मेल	:	sales@diamondpublication.com
वेबसाइट	:	www.diamondpublication.com
संस्करण	:	2004
मूल्य	:	75/-
लेजर टाइपसैटिंग	:	आर. एस. प्रिंट्स, फोन - 26857488
मुद्रक	:	आदर्श प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-32

Hanuman Tantra Sadhana

Radha Krishan Shrimali **Rs. 75/-**

विषय सूची

लेखकीय

श्रीराम भक्त हनुमान के उपासना रहस्यों के विभिन्न आयामों को उद्घाटित करती यह 'रचना' यदि सुधि साधकों के कल्याण में अपना तनिक भी योग दे पाती है, तो लेखक के लिए इससे बड़ी सार्थकता कोई न होगी।

ग्रन्थ को 'गागर में सागर' उक्ति पर खरा उतारने का लेखक ने अपनी ओर से यथासंभव प्रयास किया है। मंत्र, तंत्र, यंत्र व अनेक आध्यात्मिक साधनाओं को अपने में समेटे, यह ग्रन्थ अद्वितीय बन पड़ा है। आशा के साथ ही यह कहते हुए मुझे पूर्ण विश्वास भी है कि साधकों का मार्गदर्शन व शंकाओं का समाधान सहज ही होगा। शंकाओं का समाधान इसलिये भी अत्यावश्यक है, क्योंकि वर्तमान में कई 'तथाकथित' कारक दिग्भ्रमित करने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ रहे।

यह कटु परंतु यथार्थ सत्य है कि जीवन कोई पुष्पशैय्या नहीं अपितु शूलों भरी राह है व मनुष्य कई तरह के संकटों, अड़चनों व दुःखों से जीवन पर्यंत जकड़ा रहता है। उपासना–उस सुमार्ग की ओर एक सुदृढ़ पग है, जो साधक को दुःखों से मुक्ति तो दिलाती ही है साथ ही दिव्य व अलौकिक शक्तियों से परिचित भी कराती है। इसी उद्देश्य से यथासंभव महत्वपूर्ण व गुप्त साधनाओं का समावेश इस ग्रन्थ में किया गया है।

उपासना या साधना की सिद्धि पर प्रश्न चिन्ह लगाना, उन समस्त ऋषि–मुनियों व संतों की कठोर भर्त्सना है, जिनके अथक प्रयासों से साधनाओं की अमूल्य निधि आज हमारे पास है। अतः यह अपील है कि शंकाओं का समाधान कुतर्को से करने के स्थान पर पत्राचार द्वारा लेखक से करें।

ग्रन्थ में प्रयुक्त मंत्रों व यंत्रों को प्राचीन हस्तलिपियों व पाण्डुलिपियों से लिया गया है व यह अपने शुद्धतम रूप में है।

डॉ. राधाकष्ण श्रीमाली

संपादकीय

मानस पटल में हनुमान की दिव्य साधनाओं से संबंधित एक ग्रन्थ की रचना का विचार आने से लेकर आपके हाथों तक ग्रन्थ पहुँचाने को यदि एक *"रोमांचक–यात्रा"* कहा जाए तो किंचित भी अतिश्योक्ति नहीं होगी। इस यात्रा के विभिन्न पड़ावों से साक्षात् हो, मैंने जाना कि साधना की कितनी ही परिभाषाएं दी जाएं परन्तु उसकी संपूर्ण व्याख्या नहीं की जा सकती है। वास्तव में साधना एक "जीवन पद्धति" है।

इस यात्रा की शुरूआत यद्यपि व्यथापूर्ण थी, परंतु अंत अवर्णनीय आनंददायक। इसका संक्षिप्त वृत्तांत इस तरह है। साधको की अपने गुरू व इष्ट के प्रति जो अगाध श्रद्धा होती है उसे मैं बचपन से ही देखता आया हूँ। पिताजी से मिलने व समस्याओं का समाधान चाहने वालों को जब अपने अभीष्ट को प्राप्त करते देखता तब मेरे आनंद का ठिकाना न रहता। उम्र के साथ मैंने साधना की अतल गहराईयों को जाना व नित–नए चमत्कारों से साक्षात्कार हुआ। दुःख व व्यथा से भर देने वाली घटना तो उस समय घटी जबकि साधकों की इस श्रद्धा को *"तथाकथित"* लोगों ने अंध–श्रद्धा समझा व इसका अनुचित लाभ उठाने का प्रयत्न किया। घटिया व बरगलाने वाली सामग्री का प्रकाशन 'इन लोगों' की आर्थिक समृद्धि का साधन बन गया। समय–समय पर साधकों ने इन घटनाओं से विभिन्न संप्रेषण माध्यमों द्वारा परिचित भी कराया परंतु जब समस्या अपनी पराकाष्ठा पर आ गई, तब मैंने इसके समाधानार्थ ***"डॉ. राधाकृष्ण श्रीमाली जी"*** से गुहार की कि *"हनुमान उपासना की वास्तविक रीतियों से परिचित कराता व सभी शंकाओं के समाधान करता एक ग्रन्थ साधकों को आर्शीवाद स्वरूप दीजिए"*। और मेरी प्रार्थना रंग लाई व पुस्तक लेखन का अनुरोध उन्होंने स्वीकार किया। पुस्तक का प्रत्येक अध्याय अथक शारीरिक व मानसिक प्रयासों का परिणाम है। जितनी साधनाओं व प्रयोगों का वर्णन विभिन्न अध्यायों के अंतर्गत किया गया है, वे सभी ठोस वैज्ञानिक तथ्यों

व अनुभवों पर आधारित है। वैसे तो हर अध्याय की लेखन सामग्री जुटाने के दौरान अद्‌भूत व रोचक तथ्य सामने आए परंतु "सप्त सिद्ध पीठों" की यात्रा, वहां के चमत्कारिक उद्‌गार अविस्मिरणीय रूप से सफल रहे।

यह शुभयात्रा अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में कहा तक फलीभूत हुई है। इसका निर्णय तो सुधि साधकों को करना है, परंतु एक अनुरोध मेरा अन्तःकरण साधकों से करना चाहता है कि इस यात्रा को यहीं विराम न दे, अपितु तब तक अनवरत जारी रखें जब तक कि सभी हनुमान साधकों को बरगलाने वालों का समूल नाश न हो जाए व साधकों की साधना संबंधी सभी शंकाओं का समाधन न हो जाए। इस अनुरोध पूर्ति की मुझे पूर्ण आशा है। यदि इस उद्देश्य में किसी प्रकार की समस्या या अड़चन सामने आती है, तो मैं सदैव सहायक के रूप में उपस्थित हूँ। उपरोक्त लक्ष्यों को प्राप्त करने पर ही मैं अपनी *"यात्रा"* को 'सार्थक' अलंकार से सुशोभित करूंगा।

पाठकों! 'हनुमान तन्त्र साधना' एवं ज्योतिष–आध्यात्म से संबंधित किसी भी प्रकार की समस्या उत्पन्न हो तो तुरन्त पत्र अथवा फोन पर सम्पर्क कर सकते हैं। मैं आपको वचन देता हूँ, कि आपकी प्रत्येक जिज्ञासा को शांत करने का प्रयास करूंगा।

सुरेश श्रीमाली
आध्यात्मिक साधना सिद्धि केन्द्र
हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
फोनः–(0291) 432625, 646625, फैक्सः–(02191) 646625

श्री हनुमान : दिव्य अवतरण

केसरीनंदन, अंजनीपुत्र, पवनसुत, शंकरसुवन, संत शिरोमणि, कविशिरोमणि, भक्तशिरोमणि व जन–जन के संकट मोचक 'श्री राम भक्त हनुमान'। हनुमान के दिव्यावतरण के संबंध में विभिन्न वेद व शास्त्रों में प्रसंगानुसार उल्लेख है, परंतु हमारे सुधि पाठकों को हम बिना दिग्भ्रमित किये, विश्वसनीय, 'मानस–पुराण' के उस प्रसंग से परिचित कराते है, जो श्री हनुमान के अवतरण का हेतु बना–

"इन्द्र की रूप–गुण सम्पन्न अप्सराओं में श्रेष्ठ व प्रख्यात अप्सरा श्री 'पुंजिकस्थला' जो रूप का अथाह सागर तो थी ही साथ ही गुणों की खान भी थी। इसे एक संयोग ही कहा जायेगा कि 'पुंजिकस्थला' से एक बार त्रुटिवश किसी परम तपस्वी ऋषि का उपहास हो गया। मुनि अपनी गंभीर प्रकृति के अनुसार इस तरह के उपहास को सहन न कर सकें व उन्होंने तुरंत प्रभावकारी श्राप देते हुए कहा–'हे दुस्साहसिन!तु अवश्य ही मेरी शक्ति से अपरिचित रही है। तभी तुने मेरा उपहास करने का दुस्साहस किया, जा–जिस चंचलता से तुने मेरा उपहास किया है तु वैसी ही चंचल प्रकृति की वानरी हो जा'।

ऋषि का इतना कहना था कि पुंजिकस्थला पर मानों पहाड़ टूट पड़ा, इस श्राप से वह अंदर तक कांप गई व ऋषि के चरणों में पड़ कर विनती करने लगी हे मुनिश्रेष्ठ! मैं अज्ञानी व मूर्ख हूं मुझे कदापि आपकी सामर्थ्य का भान नहीं था' कृपा कर अपना श्राप वापस लीजिये–ऋषि पुंजिकस्थला की विनती से द्रवित हो उठे और उन्होंने कहा 'मेरा वचन मिथ्या जा नहीं सकता, हां इस श्राप का स्वरूप इस सीमा तक बदल सकता है कि तु चाहे तो इच्छानुसार मानुषी रूप में आ सकेगी।

श्राप के प्रभाव से ही उसने कपियोनि में वानर राज महामनस्वी कुंजर की पुत्री के रूप में जन्म लिया। वह अद्वितीय रूप–लावण्य की स्वामिनी थी, इस कुंजर की पुत्री का नाम रखा गया– अंजना। विवाह योग्य अवस्था में वह दंपत्ति संतान सुख से वंचित रही। तत्पश्चात, शिव–आराधना से इन्हें "पुत्र–रत्न" की प्राप्ति हुई–"यह मधुवेला थी, चैत्र शुक्ल अमावस्या व मंगलवार का दिन, पुत्र के रूप में अति सुंदर व स्वस्थ शिशु को प्राप्त कर माता–पिता के हर्ष की सीमा न रही। बाल–हनुमान का आकर्षक सौंदर्य अवर्णनीय था, उनकी काया पिंगलवर्ण थी कानों में मनोहर स्वर्ण–कुण्डल, भाल पर मणि–जड़ित लघु मुकुट, वस्त्र के नाम पर कौपीन और कछनी, मुखमंडल पर तेज व मुस्कुराहट की मिश्रित आभा। देखने वाला प्रथम दृष्टि से ही चकित रह जाता–ऐसी संतान की माँ पुंजिकस्थला बार–बार अपने लाल की बलाईयां लेती।

हनुमान अपने वानर स्वभाव के कारण बचपन से ही चंचल, चपल व शरारती थे, वे तपस्यारत् मुनियों की तपस्या में विघ्न डालते थे, इसी के परिणामस्वरूप उन्हें ऋषियों से यह श्राप मिला कि "वे स्वयं की अनन्य व अद्वितीय शक्ति को तब जानेंगे, जबकि उन्हें कोई इसकी याद दिलायेगा"।

हनुमान उपासनाः युग की प्रासंगिकता

दुःखों, दुष्प्रवृत्तियों, कष्टों से घिरा आज का मानव यदि इससे अपना पिंड छुड़ाने का मानस बना भी ले, तो सही राह व मार्गदर्शन के अभाव में इनसे दूर जाने के स्थान पर स्वयं को इनके चक्रव्यूह में बंधा प्रतीत करता है। कहने को हम आज इक्कीसवीं सदी अर्थात् विज्ञान युग में जी रहे है परंतु स्वयं की अंतरात्मा में झांक कर देखने व अंतर्मन से प्रश्न करने पर हम बारम्बर यहीं उत्तर पाते है कि ना तो हमने विकास की यात्रा की है और ना ही हम प्रगति पथ पर अग्रसर है। अपितु यहां तक कहना मैं तो अतिश्योक्ति नहीं मानूंगा कि हम पतन की गर्त में जा रहे है—क्योंकि पीड़ित मानवता, अबला नारी, जो दहेज प्रताड़ना व बलात्कार का शिकार हो रही है, युवकों का व्यभिचारी आचरण, दुष्प्रवृत्तियों का महाजाल, काम व अर्थ को अधिक महत्व देना, भौतिक सुखों की प्राप्ति की ओर अंधी दौड़। ये सब और इतना बहुत कुछ जिसकी गिनती नहीं की जा सकती''— बाधक है, उस मनुष्य के निर्माण में जिसकी उत्पत्ति ईश्वर ने पृथ्वी पर शांत वातावरण, मर्यादित आचरण व जग संचालन के लिये इस हेतु की थी कि वह ईश—वंदना व प्रभु—स्मरण कर ईश्वर के रूप को जानें। इन सभी में आज का मानव स्पष्ट रूप से असमर्थ व असफल है।

ये सभी समस्यायें अन्योनाश्रित है, और मूल रूप से जुड़ी है हमारे आचरण पर। हम सभी समस्याओं से स्थाई रूप से मुक्ति पाकर ऐसा जीवन व्यतीत कर सकते है, जो दीर्घायु, आध्यात्मिकता, ईश्वर—निष्ठा, ऐश्वर्य व वैभव व सुख—समृद्धि से परिपूर्ण हो। इन सभी सहाचरणों का मार्ग प्रशस्त करती है—हनुमान उपासना व साधना। उपासना का साधारण अर्थ है निकट बैठना या विराजना परंतु आध्यात्मिक स्वरूप में यह अपने इष्ट के प्रति एकाकार भाव हैं।

प्रथम दृष्टि में भले ही दुष्कर प्रतीत होता हो कि ऐसा संभव नहीं कि सभी दुःखों व कष्टों से इतनी सरलता से छूटा जा सकता हैं, परंतु यह संभव व ब्रह्मंड सत्य है कि पवनपुत्र की कृपा दृष्टि जिस साधक पर पड़ी, मानों वह भव सागर से तर गया। हमारे वेद—पुराण, उपनिषद, ऐसे अकाट्य प्रमाणों से भरे पड़े है जिनसे ईश—साधना, के द्वारा दुःखों से मुक्ति का रास्ता बतलाया गया है। हमारी यहीं कोशिश रही है कि वह सामग्री उन लाभार्थियों तक पहुंचे जिन्हें इनकी परम आवश्यकता है। इन ईश—साधनाओं में प्रमुख स्थान रखती है हनुमान साधना जो स्वयं में यंत्र, तंत्र, मंत्र, आदि का अपार भंडार लिये है, आवश्यकता है तो सिर्फ इस बात की कि इस अतुल भंडार का प्रयोग पूरे मनोभाव व सद्—उद्देश्यों के लिये किया जाये। क्योंकि मलिन—उद्देश्यों की पूर्ति के लिये प्रयत्नशील व्यक्ति की ओर ईश्वर कभी कृपा की दृष्टि नहीं डालता।

पुस्तक के आगे के अंशों में इन सिद्धियों की प्रयोग—विधि विस्तारपूर्वक इस उद्देश्य से दी गई है कि सुधि—पाठक लाभान्वित हो सके।

हनुमान उपासनाः विधि व विधान

श्री हनुमान की किसी भी तरह की साधना चाहे वह तंत्र संबंधी, मंत्र संबंधी, या यंत्र संबंधी हो कुछ सामान्य विधि–विधानों की व्याख्या शास्त्रों में की गई है। साधक को इन सभी का विशेष ध्यान रखना चाहिये व सावधानी पूर्वक अक्षरशः इनका पालन करना चाहिये। उपासना के परिणामों की प्राप्ति विधि–विधानों के सही पालन पर ही निर्भर हैं।

काल निर्धारण

शास्त्रों में 'मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी (तेरस) पर हनुमान जी का व्रत करने का उल्लेख मिलता है जो ब्रह्ममुहूर्त में शीघ्र फलदायी है। अतः ब्रह्ममुहूर्त में जागरण करें।

अचारण

ब्रह्ममुहूर्त में उठ नित्य क्रियाओं, शौचादि से निवृत हो, आचार–शुद्धि सात्विकता व ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिये, स्मरण रहे पूर्वरात्रि में संयमपूर्ण आचरण अत्यावश्यक है। मन में साधना हेतू दृढ़–संकल्प धारण करें।

–अन्य तैयारियों में साधक को पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख किये लाल–आसन पर विराजमान होना चाहिये, लाल वस्त्र ही धारण करे, अपने सामने छोटी चौकी पर लाल वस्त्र बिछा दें, तांबे या स्टील की प्लेट पर आराध ाना सामग्री रखें।

हनुमान साधना की विधि बतलाती यह कथा यहां प्रासंगिक होगी, जिसमें सून और शौनक के बीच इस पर वार्तालाप हुआ है।

"अठ्ठासी हजार ऋषि जो हनुमान उपासना के इच्छुक थे, का प्रतिनिधित्व करते हुये शौनक ऋषि ने सूत जी के समक्ष यह प्रश्न रखा "हे सूत जी! कृपा कर यह बताने का कष्ट करें कि हनुमान उपासना से पूर्व व पश्चात की क्या तैयारियां अनुष्ठान के लिये की जाये?

–तब सूत जी ने अपने श्री मुख से उग्र लिखित वाक्य उद्गार किये– "हे ऋषिमुनि गण! यह आपने बहुत ही सार्थक प्रश्न किया है, मेरे सारगर्भित उत्तर को पूरे ध्यान से सुनिये व उस स्थान के बारे में जानिये जो व्रतकार्य के लिये अति उत्तम है–'श्री हनुमान जी की पूजा सर्वप्रथम पंपा नदी के पावन, पवित्र व सुरम्य घाट पर की गई थी। अतः पम्पा नदी के तट पर ही व्रतानुष्ठान करना अति उत्तम होगा (आज के साधक नदी तट पर पूजा से पूर्व पम्पा नदी का आह्वान कर व्रतारंभ करें)। ब्रह्मबेला में शय्यात्याग, नित्यकर्मो से निवृत हो, स्नान–दैनिक पूजन इत्यादि कर्मपूर्ण करने चाहिये। तत्पश्चात् ही योगक्ष्रेम कर्म में लगना चाहियें। 5 प्रकार के बाजों के साथ, भाई–बंधुओं के साथ निकटतम

पवित्र नदी की ओर प्रस्थान करें। मौन धारण अनिवार्य व अत्यावश्यक है। एकाग्रचित्त हो सामान्य पूजा साधना शुद्ध मन से करें। पितरों का तर्पण करें, माथे पर तिलक लगायें व जिस व्यक्ति ने व्रत धारण किया है, वह व्यक्ति पम्पाजी की संपूर्ण वर्णित विधि–विधान द्वारा निम्न प्रकार पूजा करें।

आह्वान–

हेमकूटगिरिप्रान्त जनानां गिरिसामुगाम्।
पम्पावाहथाम्यस्यां नद्यां ह्द्यां प्रत्यनतः।।

आसनं–

तरंगशत कल्लोले रिङ्गतामसोज्जवले।
पम्पा नदि नमस्तुभ्यं गष्हाणासन्मुत्तमम्।।

पांद्यं–

हद्यं सुगान्ध सम्प शुद्धं शुद्धाम्बु सत्कृतम।
पाद्य गष्हाण परम्पारण्ये महानदि नमोऽस्तुते।।

अर्घ्य–

भागीरधि नमस्तुभ्यं सालिलेन सुशोभने।
अनर्ध्यमर्ध्यमनद्ये गष्ह्यतामिदभुत्तम्म ।।

आचमनीयं–

पम्पानदि महापुण्ये सम्पादित सुशोभने।
गोदावरीजलेनाद्य गष्हाणाचमनीयकम् ।।

पंचामृत स्नान–

दुग्धाडड ज्येक्षुरसः पुण्यैदहना च मधुना तथा।
पंचामष्तैः स्नाययिष्य पम्पानदि नमोस्तुते।।

भाग्योदक स्नान–

शुद्वनीलैः शुद्वजलैर्नारिलेलाम्बु मिस्तथा।
पुण्यैः कष्ष्णानदीतोयैः सिंचामि त्वां सरिद्वारे।।

वस्त्र–

महामूल्यं च कापसिं दिव्यवस्त्रमनुत्तमम्।
पम्पानदि महापुण्ये। पम्पाशोभिता शोभने।।

यज्ञोपवीत–

श्रीनस्मार्तादिसत्कर्मफलदं पावनं शुभम्।
यज्ञोपवीत् मधुनाकल्पये सरिदुत्तमे।।

गंध-

कर्पूरगुटिकामिश्रं कस्तूर्या च विमर्दितम्।
यत्नेन कल्पितं गन्धं लेपयेड्ंग सरिद्वरे।।

अक्षत-

लक्षणोक्तान हरिद्राक्तानक्षत्रां श्रोत्तमांछुमान।
पम्पानदि गष्हाणेमांछुभशोभातिवष्द्वये।।

कुमकुम-

अतसीकुसुमोपेतं पंकेरूहदलोज्ज्वलम्।
कुंकुमं शंकरजटासम्भूते सरिदर्पये।।

नेत्रांजन-

कज्जलं त्रिजगद्वनधं महापुण्यतरंगिणि।
नेत्रयोः पालसन्धं गष्हतां सरितां वरे।।

पुष्प-

शतपत्रेश्चं कहलारैः कुकुदैर्बकुलैरपि।
मल्लिकां जाति पुन्नागैः केवलैश्चापि चम्पकैः।।
तुलसीदामभिश्चापि तथा बिल्वदलैरपि।
पूजयामि महापुष्यै पम्पानदि नमोस्तु ते।।

अंग पूजा-

गोदावर्ये नमः पादौपूजयामि
कष्ष्णायै नमः गुल्कौ पूजयामि
पापहरिण्यै नमः जडधे पूजयामि
सुभ्रवे नमः जानुनी पूजयामि
अरूतड्गिण्यै नमः अरू पूजयामि
तडिदुज्ज्वल जवायै नमः कटिं पूजयामि
अम्बुशौभिन्ये नमः नितम्बं पूजयामि
अणुमध्याय नमः मध्यं पूजयामि
सूरतवायै नमः स्तनौ पूजयामि
ललित बाहुतरंगायै नमः कण्ठं पूजयामि
दीर्घवष्यै नमः वेणीं पूजयामि
सुवक्त्रायै नमः वस्त्रं पूजयामि
दुर्वाश्वारि पूरायै नमः शिरः पूजयामि
सहस्त्र मुखायै नमः सर्वाड्ग पूजयामि

धूप–

शदशाङ्ग शुभं दिप्यं सगुग्गुलयुत्तमम्।
राज्यं परिमलोद्भूतं धूपं स्वकुरू पावने।।

दीप–

साज्यमाग्नि प्रकाशोघत्कोटि सूर्य समद्युनिम्।
पश्य दीपं प्रसन्नाङ्गे पम्पा नदि नमोऽस्तुते।।

नैवेद्य–

शाल्यन्नं स्वर्णपात्रस्थं शाकापूपसमन्वित्।
साज्यं दधि पायसं च नैवेद्यं प्रति गष्ह्यताम्।।

ताम्बूल–

पुंगै : सुशोभनैष्ययश्चापि नाग वल्ललीदलैयुतिम्।
ताम्बूलं गष्ह्यतां देवि पम्पानादि नमोऽस्तुते।।

प्रदक्षिणा

प्रदक्षिणात्रयं देवि प्रयत्नेन प्रकाल्पित् ।
पश्याद्य पावने देवि पम्पहानदि नमोऽस्तुते।।

नमस्कार–

नमस्ते नमस्ते विशालोज्ज्वलांगे नमस्ते नमस्ते लसत्साप्तरंगे।
नमस्ते नमस्ते गिरीप्रान्तरंगे नमस्ते नमस्ते कलद्वर्हिरंगे।।

प्रार्थना–

पम्पानदी महापुण्या तरंगिणी नमोऽस्तुते।
त्वत्तीरे हनुमत्पूजा कृता रामेण धीमता।।
मनोरथ फलावाप्तिस्तस्याभीष्ट न संशयः।
सुग्रीवेण च तीरेऽस्मिन् कपिवर्गपतेवर्षतिम्।।
संस्कृतं च मनोवांछा सधस्तस्थ वभूक्सा।
अतस्त्वन्नीर पुलिने कृते हनुमतो व्रते।।
श्रेयांसि मम सर्वाणिनिर्विध्नानि भवन्त्विह।

हनुमंत पूजा–

शुद्ध व पवित्र मन के साथ उत्तरामुख बैठे व श्रीराम का मानस पूजन सीता सहित करें।

आह्वान-

श्री हनुमतः प्राणा इह प्राणा हनुमतो जीव इह स्थितः
सर्वेन्द्रियाणिः वांङ्.मनस्त्वक्चक्षुर्जिह्यध्राणपाणिपादपायूपस्थानि हनुमत
इहामत्य सुखं चिरं निशठन्तु स्वाहा।।
श्रीराम चरणाम्भोज युगल स्थिर मानसम्।
आवाहयानि वरदं हनुमंतमभीष्टदम्।।
आवाहानं समर्पयामि श्री हनुमते नमः।

ध्यान-

कर्णिकार सुवर्णायं वर्णनीयं गुणोत्तमम्।
अर्णवोल्लङ्.धनोधुक्तं तूर्ण ध्यायामि मारूतिम्।।
ध्यानं समर्पयामि श्री हनुमते नमः।।

पुष्पासनम्-

नवरत्नमयं दिव्यं चतुरस्यमनुत्तमम्।
सौवर्णमासनं तुभ्यं कष्पये कपिनायक।।
आसनं समर्पयामि श्री हनुमते नमः।।

पाद्य-

सुवर्ण कलशानीतं सुष्ठु वासितमादयत्।
पादयोः पाद्यमनद्य प्रतिगष्हहाण प्रसीद मे।।
पावां समर्पयामि श्री हनुमते नमः।।

अर्घ्य-

कुसुमाक्षतसम्मिश्रं गष्ह्यता कपि पुंगल।
दास्यामि वे अंजनी पुत्र स्वमर्ध्य रत्नसंयुतम्।
अर्ध्य समर्पयामि श्री हनुमते नमः।।

आचमन-

महाराक्षसदाहिनं सुराधिपसुपूजितः।
विमलं शमलध्न त्वं गृह्यणाचमनीयकम्।।
अर्ध्य समर्पयामि श्री हनुमते नमः।।

पंचामृत स्नान-

माध्वाज्यक्षीरदधिथिः सगुडैमन्त्रि संयुनैः।
पंचामष्तः पष्थक स्नानैः सिंचामि त्वां कपीश्वर।।
पंचामष्त स्नानं समर्पयामि श्री हनुमते नमः।।
शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि श्री हनुमते नमः ।।

मेखला-

ग्रथितां नवभी रत्नैर्मेखलांत्रिगुणीकृताम्।
मौजी मुंजमयीं पीतां गष्हाण पवनात्मज।।
मौजी मेखलां समर्पयामि श्री हनुमते नमः।।

कौपीन/कटिसूत्र-

कहिसूत्रं गष्हाणेद कोपीनं ब्रह्मचारिणः।
कौशेय कपिशार्दूल हरिद्रावक्तं सुमंगलम्।।
कटिसूत्रं समर्पयामि श्री हनुमते नमः।।

उत्तरीय-

पीताम्बरं सुवर्णाभमुत्तरीयार्थमेष च।
दास्यामि जानकी प्रणत्राणकरण गष्ह्यताम्।।
उत्तरीयं समर्पयामि श्री हनुमते नमः।।

यज्ञोपवीत्-

श्रीतस्मर्तादि कर्तष्णां सांगोपांग फलप्रदम्।
यज्ञोपवीतमनद्यं धारयानिलनन्दन।।
यज्ञोपवीतं समर्पयामि श्री हनुमते नमः।।

गंध-

दिव्य कर्पूरं संयुक्तं मषगनाभि समन्वितम्।
सुकुंकुमं पीतगंद्यं ललाटे धारय प्रभो।।
गंद्यं समर्पयामि श्री हनुमते नमः।।

अक्षत-

हरिद्राक्तानक्षतांस्त्वं कुंकुम द्रव्यमिश्रितान्।
धारय श्री गन्ध मध्ये शुभ शोभन वृद्धये।।
अक्षतान् समर्पयामि श्री हनुमते नमः।।

पुष्प-

नीलोत्पलैः कौकनदैः कल्लाहरैः कमलैरपि।
कुमैदः कुण्डरीकैस्त्वां पूजयामि कपीश्वर।।
मल्लिका जाति पुष्पैश्च पाटलैः कुटजैरपि।
केतकी बकुलैश्चूतैः पुनागैर्नाग कैसरेः।।
चम्पकैः शतपत्रेश्च करवीरैनोहरैः।
पूज्ये त्वां कपिश्रेष्ठ सविल्वै तुलसीदलैः।।
पुषणि समर्पयामि श्री हनुमते नमः।।

ग्रंथि पूजा-

अंजली सूतवे नमः प्रथम ग्रन्थि पूजयामि।
हनुमते नमः द्वितीय ग्रन्थि पूजयामि।।
वायुपुत्राय नमः तृतीय ग्रन्थि पूजयामि।
महाबलाय नमः चतुर्थ ग्रन्थि पूजयामि।।
रामेष्टाय नमः पंचम ग्रंथि पूजयामि।
फाल्गुनसखाय नमः षष्ठ ग्रंथि पूजयामि।।
पिंगाक्षाय नमः सप्तं ग्रंथि पूजयामि।
अमित विक्रमाय नमः अष्ठं ग्रंथि पूजयामि।।
सीता शोक विनाशनाय नमः नवम ग्रन्थि पूजयामि।
कपीश्वराय नमः दशम ग्रन्थि पूजयामि।।
लक्ष्मण प्राणदात्रे नमः एकादष ग्रंथि पूजयामि।।
भविष्यद् ब्राह्मणे नमः त्रयोदष ग्रंथि पूजयामि।

अंग पूजा-

हनुमते नमः पादों पूजयामि।
सुग्रीव सखाय नमः गुल्फौ पूजयामि।
अंगद मित्राय नमः जंघे पूजयामि।
रामदासाय नमः ऊरू पूजयामि।
अक्षध्नाय नमः कटिं पूजयामि।
लंका दहनाय नमः बालं पूजयामि।
राम मणिदाय नमः नाभिं पूजयामि।
सागरोल्लङ्धनाय नमः मध्यं पूजयामि।
लंकामर्दनाय नमः केषवलिं पूजयामि।
संजीवीहर्ये नमः स्तनौ पूजयामि।
सौमित्रप्राणदाय नमः वक्षः पूजयामि।
कुण्ठित दष कण्ठाय नमः हस्तौ पूजयामि।
रामभिषेककारिणे नमः हस्तौ पूजयामि।
मंत्ररचित रामायणाय नमः वक्त्रं पूजयामि।
पिंगनेत्राय नमः श्रुति पूजयामि।
उर्ध्व गुण्ड्रधारिणे नमः कपोलं पूजयामि।
मणि कण्ठमालिने नमः शिरः पूजयामि।
सर्वाभीष्ट प्रदाय नमः सर्वांगे पूजयामि।

धूपं–

दित्यं सगुग्गुलं साज्यं दशांगं सर्वात्मकम् ।
गष्हाण मारूते धूपं सुप्रियं धाणतर्पणम् ।।
धूपं आधापयामि श्री हनुमते नमः।

दीपं–

धूत पूरितमुज्ज्वलं सितेसूर्य समप्रभम्।
अतुलं तव दास्यामि व्रतपूत्ये सुदीपकम्।।
दीपं दर्शयामि श्री हनुमते नमः।

नैवेध–

सशाकापूप पाद्यपायसनि च यत्नतः।
सक्षीर दधि साज्यं च सपूपं धष्तपचितम्।।
नैवेधं समर्पयामि श्री हनुमते नमः।

पानीय–

गोदावरी जलं शुद्धं स्वर्ण पात्राह्वतं प्रियम्।
पानीयं पावनोद्‌भुवम् स्वींकुरूत्वं दयानिधे।।
पानीयं समर्पयामि श्री हनुमते नमः।

उत्तरापोशन–

अपरोशनं नमस्तेऽस्तु पापराशि तष्णानलम्।
कृष्णावेणी जलेनैव कुरूष्व पवनात्मज।।
उत्तरोषणं समर्पयामि श्री हनुमते नमः।

हस्त प्रक्षालन–

दिवाकर सुतानीत स्पष्श गन्धिना।
हस्तप्रक्षालनार्थाय स्वीकुरूष्व दयानिधे।
हस्तौ प्रक्षालयितु जलं समर्पयामि श्री हनुमते नमः।

शुद्धचमनीय–

रघवीर पद न्यास स्थिर मानस मारूतें
कावेरी जल पूर्णेन स्वीकुर्वाचमनीयकम्।।
शुद्धआचमनीयं जलं समर्पयामि श्री हनुमते नमः।

पुष्प–

वायु पुत्र नमस्तुभ्यं पुष्पं सौवर्ण प्रियम्।
पूजयिष्यामि ते भूर्धिन–नवरत्न समुज्जवलम्।।
सुवर्ण पुष्पं समर्पयामि श्री हनुमते नमः।

ताम्बूल-

ताम्बूलमनध स्वामिन् प्रयत्नेन प्रकल्पितम्।
अवलोकय नित्यं ते पूरतो रचितं भया।।
ताम्बूलं समर्पयामि श्री हनुमते नमः।।

पुष्पांजलि-

मूर्धानं दिवो आरति पषथित्या वैश्वान मष्त आजातामग्निम्।
कवि सम्राजमतिवी जनानाम सला पात्रं जनयंत देवाः।।
पुष्पाजंलि समर्पयामि श्री हनुमते नमः।।

प्रदक्षिणा-

पापोडहं पापकर्माहं पापात्मा पाप सम्भवः।
त्राहि मां पुण्डरीकाक्ष सर्वपापहरो भव।।
प्रदक्षिणा समर्पयामि श्री हनुमते नमः।।

नमस्कार-

नमस्तेऽस्तु महावीर नमस्ते वायुनन्दन।
विलोक्य कृपया नित्यं त्राहि मां भक्तवत्सल।।
नमस्कारं समर्पयामि श्री हनुमते नमः।।

दोरक ग्रहण-

ये पुत्र पोत्रादि समस्त भाग्यं वांछन्ति वायोस्तनयं प्रपूज्य।
त्रयोदशग्रंथियुतं तदंक वध्नन्ति हरते वरदोर सूग्म्।।
दोर ग्रहणं करोमि श्री हनुमते नमः।।

पूर्वदोरकोत्तारण-

अंजनीगर्थ सम्भूत रामकार्यार्थ सम्भव।
वरदोरकृताभासा रक्ष मां प्रतिवत्सरम्।।
पूर्वदोरकमुन्तारयामि श्री हनुमते नमः।।

प्रार्थना

अनेन भगवान् कार्य प्रतिपादक विग्रहः
हनुमान प्रीणितो भूत्वा प्रार्थिते ह्वदि तिष्ठतु।।
प्रार्थनां करोमि श्री हनुमते नमः।।

वायनदान-

यस्य स्मष्त्या च नामोत्तया तयो यज्ञ क्रियादिणु।
न्यूनं सम्पूर्णतां यानि सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।
वायनं ददामि श्री हनुमते नमः।।

वायन ग्रहण–

ददाति प्रतिगष्हणाति हनुमतैव नः स्वयमम्।
व्रतस्यास्य च पूर्त्य प्रतिगष्हणातु वायनम्।।
वायनं प्रतिगष्हणामि श्री हनुमते नमः।।

प्रार्थना

पम्पा नदि महापुण्या तरंगिणि नमोऽस्तुते।
त्वत्तीरे हनुमत्पूजा कृता रामेण धीमता।।
मनोरथ फलावात्तिस्त्तस्यामीष्टं न संशयः।
सुग्रीवेण च तीरेडस्मिन् कपिवर्यपतेर्व्रतम्।।
संत्कृतं च मनोवांछा सद्यस्तस्य बभूवसा।
अतस्त्वलीर पुलिने कृते हनुमतो व्रतम्।।
श्रेयांसि मम सर्वाणि निर्विघ्नानि भवन्त्विह।

भावार्थ– परम पुण्यमय तरंगों से सुशोभित पम्पा नदी ! तुम्हे नमस्कार है। बुद्धिमान श्रीराम ने तुम्हारे तट पर हनुमान जी की पूजा की थी। उन्हें मनोवांछित फल प्राप्त हुआ। उनका अभीष्ट सिद्ध हो गया, इसमें संशय नहीं। सुग्रीव ने भी तुम्हारे कूल पर कपिवर्यपति हनुमानजी का व्रत किया, इससे उनकी भी मनोवांछा तत्काल सफल हुई। अतः तुम्हारे नीर के पुलिन पर हनुमानजी का व्रत करने के कारण मेरे भी संपूर्ण श्रेय यहां निर्विघ्न सिद्ध होंगे।

श्री हनुमान-मंत्र साधना

प्रिय साधकों ! "श्री हनुमान मंत्र साधना" के बारे में प्राचीनकाल से ही मनुष्यों व देवताओं की अटूट श्रद्धा रही है, यद्यपि कल और आज की परिस्थितियों में परिवर्तन हुआ है व विशेषकर आज के परिप्रेक्ष्य में, मैं मंत्र साधना के मुख्य लाभों को रेखांकित करना चाहूँगा–

हनुमान मंत्र साधना के सुपरिणामः- शास्त्रों व वेदों में चार पुरूषार्थो यथा काम, अर्थ, धर्म व मोक्ष को अपने वश में रखने वाले एकमात्र व्यक्तित्व का वर्णन मिलता है और वह है **"श्रीराम भक्त हनुमान"**। श्री हनुमान ही अष्ट सिद्धियों व नवनिधियों के दाता है। श्री हनुमान की साधना से साधकों को प्राप्त होने वाले अद्भूत लाभदायक है।

1. साधन में निमग्न साधक का साक्षात्कार स्वतः ही ब्रह्मांड की लौकिक व अलौकिक शक्तियों से होता है।
2. बल, बुद्धि और क्षमता का भंडार मिलता है।
3. असाध्य रोगों का निवारण।
4. संपूर्ण संकट व कष्टों से छुटकारा।
5. व्यभिचारी प्रवृतियों का दमन।
6. सद्प्रवृतियों व सद्विचारों का उदय।

विभिन्न मनोरथों हेतु मंत्रों का प्रयोग

1. शत्रु निवारण के लिए

मंत्र : मर्कटेश महोत्साह सर्वशोक विनाशान।
शत्रुन् संहार माँ रक्ष श्रियं दापय में प्रभो।।

साधना विधि :-उक्त मंत्र की साधना के लिए शनिवार या मंगलवार को पीपल के वृक्ष के 11 परिक्रमा करने के पश्चात 51 बार उच्चारण करें व गुड़ का भोग लगाकर हटा दें व सिंदूर चढ़ाये तत्पश्चात वह सिंदूर शत्रु मार्ग पर डाले, शीघ्र ही शत्रु निवारण होगा।

2. प्रेत बाधा निवारण के लिए

मंत्र : ऊँ दक्षिणमुखाय पंचमुख हनुमते करालवदनाय नारसिंहाय ऊँ ह्यां ह्यीं ह्यूं ह्यं ह्यौ सकल भूत प्रेत दमनाय स्वाहा।।

साधना विधि :- हनुमान यंत्र (जो साधना भाग में बताया गया है) के सम्मुख "मूंगा धारण" करके सामान्य पूजा के बाद, तांबे के पात्र में शुद्ध जल लेकर 51

दिन तक नित्य 108 बार मंत्र जाप कर, प्रतिष्ठित जल का आधा भाग "प्रेत–बाधा युक्त व्यक्ति" पर छिड़के व आधा पिलावें।

3. दूरस्थ व्यक्ति को बुलाने के लिए

मंत्र : ऊँ ह्रीं ह्रों ह्रां फट्

साधना विधिः– शनिवार या मंगलवार को पीले वस्त्र पहनकर "रूद्राक्ष धारण करें" व सामान्य पूजा के बाद, इच्छित व्यक्ति की तस्वीर के सामने शांत स्थान पर 1000 जाप करें, घी का दीपक साधना समय में प्रज्ज्वलित रहना चाहिये। इच्छित व्यक्ति से शीघ्र ही भेंट होगी।

4. तेज, बल तथा पराक्रम के लिए

मंत्र : ऊँ ठं ठं ठं अमितबलाय नमः

साधना विधिः–इस प्रयोग के लिए निरंतर 15 दिन का अखंड ब्रह्मचर्य आवश्यक है। तत्पश्चात आने वाले मंगलवार की मध्य रात्रि में यह प्रयोग खुले आकाश के नीचे करें। सामान्य विधि–विधान व पूजा के बाद दीपक के ऊपर 51 बाद फिरा कर **"रूद्राक्ष धारण"** करें, तत्पश्चात 1001 बार मंत्र का जाप पूरे मनोयोग से करें। ऐसा प्रयोग 11 बार करें। मंत्र के प्रयोग काल में ही सूर्य के समान तेज, अश्व समान बल व पराक्रम की प्राप्ति होगी।

5. धन, संपत्ति व यश प्राप्ति के लिए

मंत्रः ऊँ नमो हनुमते रूद्रावताराय भक्तजनमनः
कल्पना कल्पद्रुमाय दुष्ट मनोरथस्तम्भनाय प्रभंजन
प्राणप्रियाय महाबल पराक्रमाय महाविपत्ति निवारणाय पुत्र
पौत्र धन धान्यादि विविध सम्पत्प्रदाय रामदूताय स्वाहा।।

साधना विधि :– ग्रहणकाल में इसकी साधना अतिउत्तम हैं। सफेद वस्त्र धारण करं, "मूंगा माला" धारण करें व भोग के लिए गुड़ व चावल के दाने प्रयोग में लायें। ग्रहणकाल में प्रारंभ करके मंत्र का जाप 1000 बार करें तत्पश्चात गुड़ चावल पशु को डाल दें, इससे अभूतपूर्व धन, धान्य व यश की प्राप्ति होगी।

6. कार्य सिद्धि के लिए

मंत्रः ऊँ हनुमते नमः

साधना विधिः–उपर्युक्त मंत्र "श्री हनुमान" के नाम का प्रताप बतलाता है।

हनुमान यंत्र के सामने मंगलवार से प्रारंभ कर 30 दिनों तक प्रतिदिन 501 जाप करें व 31 वें दिन प्रातःकाल ब्रह्ममुहूर्त में उठ यंत्र को नदी में विसर्जित करना चाहिये। वापसी के समय किसी से बात न करें न ही पीछे मुड़ कर देंखे।

7. श्री हनुमान को प्रसन्न करने के लिए

मंत्रः रां रामाय नमः

साधना विधिः-रामायण हनुमान चालीसा या सुन्दरकाण्ड के पाठ में उक्त मंत्र का सम्पुट लगाने से हनुमान प्रसन्न होते है।

8. रक्षा और भय निदान के लिए

मंत्रः अंजनीगर्भ सम्भूत कपीन्द्रसचिवोत्तम।
राम प्रिय नमस्तुभ्यं हनुमत् रक्ष सर्वदा।।

साधना विधिः- व्यक्ति अनेक प्रकार के भय से ग्रस्त रहता है, भय या आंतक का चाहे कोई भी रूप हो यह मंत्र अचूक अस्त्र है उसे नष्ट करने का।

मंगलवार की मध्य रात्रि को "श्याम वस्त्र" व मूंगा धारण कर "हनुमान रक्षा चक्र" (जिसका विवरण यंत्र साधना भाग में है) के सम्मुख 1001 बार जप करें ऐसा निरंतर 21 दिन तक अखंडता से करें। इस बीच घी का दीपक प्रज्जवलित रहना आवश्यक है। तत्पश्चात "चक्र" को नदी में विसर्जित करें सभी प्रकार के भय व आंतक स्थायी रूप से दूर हो जाएंगे।

9. जीवन में सदैव विजय प्राप्ति के लिए

मंत्र : **ऊँ नमो हनुमते रूद्रावताराय सर्वशत्रुसंहारणाय सर्वरोग हराय सर्ववशीकरणाय रामदूताय स्वाहा।।**

साधना विधि :- इस मंत्र साधना के लिए विशेष पूजा अर्चना की आवश्यकता नहीं है। लाल हकीक की माला पहनकर प्रतिदिन 81 बार मंत्र जाप से आप में अभूतपूर्व सामर्थ्य का संचार होगा व शत्रु एवं रोगों पर विजय मिलेगी।

10. हनुमान की तरह गुरू भक्ति प्राप्ति हेतु

मंत्रः **ऊँ नमो हनुमते रूद्रावताराय अध्यात्मिकाधि दैविकाधिभौतिकतापत्रय निवारणाय रामदूताय स्वाहा।।**

साधना विधि :- हनुमान जयंती पर प्रातः काल उठकर स्नानादि के बाद "मूंगा माला" से 201 जाप करके प्रसाद रूप में चढ़ाये गये गुड़ को खिलायें। "मूंगा" को जल में विसर्जित करें। गुरू की असीम कृपा के पात्र बनने का अवसर मिलेगा।

11. कामना पूर्तिकारक मंत्र

मंत्रः कोदर तमसी रामसुख, पीथल मोती हीर।
भोय दीप सुख श्यामजी, भिक्षु शिष्य बड़वीर।।

साधना विधिः- यह मंत्र अत्यंत ही सरल व दोहा रूप में है। एकांत, शांत, पवित्र व शुभ स्थान पर शनिवार को इसका जाप आरंभ करें, ब्रह्ममुहूर्त में की गई शुरूआत शुभ है। साधक को सफेद वस्त्र धारण करने चाहिये, जाप 8,1,00 की संख्या में हो किसी विशेष सामग्री की आवश्यकता नहीं है। जिस कामना पूर्ति के लिए साधना की जाय उस कार्य के लिए जाने से पूर्व पीपल वृक्ष के सात परिक्रमा कर सात बार मंत्र का उच्चारण करें अचूक सफलता का वरण होगा।

स्वास्थ्य संबंधी कष्ट निवारक मंत्रों का प्रयोग

ब्रह्मचर्य सभी सुखों का मूल मंत्र है और श्री हनुमान से बढ़कर ब्रह्मचर्य का आदर्श रूप नहीं है अतः श्री हनुमान की इसी शक्ति को आधार मानकर अग्रलिखित कुछ शारीरिक व्याधियों के निवारण के लिए मंत्र प्रयोगों की व्याख्या प्रस्तुत करने का एकमेव उद्देश्य यही है कि साधकों को लाभ मिले।

1. पेट दर्द निवारक मंत्र

मंत्रः ऊँ नमो इट्ठी मीट्ठी भस्म कुरू कुरू स्वाहा।।

साधना विधिः-एक प्रयोग में यह मंत्र 1 लीटर (लगभग) शुद्ध जल को प्रतिष्ठित करने की सामर्थ्य रखता है। प्रयोग के लिए जल को (कुएं या बावड़ी का होना अनिवार्य है) कांसे के पात्र में ले जिसे प्रयोग की पूर्व रात्रि में गर्म कर खुली हवा में रख दिया गया हो।

अगले दिन प्रातः काल दैनिक कर्म से निवष्त हो 11000 बार इस मंत्र का जाप जल को हनुमान प्रतिमा के सम्मुख रखकर करें। तत्पश्चात 81 फूंके जल में मारे व एक अंजुली जल हनुमान चरणों में अर्पित करे दें। अब इस प्रतिष्ठत जल की चार बूंदे यदि सामान्य पेय जल में मिलाकर दे दी जाये तो स्थायी रूप से पेट दर्द चला जाएगा। जल को दीर्घावधि प्रयोग के लिए सुरक्षित रखा जा सकता है व पीड़ित व्यक्तियों की सेवार्थ प्रयोग किया जा सकता है।

2. मस्तिष्क संबंधी व्याधियां

मंत्रः हजार घर एक घर खाय, आगे चले तो पीछे जाय।
फुरो मंत्र ईश्वर वाया।।

साधना विधि :-हरे रंग के कपड़े को पीपल की डाल से बांधकर 51 बार इस मंत्र का उच्चारण शुद्ध हृदय से करने पर, वस्त्र में शक्ति का संचार होगा इस

वस्त्र को रोगी के कपाल पर बांधे व पुनः 21 बार मंत्र का उच्चारण करें। तीव्रोन्तर मस्तिष्क ज्वर भी दूर होगा।

3. आधा शीशी झाड़ना

आधा शीशी की पीड़ा से छुटकारे हेतु दो मंत्रों का प्रावधान है। साधक किसी भी एक का चयन कर सकता है।

मंत्रः वन में ढयाई अंजनी कच्चे वन फल खाय।
हांक मारी हनुमंत ने इस पिंड से आधासीस उतर जाय।

साधना विधि :–पीड़ित व्यक्ति को दक्षिणोन्मुख आसान पर बैठाये। अपने दाहिने हाथ में रोगी के सर पर हाथ रख, 100 बार मंत्रोच्चारण कर भभूत फूंके रोगी का दर्द आश्चर्य जनक रूप से समाप्त होगा।

मंत्र : लंका में बैठ के माथ हिलावे हनुमंत, सो देखिकें राक्षसगण पराय दुरन्त।
बैठी सीतादेवी अशोक वन में, देखि हनुमान को आनंद भयी मन में।
गई डर विषाद, देवी स्थित दरसाय,...................... के सिर व्यथा पराय
.... के नहीं कछु पीर कुछ भार।

साधना विधिः–स्वच्छ कपड़ा बिछाकर व श्वेत वस्त्र धारण करवाकर रोगी व्यक्ति को दक्षिण की और पैर करके लेटने को कहें, फिर उसके भाल पर चंदन लगाये। फिर स्वयं के हाथ में "मंगा माला" ले मंत्रोच्चार के साथ सात बार फेंरे। तत्पश्चात रोगी के 21 चक्कर लगायें। रोगी को आराम की अनुभूति शीघ्र ही होगी (मंत्र के खाली स्थान पर रोगी का नाम ले)।

4. कर्ण रोग निवारणार्थ

कान से संबंधित किसी भी प्रकार के रोग के लिए यह मंत्र अत्यंत असरकारक है।

मंत्रः वनरा गांकि वानरी तो डांटे हनुमान कंठ।
बिलारी बांधी थनैली कर्णूल सम जाइ।
श्रीराम चंद्र की बानी पानी पथ होइ जाइ।।

साधना विधिः–लाल रंग के वस्त्र से पीड़ित व्यक्ति के कान को ढककर उपरोक्त मंत्र का 11 बार उच्चारण कर भभूत मारें तथा लाल वस्त्र को 3 रात्रि निरंतर पीड़ित व्यक्ति के सिराहने रखे, स्मरण रहे कि रोगी पीड़ित कान की ओर सिराहना करके सोये व चौथे दिन वस्त्र को नदी में विसर्जित कर आए। आते–जाते मौन धारण अनिवार्य है व दायें, बायें और पीछे देखना वर्जित है। पूर्ण श्रद्धा व विश्वास से की गई साधना शीघ्र फलदायी है।

5. दंत रोग निवारणार्थ

मंत्रः ऊँ नमो आदेष गुरू को।
वन में ढयाई अंजनी, जिनजाया हनुमान।
कीड़ा, मकोड़ा ए तीनों भस्मल
गुरू की शक्ति, मेरी भक्ति, फुरो मंत्र ईश्वरों वाचा।।

साधना विधिः–दीपावली की मध्य रात्रि को प्रारंभ कर यह मंत्र 1 लाख की संख्या में पूर्ण करना चाहिये जब भी साधना के लिए बैठे तो घी का दीपक जलता रहना चाहिये व "मूंगा धारण" करना चाहिये। इस प्रकार यह मंत्र प्रतिष्ठित हो जाएगा व जब भी भविष्य में इसकी आवश्यकता पड़े तो नीम की टहनी से मंत्रोच्चारण करते हुए रोग को झाड़ना चाहिये, दंत संबंधी सभी रोग नष्ट होंगे।

6. नेत्र रोग निवारक मंत्र

मंत्रः ऊँ नमो वन में ढयाई वानरी जहां–जहां हनुमान
अंखियां पीर कषवारों गेहिया थने लाई परिडं ज़ाय जमन्तर
फुरो मंत्र ईश्वरों वाचा।।

साधना विधिः किसी भी शनिवार या मंगलवार को प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में उठ, आवश्यकतानुसार शुद्ध जल तांबे के पात्र में ले 91 बार मंत्रोच्चारण करें व प्रत्येक व प्रत्येक बार मंत्र के बाद में फूंक दे। इस तरह जल सिद्ध होगा, फिर रोगी व्यक्ति से कहे कि वह पीड़ित नेत्र/नेत्रों पर सात छिंटे मारे। इस तरह प्रत्येक प्रकार के नेत्र संबंधी रोग का निवारण होता है।

7. विष उतारने हेतु

मंत्रः ऊँ पश्चिममुखाय गरूडाननाय
पंचमुख हनुमते मं मं मं मं मं सक विषहराय स्वाहा।।

साधना विधिः मंत्र के प्रभावी असर हेतु साधक को दीपावली की अर्द्धरात्रि में साधना करनी चाहिये। इस हेतु 10,000 मंत्रोच्चारण कर मंत्र सिद्धि की जा सकती है। तत्पश्चात जब भी आवश्यकता हो पीड़ित अंग को भभूत से मंत्रोच्चारण करते हुए झाड़ने से बिच्छू, बर्रे, नाग व अन्य विषधारी जीवों का विष उतर जाएगा।

दिव्य शक्तियों हेतु मंत्रो का प्रयोग

बंधुओं! " हनुमान मंत्र साधना" की शक्ति यहीं तक सीमित नहीं अपितु इसके और भी कई दिव्य रूप है जिन्हें सिद्ध करने से सुपात्र साधकों को हनुमान जी की कृपा दृष्टि मिलती है इस असीमित, विशाल व अतुलीय "मंत्र साधना" के भंडार में साधकों के कल्याणार्थ शास्त्रों में उल्लेख मिलते है कि जब भी पूर्ण आस्था व श्रद्धा भक्ति भाव से साधक ने प्रयास किया है वह अवश्य लाभांन्वित हुआ हैं। अतः आगे और भी दिव्य मंत्रों की जानकारी देना अप्रासंगिक न होगा।

श्री हनुमान मंत्र

श्री हनुमान जहां परम शक्ति के आदर्शतम रूप है, वहीं अनेक अन्य प्रतिभाओं के भी धनी है। वे परमभक्त है जो स्वामी के लिए सर्वस्व समर्पण की भावना रखते है। वे कुशल योद्धा है जो रणक्षेत्र में शत्रु का संहार करते है। वे कुशल रणनीतिकार व कूटनीतिज्ञ है तभी वे अकेले ही लंका–दहन की योजना क्रियांवित कर सके और वे उस परम शक्ति के स्वामी है जिससे किसी भी कार्य को मूर्तरूप देने में सहायता मिलती है और वह है ब्रह्मचर्य।

इन सभी गुणों से युक्त हनुमान की साधना, साधकों में असीम शक्ति, ज्ञान व सामर्थ्य का संचार करती है। यहां ऐसे ही प्रभावी मंत्रों का उल्लेख किया जा रहा है जो उपरोक्त लक्ष्यों को पाने में सहायक होंगे–

ऊँ हं हनुमंते आंजनेयाय महाबलाय नमः।

ऊँ आंजनेयाय महाबलाय हूं फट्।

ऊँ ऐं ह्रीं हनुमंते रामदूताय नमः।।

हनुमन् सर्वधर्मज्ञः सर्व कार्य विधायकः।

अकस्मादागतोत्पातं नाशयासु नमोऽस्तुते।।

हनुमंतजनीसूनो वायुपुत्रं महाबलः।

अकस्मादागतोत्पातं नाशयाशु नमोऽस्तुते।।

साधना विधिः–उपरोक्त मंत्रों में से किसी का भी चयन साधना के लिए किया जा सकता है। साधना की सिद्धि ग्यारह दिन तक प्रतिदिन 5,000 की संख्या में जाप करने से हो जाएगी। इन मंत्रों में अनुष्ठान का अत्याधिक महत्व है, अतः किसी जानकार, ज्ञानी व योग्य पंडित से पूजा–विधि अनुष्ठान हेतु मार्ग दर्शन ले ले, क्योंकि बिना उचित अनुष्ठान विधि से मंत्र के प्रभावों से परिचित नहीं हुआ जा सकता। साथ ही साधना दिवसों में अखंड ब्रह्मचर्य का पालन करें। अंतिम दिन दशांश (दसवां भाग = 5000 10 = 500) हवन करें। पवनपुत्र के

कृपा स्वरूप साधक पर आयी सभी प्रकार की विपत्तियां, कष्ट व परेशानियां दूर होगी एवं सुख, सौभाग्य, बल, वीर्य, तेज व धन की प्राप्ति होगी।

हनुमान प्रत्यक्ष साधना सिद्धि प्रयोग

मंत्रः ऊँ नमो हनुमंताय आवेशय आवेशय स्वाहा

साधना विधिः–यह प्रयोग श्री हनुमान के प्रत्यक्ष दर्शन के लिए किया जाता है। केवल वहीं साधक इसे करने का संकल्प ले जो साधना अवधि में पूर्ण श्रद्धा भाव व विश्वास रख सकें। किसी भी शनिवार या मंगलवार को ब्रह्ममुहूर्त में उठे व सर्वप्रथम हनुमान जी की तस्वीर का दर्शन करें। (रात्रि में सोने के समय पास में या सामने तस्वीर रखी जा सकती है) स्नानादि नित्य कर्मो से निवृत हो मौन धारण करें व पूरे दिन मौन रहे व बुरे विचारों का त्याग करें। दिन में एक बार बिना नमक व हल्दी का भोजन करें। साधना रात्रि में 9 से 1 बजे के बीच कभी भी शुरू की जा सकती है। उत्तर की ओर मुख हो व ''मूंगा माला'' से 151 जप करें, प्रातः नैवैध का भोग श्री हनुमान को लगाकर अपने लिए प्रसाद स्वरूप रखे व शेष निर्धन व्यक्ति को दें ऐसा अनवरत 11 दिनों तक करें। हनुमान जी किसी भी रूप व वेश में आपको दर्शन देंगे। आपमें यह सामर्थ्य हो कि आप अपने आराध्य को पहचानें।

विशेष कष्टों से मुक्ति पाने के लिए श्रेष्ठतम प्रयोग

मंत्रः ऊँ हुं हुं हुं ह्यो हुं हुं फट्

साधना विधि :–यह किसी भी विशेष परिस्थिति से उबरने के लिए सर्वोत्तम है। याद रखें इसे हर संकट के लिए अलग–अलग करना होता है।

किसी भी शनिवार या मंगलवार को मध्य रात्रि में लाल धोती धारण करें, सभी प्रकार की साधना सामग्री यथा, पूजन व प्रसाद सामग्री की व्यवस्था करें, घी का दीप प्रज्ज्वलित करें। यह सब पश्चिम की ओर मुख करके करें। दीप के चारों ओर आम या नीम की सात छोटी–छोटी टहनियां रखे व मंत्रोच्चारण शुरू करें। 151 मंत्रोच्चारण पर टहनियों को नदी में विसर्जित करें तथा विसर्जन नियमों यथा पीछे व दांए, बांए न देखे व मौन रखे आदि का पालन करें। इस साधना से आपका तत्कालिक संकट दूर होगा।

विषम परिस्थितियों में वज्र की तरह अडिगता के लिए

मंत्रः ऊँ नमो हनुमते रूद्रावताराय वज्रदेहाय वज्रमखाय
वज्रमुखाय वज्ररोम्णे वज्रनेत्राय वज्रदंताय वज्रकराय
प्रिय भक्ताय रामदूताय स्वाहा।।

साधना विधिः–संपूर्ण मानव जीवन की कैसी भी विषम परिस्थिति हो, उससे निपटने में समर्थ होने के लिए यदि साधक यह साधना करें तो प्रत्येक परिस्थिति में वह वज्र के समान अडिग व अटल रह सकता हैं।

उपरोक्त मंत्र का उच्चारण 11 दिन तक रात्रि में किसी भी वृक्ष की 11 परिक्रमा करते हुए 11 बार करें। तत्पश्चात किसी से भी बात न करें व आकर सीधे सो जाए सोने पर पैर पूर्व दिशा में हो। यह साधना आपको सभी प्रकार की परेशानियों, दुःखों, विपत्तियों व दुश्मन के समक्ष वज्र के समान अडिग रहने की शक्ति प्रदान करता है।

सूर्य समान तेजस्वी होने हेतु

मंत्रः ऊँ नमो हनुमते रूद्रावताराय विश्वरूपाय अमित विक्रमाय
प्रकट पराक्रमाय महाबलाय सूर्यकोटि समप्रभाय रामदूताय स्वाहा।।

साधना विधिः–किसी भी महान विभूति के चेहरे पर अद्‌भूत तेज होता है, जो हर किसी को सहसा अपनी और आकृष्ट करता है। दूसरों पर प्रभाव के लिए नेत्र, मस्तक व संपूर्ण चेहरे पर ही तेज की आवश्यकता होती है ऐसे तेजस्वी पुरूष को हर कार्य में सफलता मिलती है।

गाय के कच्चे दूध को हनुमान प्रतिमा के सामने रख यह मंत्र 501 बार उच्चारित करें तत्पश्चात दूध में 21 फूंक मारे फिर दुग्ध से अपने चेहरे पर लेप करें व पुनः सात बार मंत्रोच्चारण के बाद शुद्ध जल से मुंह धोये ऐसा किसी भी मंगलवार या शनिवार को सूर्योदय के बाद व सूर्यास्त से पूर्व करना चाहिये। 7 मंगलवार या शनिवार तक साधना करने से आश्चर्य जनक रूप से तेजस्विता प्राप्त होगी।

शत्रुओं के मुख स्तंभन के लिए

मंत्रः ऊँ नमो भगवते हनुमदाख्याय रूद्राय सर्वदुष्टजन
मुखस्तंभन कुरू कुरू स्वाहा।।

साधना विधिः–इस मंत्र का प्रयोग केवल दुराचारी, धोखेबाज व दुष्ट व्यक्ति के विरूद्ध किया जाये किसी सद्‌पुरूष के विरूद्ध नहीं अन्यथा विपरीत प्रभाव होगा।

मंत्र सिद्धि के लिए किसी मंगलवार से प्रारंभ कर 11 दिन तक साधना करनी होती है। पूरे दिन व्रत रखने के बाद रात्रि में उत्तर दिशा की ओर मुख कर "मूंगा माला" द्वारा 251 जाप करें। शत्रु का मुख स्तंभन हो यह कहते हुए अंतिम दिन "मूंगा" नदी में विसर्जित कर दें। विसर्जन नियमों का पालन करें।

अगले दिन प्रातः साधना की भभूत शत्रु मार्ग पर डाल दें। प्रथम दिन फलाहार व अन्य दिनों में दिन में एक बार भोजन करें। (बिना नमक का) निश्चित रूप से शत्रु मुख स्तभंन होगा।

मानस मंत्र

इसमें कोई दो राय नहीं कि मंत्रों में अद्भूत, आश्चर्य जनक, प्रभावी व अचूक शक्ति होती है और साधकों द्वारा इनके प्रयोग से लाभान्वित होने के भी असंख्य उदाहरण मिलते है, दोहों या चौपाईयों में मंत्र शक्ति के संचार का कारण यह माना जाता है कि जप प्रधान है ना कि शब्दावली। ऐसा होना सर्वसाधारण के लिए वरदान सिद्ध हुआ है, क्योंकि इससे अधिकाधिक मनुष्यों तक मंत्र–साधना के लाभ पहुंचे हैं।

मानस–मंत्रों की दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह अन्य मंत्रों की तरह बंधनकारी नहीं है यदि साधक बतायी गई संख्या से अधिक जप भी कर ले तो कोई दुष्परिणाम नहीं होता। यह मंत्र सात्विक व शीघ्र फलदायी हैं।

किसी भी मानस–मंत्र की सिद्धि से पूर्व अपने आसन के चारों और कोयले या जल से रक्षा रेखा खींच लेनी चाहिये, इससे साधना–समय में आने वाली विध्न--बाधाएं दूर होती है उल्लेखनीय है कि राम की खोज में जाने से पूर्व लक्ष्मण इसी मंत्र की रेखा खींच उस संरक्षण में माता सीता को छोड़ गये थे।

मामभिरक्षय रघुकुल नायक।
धष्त वर चाप रूचिर कर सायक।।

इसकी सिद्धि के लिए 108 बार हवन के साथ मंत्रोच्चार करें।

महत्वपूर्ण मानस-मंत्र

भूत भगाने के लिए

प्रनवऊं पवन कुमार खल बन पावक ग्यान धन।
जासु ह्दयं आगार बसंति राग सर चाप घर।।

विद्या प्राप्ति के लिए

बुद्धिहीन तनु जान कैं सुमिरों पवन कुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहि हरहु कलेश विकार।।

मुकदमें में विजय प्राप्ति के लिए

पवन तनय बल पवन समाना। बुद्धि विवेक विग्यान विधाना।।

मस्तिष्क पीड़ा निवारण

हनुमान अंगद रन गाजे। हांक सुनत रजनीचर भाजे।।

हनुमान जी की प्रसन्नता के लिए

सुमिर पवन सुत पावन नामूं। अपने बस करि राखे रामू।।

विवाह हेतु

मास दिवस महुं नाथु न आवा। तो पुनि मोहि जिअत नहि पावा।।

मानस मंत्र साधना-विधिः— मानस मंत्र की एक विशेषता यह भी है कि यह सभी मंत्र एक ही साधना–विधि द्वारा सिद्ध किए जा सकते है।

किसी भी पवित्र दिवस को मंत्र सिद्धि के लिए चुना जा सकता है। मृगचर्म, व्याघ्र चर्म, लाल ऊन इन में से किसी का भी आसन, दक्षिणोन्मुखी कर रक्षा रेखा खींच लें। जिस किसी भी उद्देश्य से मानस मंत्र का जाप किया जाये, मध्य रात्रि से शुरू कर 108 मंत्रों से हवन करना चाहिये। हवन में अष्टांग सामग्री देशी घी, शक्कर, चंदन का बुरादा, तिल, अगर, नगर, नागर मोथा, कपूर, केसर, पंचमेवा (किशमिश, गोला, पिस्ता, काजू, अख रोट) जौ तथा चावल बराबर मात्रा में लेना चाहिये। इन सभी वस्तुओं का सम्मिलित भार एक सेर होना चाहिये।

मंत्रोच्चार के समय अंत में 'स्वाहा' का उच्चारण करते हुए समिधा अग्नि में आहूत करें। समिधा अनिवार्य रूप से पीपल, बड़, आम या नीम के वृक्ष की ही हो। हवन करने से मंत्र जागृत हो जायेगा, अब प्रातःकाल नियमित रूप से 21 दिन तक 108 **"मूंगा माला"** जप करें, जो भी उस मंत्र के देवता है यथा भगवान राम, सीता या हनुमान, मंत्रोच्चारण से पूर्व उनका ध्यान करना चाहिये। अंत में भी देवता के प्रति पूर्ण समर्पण भावना रखें।

स्त्रियां भी **"मानस मंत्र"** साधना सिद्धि कर सकती है परंतु **'रजवस्ला स्त्री'** इस अवस्था में न करें।

बजरंग बाण

(एक संकट मोचन मंत्र)

बजरंग बाण वह अमोध अस्त्र है जो साधक को विकटतम परिस्थितियों से उबार ले जाता है। बजरंग बाण के उच्चारण से जहां साधक को बुद्धि व बल मिलता है वहीं उसके रोम–रोम में हनुमान ज्योति प्रज्ज्वलित हो उठती है। शास्त्रों में "बजरंग बाण" के आश्चर्य जनक प्रसंगों की व्याख्या की गई है। नयी शक्ति, साहस व नवीन प्रेरणा के संचार में यह अत्यंत कारगर है। इसकी आश्यकता विशेष रूप से उस समय पड़ती है जब साधक को भय, निराशा, दुःख व पीड़ा ने चारों ओर से घेर लिया हो।

आज के युग में समाज के प्रत्येक वर्ग को इस अद्‌भूत मंत्र से लाभान्वित होना चाहिये परंतु यहां पर उल्लेख करना अप्रासंगिक न होगा कि युवा वर्ग के लिए यह वरदान है व साक्षात्कार या परीक्षा में बैठने से पूर्व यदि इसका उच्चारण कर लिया जाये तो अपेक्षित परिणाम शीघ्र ही मिलेगे।

आगे **"बजरंग बाण"** का क्लिष्टतम रूप व साधना विधि साधकों के हितार्थ दी जा रही है–

पाठ करने से पूर्व ध्यान पूर्वक यह उच्चारित करें–

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकल गुण निधानं वानराणामधीशं
रघुपति प्रियभक्तं वातजातं नमामि।।

दोहा: निश्चय प्रेम प्रतीत ते, विनय करैं सनमान।
तेहि के कारज सकल शुभ सिद्ध करैं हनुमान।।

जय हनुमंत संत हितकारी। सुन लीजै प्रभु अरज हमारी।
जन के काज विलंब न कीजें। आतुर दौर महासुख दीजै।।
जैसे कूदि सिंधु के पारा। सुरसा बदन पैठि विस्तारा।
आगे लाय लंकिनी रोका। मारे हु लात गई सुरलोका।।
जाय विभीषण को सुख दीन्हा। सीता निरखि परम पद लीन्हा।
बाग उजारि सिंधु महं वोरा। अति आतुर यमकातर तोरा।।
अक्षय कुमार मारा संहारा। लूमि लपेटि लंक को जारा।
लाह समान लंक जरि गई जय–जय धुनि सुर–पुर नभ भई।।
अब विलंब केहि कारण स्वामी। कृपा करहु प्रभु अन्तरयामी।
जय–जय लक्ष्मण प्राण के दाता। आतुर होइ दुःख करहू निपाता।।

जय गिरधर जय–जय सुख सागर। सुर समूह समरथ घटनागर।
ऊँ हनु–हनु हनुमंत हठीले। बैरिहिं मारू वज्र के कीले।।
गदा व्रज लै बैरहिं मारौ। महाराज निज दास उबारौ।।
सुनि हुंकार हुंकार दै धावौ। व्रज गदा हनु विलंब न लावौ।।
ऊँ ह्रीं ह्रीं हनुमंत कपीशा। ऊँ हुं हुं अरि उर शीशा।।
सत्य होय हरि शपथ पायके। रामदूत धरू मारू धायके।।
जय जय जय हनुमान अगाधा। दुःख पावत जन केहि अपराधा।।
पूजा जप तप नेम अचारा। नहिं जानत कुछ दास तुम्हारा।।
वन उपवन मग गिरी गष्ह मांही। तुम्हरें बल हौं डरपत नांही।।
पायं परौ कर जोरि मनावौं। अपने काज लागि गुण गावौं।
जय अंजनी कुमार बलवंता। शंकर सुवन बीर हनुमंता।।
बदन कराल काल कुल घालक। राम सहाय सदा प्रतिपालक।।
भूत, प्रेत पिसाच, निसाचार। अग्नि वेताल काल मारीमर।।
इन्हें मारू तोहि सपथ राम की। राखु नाम मर्यादा राम की।।
जनक सुतापति दास कहावौं। ताकी सपथ विलंब न लावौ।।
चरण पकरि कर तोहि मनावौ। एहि अवसर अब केहि गुहरावौ।।
उठु उठु उठु चलु राम दोहाई। पाय परौं कर जोरि मनाई।।
ऊँ चं. चं. चं. चपल चंचल। ऊँ सं. सं. सहमि पराने खलदल।।
अपने जन को तुरंत उबारौ। सुमिरत होत आनंद हमारो।।
ताते विनती करौं पुकारी। हरहु सकल दुःख विपत्ति हमारी।।
परम प्रबल प्रभाव प्रभु धावौ। मेटि सकल दुःख दरस दिखावौ।।
हे कपिराज काज कब ऐहौ। अवसर चूकि अंत पछितेहौ।।
जन की लाज जात एहि बारा। धावहु हे कपि पवन कुमारा।।
जयति जयति जय जय हनुमाना। जयति जयति गुणज्ञान निधाना।।
जयति जयति जय जय कपिराई। जयति जयति जय जय सुखदाई।।
जयति जयति जय राम पियारे। जयति जयति जय सिया दुलारे।।
जयति जयति जय मंगलदाता। जयति जयति त्रिभुवन विख्याता।।
यहि प्रकार गावत गुण शेषा। पारन नहीं पार लवलेषा।।
नाम रूप सर्वत्र समाना। देखत रहत सदा हर्षाना।।
विधि शारदा सहित दिन–राती। गावत कपि के गुण–गण पानी।।
तुम समान नहिं जग बलवाना। करि विचार देखउ विधि नाना।।
यह जिय जानि शरण हम आये। ताते विनय करौं मन लाए।।
सुनि कपि आरत वचन हमारे। हरहु सकल दुःख सोच हमारे।।
यहि प्रकार विनती कपि केरी। जौ जन करै लहै सुख देरी।।

याके पढत वीर हनुमाना। धावत बाण तुल्य बलवाना।।
मेटत आय दुःख क्षय माहीं। दे दर्शन प्रभु के दिग जाहीं।।
पाठ करैं बजरंग बाण की। हनुमंत रक्षा करै प्राण की।।
डीठ मूठ टोनादिक नाशै। पर कृत मंत्र तंत्र नहीं त्रासै।
भैरवादि सुर करैं मिंताई। आयसु मानि करै सेवकाई।।
प्रण करि पाठ करै मन लाई। अल्प मष्त्यु ग्रह दोष नसाई।।
आवषति ग्यारह प्रतिदिन जापै। बाकी छांह काल नहि चापै।।
दै गूगल की धूप हमेशा। करै पाठ तन मिटै कलेशा।।
यह बजरंग बाण जेहिं मारै। ताहि कहौ फिर कौन उबारै।।
शत्रु समूह मिटै सब आपै। देखन नाहि सुरा सुर कापै।।
तेज प्रताप बुद्धि अधिकाई। रहै सदा कपिराज सहाई।।

दोहाः उर प्रतीत दष्ढ़ हें, पाठ करै धंरि ध्यान।
बाधा सब हर करै सब, काज सफल हनुमान।।

साधना विधिः–साधक को चाहिये कि वह अपने सामने हनुमान जी की मूर्ति या कोई चित्र रख ले तथा पूरे आत्मविश्वास और निष्ठाभाव से उनका स्मरण व ध्यान करें। मन में एसी धारणा करें कि दिव्य शक्तियां शरीर में प्रविष्ट हो रही है। ऐसे सशक्त वातावरण में साधना के सुपरिणाम शीघ्र ही मिलेंगे।

मानसिक व्यथा में बजरंग बाण के कम से कम 11 पाठ करने चाहिये। यात्रा व भय में इसका पाठ अति कल्याणकारी है। किसी भी असाध्य रोग में रोगी के निकट गूगल की धूप देकर इसका पाठ लगातार करते रहना चाहिये। बेसन के लड्डू 5, अरहर के फूल 5 और सिंदूर से हनुमान जी की पूजा करते प्रतिदिन 15 पाठ करने से मनोकामना पूरी होती है। जिनको रात्रि में निंद्रा नहीं आती है वे रात में बार–बार पाठ करें।

मंगलवार व शनिवार को अवश्य पाठ करना चाहिये। संकटनाश के लिए यह अमोध बाण है।

संकट मोचन मंत्र

अंजनानंदद वीरं जानकीशोकनाशनम्।
कपीशमक्षहंतार वन्दे लंकामयंकरम्।।
अक्ष मारि लंका दही, जनक सुता दुःखतार।
वीर अंजनानन्द को, बन्दौं बारम्बार।।

(इस मंत्र के जप अनुष्ठालन से कठिन से कठिन संकट दूर हो जाते है।)

हनुमदद्वादषाक्षर मंत्र प्रयोग

हनुमदद्वादशाक्षर मंत्र का स्वरूप **"मंत्र महोदधि"** में इस प्रकार मिलता है–

हौं ह्रटाक्रे ख्फेह स्त्रोंहस्ख्फेह सौं हनुमते नमः।

अपने दाहिने हाथ की अंजुलि में जल लेकर उसे निम्नांकित वाक्योच्चारण के बाद पथ्वी पर गिरा देना चाहिये यह विनियोग है।

विनियोग

ऊँ अस्य द्वादशाक्षर हनुमन्मंत्रस्य रामचंद्र ऋषिः, जगनी छन्दः
हनुमान देवता, ह्सौं बीज्, ह्स्फ्रें शक्तिः, सर्वेष्ट सिद्धये
जपे विनयोगः।

इसके पश्चात ऋष्यदिन्यास का उल्लेख मिलता है–

ऋष्यादिन्यास

ऊँ रामचन्द्र ऋषये नमः, शिरसि। ऊँ ह्सौं बीजाय नमः, गुह्यो।
ऊँ जगती छन्दसे नमः, मुखे। ऊँ ह्स्फ्रे शक्तये नमः, पादयोः।
ऊँ हनुमद्देवतायै नमः, हृदि। ऊँ विनियोगाय नमः, सर्वांगे।

तत्पश्चात् हृदयादि अंगन्यास का प्रावधान है–

हृदयादिअंगन्यास

ऊँ ह्रो हृदयाय नमः। ऊँ ह्सौं कवचाय हुम्।
ऊँ ह्स्फ्रे शिरसे स्वाहा। ऊँ ह्स्ख्फ्रे नेत्रत्रयाय वौषट्।
ऊँ ख्फ्रे शिखायै वषट्। ऊँ ह्सौ अस्त्राय फट्।

करन्यास

ऊँ ह्रों अंगुष्ठाश्यां नमः। ऊँ हसौं अनामिकाश्यां नमः।
ऊँ हस्फ्रे तर्जनीभ्यां नमः। ऊँ हस्ख्फ्रे कनिष्ठिकाम्यां नमः।
ऊँ ख्फ्रें मध्यमाभ्यां नमः। ऊँ हसौं करतलकरपष्ठाभ्यां नमः।

इसके बाद मंत्र के बारह अक्षरों का बारह अंकों में न्यास करें–

ऊँ ह्रो नमः, मुर्ध्नि। ऊँ हं नमः, हृदि।
ऊँ हस्फ्रे नमः, भाले। ऊँ नुं नमः, कुक्षौ।
ऊँ ख्फ्रे नमः, नेत्रयोः। ऊँ मं नमः, नाभौ।
ऊँ हस्त्रौं नमः, मुखे। ऊँ ते नमः, लिंगे।
ऊँ हस्ख्फ्रे नमः, कण्ठे। ऊँ नं नमः, जानुद्वये।
ऊँ हस्त्रौं नमः, बाहवोः। ऊँ मं नमः, पादयोः।
न्यास को भलि भांति पूर्ण कर "ध्यान" करें–

ध्यान

बालर्कायुत तेजसं त्रिभुवन प्रक्षोभंक सन्दरं
सुग्रीवादिसमस्त वानरगणैः संसेध्यपादाम्बुजम्।
नादेनैव समस्तराक्षस गणान् सन्त्रासयन्तं प्रभुं
श्रीमद्राय पाम्बुजस्मषतिरतं ध्यायामि वातात्मजम्।।

इस प्रकार ध्यान के बाद सर्वतोभ्रद मंडल में मण्डूक से लेकर परतत्वपर्यन्त पीठ देतवाओं की निम्न प्रकार से स्थापना करें। सर्वप्रथम पुष्प व अक्षत लेकर पीठ के उत्तर भाग में चतुर्विध गुरूओं का स्मरण और पूजन करें यथा–

ऊँ गुरूभ्यो नमः, ऊँ परमगुरूभ्यो नमः, ऊँ परात्पर गुरूभ्यो नमः,
ऊँ परमेष्ठिगुरूभ्यो नमः।

तब पीठ के दक्षिणी भाग में विनाशक की पूजा करें।

गणपतये नमः। गणपतिमा बाहयामि,

फिर पीठ के मध्यभाग में इष्ट देवता को नमस्कार करें।

हनुमद्देवतायै नमः।

जम्भरि जित्प्रसभ्ङ्मलम्भितपाश्बन्धं ब्रह्मनुरोधमिव तत्क्षणमुद्धहन्तम्।
रौद्रावतामपि रावणदीर्घदर्षष्टि संकोचकारण मुदारहरिं भजामि।।
दर्पोन्नमन्निशिचरेश्वर मूर्धचंचत्कोटीर चुम्बिनिजबिम्ब मुदीक्ष्य हृष्टम्।
पश्मन्तमात्ममभुजयन्त्रणपिष्य माण तत्कायशोणिततनिपात मपेक्षि वक्षः।
अक्षप्रभष्यमरविक्रमवीरनाश क्रोधादिवस द्रुतमुदंचित चन्द्रहासाम्।
निद्रापिता भ्रधनगर्जन घोर घोषैः संस्तम्भयन्तमभिनौमि दशास्यमूर्तिम्।।

पीठ के मध्य भाग में ही "ऊँ मं मण्डूकाय नमः, ऊँ कं कालग्निरूद्राय नमः, ऊँ आं आधरशक्तये नमः, ऊँ कुं कूमयि नमः, ऊँ अं अन्नताय नमः, ऊँ पृं पृथिव्यै नमः, ऊँ क्षीं क्षीरसागराय नमः, ऊँ रं रत्नद्वीपाय नमः, ऊँ रं रत्नमण्डलाय नमः, ऊँ कं कल्पवक्षाय नमः, (पीठ के अग्निकोणागत पाये में) ऊँ धं धर्माय नमः, (ऋत्यकोण में) ऊँ ज्ञां ज्ञानाय नमः, (वायत्यकोण में) ऊँ वै वैराग्याय नमः, (ईशान कोण में) ऊँ ऐ ऐश्वर्याय नमः,(पीठ के पूर्व भाग में) ऊँ अं अधर्माय नमः, (दक्षिण भाग में) ऊँ अं अज्ञानाय नमः, (पश्चिम भाग में) ऊँ अं अवैराग्याय नमः, (उत्तर भाग में) ऊँ अं अनैश्वर्याय नमः, (पुनःपीठ के मध्य भाग में) ऊँ आं आनन्दकन्दाय नमः, ऊँ सं संविभालाय नमः, ऊँ सं सर्वतस्कमलासनाय नमः, ऊँ प्रं प्रकृतिमय पत्रेभ्यो नमः, ऊँ विं विकारमथकेसरे भ्यो नमः, ऊँ पं पंचाशद्वर्षाद्य कर्णिकाभ्यो नमः, ऊँ अं अर्कमण्डलाय द्वादशकात्मने नमः, सों सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः, ऊँ वं वह्मिण्डलाय दशकलात्मने नमः, ऊँ सं सत्वाय नमः, ऊँ रं रजसे नमः, ऊँ तं तमसे नमः, ऊँ आं आत्मने नमः, ऊँ पं परमात्मने नमः, ऊँ अं अन्तरात्मने नमः, ऊँ हीं ज्ञानात्मने नमः, ऊँ विं विधातत्वाय नमः, ऊँ परतत्वाय नमः, उपरोक्त मंत्रों द्वारा उन देवताओं की स्थापना और पूजा करके नौ पीठ शक्तियों का पूजन करें। यथा (पूर्व दिशा में) ऊँ विमलायै नमः, (अग्निकोण में) ऊँ उत्कर्षिण्यै नमः, (दक्षिण दिशा में) ऊँ प्रहन्यै नमः, (उत्तर दिशा में) ऊँ सत्यायै नमः, (ईशानकोण में) ऊँ ईशानायै नमः, (मध्य भाग में) ऊँ अनुग्रहायै नमः।

तत्पश्चात् स्वर्ण या रजत से निर्मेत यंत्र या मूर्ति को तांबे के पात्र में रख व धृत लगाकर उस पर दूध और जल की धारा प्रवाहित करें। स्वच्छ वस्त्र से पोंछकर **"ॐ नमो भगवते हनुमते सर्वभूतात्मने हनुमते सर्वात्म संयोगपद्मपीठात्ले नमः"** मंत्र के द्वारा पुष्प का आसन देकर पीठ के मध्य भाग में उसकी स्थापना और प्रतिष्ठा करें। ध्यान कर पूर्वोक्त मूलमंत्र से मूर्ति की कल्पना कर पाद्य से लेकर पुष्पाजंलिपर्यंत विविध उपचारों से पूजा करके इष्टदेव की आज्ञा से आवरण पूरा करें।

यथा- संविन्मयःपरो देवः परामष्तरसप्रियः।
अनुज्ञां हनुमन् देहि परिवारार्चनाय में।।

उपरोक्त मंत्र द्वारा आज्ञा ले पुष्पाजंलि द्वारा आवरण पूजा करें। यह क्रम अपनाये पहले षट्कोणात्मक केसरों में, फिर कमल के आठ दलों में फिर दलों के अग्रभागों में आवरण पूजा की जाती हैं फिर भूपुर–चक्र में दिग्पालों और आयुधों की पूजा होती है।

आग्नेयादि क्रम से हृदयादि छः अंगों की पूजा षट्कोणात्मक केसरों में की जाती है।

ॐ ह्रों हृदयाय नमः। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।। 1 ।।
ॐ ह्फ्रे शिरसे स्वाद्यः। शिरः श्रीपादुकां पूजयापि तर्पयामि नमः ।। 2 ।।
ॐ ख्फ्रेः शिखायै वषट् । शिखाश्रीपादुकां पूजयापि तर्पयामि नमः।। 3 ।।
ॐ ह्स्त्रौं कवचाय हुम् । कवचश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।। 4 ।।
ॐ ह्सौं अस्त्राय फट्। अस्त्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।। 6 ।।

फिर पुष्पाजंलि द्वारा मूलमंत्र का उच्चार करें–

अभीष्टसिद्धि में देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।

प्रथम आवरणः- की पूजा के लिए मंत्रोच्चारण के बाद पुष्पाजंलि दे और **'पूजितास्तर्पिताः संतु'** (पूजित देवता तृप्त हों)

तदन्तर कमल के आठ दलों में पूर्वादि दिशाओं में दक्षिणावर्त क्रम से श्री राम भक्त हनुमान की पूजा अग्र प्रकार करें।

ॐ रामभक्ताय नमः। रामभक्त श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः 1
ॐ महातेजसे नमः। महातेजः श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः 2
ॐ कपिराजय नमः। कपिराजश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः 3
ॐ महाबलाय नमः। महाबलश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः 4
ॐ द्रोणाद्रिहारकाय नमः 5
ॐ मेरूपीणर्चनकारकाय नमः। मेरूपीठार्चनकारकश्रीपादुकां
पूजयामि तर्पयामि नमः 6

ॐ दक्षिणाशायास्कराय नमः। सर्वविघ्न निवारक श्रीपादुकां
पूजयामि तर्पयामि नमः 7
ॐ सर्वविघ्ननिवारकाय नमः। सर्वविघ्न निवारक श्रीपादुकां
पूजयामि तर्पयामि नमः 8

द्वितीय आवरणः– की पूजा इस प्रकार संपन्न होती है पूजन करके पुष्पाजंलि दें।
तत्पश्चात आठ दलों के अग्रभागों में पूर्वाविक्रम से सुग्रीवादि की पूजा करें।

यथा– ॐ सुग्रीवाय नमः। सुग्रीव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः 1
ॐ अंगदाय नमः। अंगद श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः 2
ॐ नीलाय नमः। नील श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः 3
ॐ जाम्वते नमः। जाम्बवच्छी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः 4
ॐ नलाय नमः। नल श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः 5
ॐ सुषैणाय नमः। सुषेण श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः 6
ॐ द्विविदाय नमः। द्विविद श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः 7
ॐ मयन्दाय नमः। मयन्द श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः 8

ऐसे आठ वानरों की पूजा कर पुष्पाजंलि दें। यह तीसरे आवरण की पूजा पूर्ण हुई।
इसके बाद भूपुरवक्र की दस दिशाओं में इन्द्रादि दस दिगपालों की पूजा करें।
(पूर्व दिशा में) ॐ इन्द्राय नमः। इन्द्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इसी प्रकार अन्य दिगपालों के लिए भी वाक्य योजना कर लेना उचित है। इस अर्चना के बाद पुष्पाजंलि दें। यह ***चतुर्थ आवरण*** की पूजा हुई।

तदन्तर भूपुर चक्र के बाह्म भाग में पूर्वादि तर्पयामि नमः। इत्यादि । इस तरह पूजा समाप्त कर के पुष्पाजंलि दें। यह ***पंचम आवरण*** की पूजा संपन्न हुई।

सभी आवरणों की पूजा के पश्चात धूप, दीप, नैवेध, मुख शुद्धि और नमस्कार इन पूजनोपचारों द्वारा पूजन करके मंत्र का जप करें। इस मंत्र का एक पुरश्चरण बारह जप करने से होता है। जप के बाद उसका दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण और तर्पण का दशांश या बाईस ब्राह्मणों को भोजन करना चाहिये।

हनुमदश्टादषाक्षर मंत्र प्रयोग

इस मंत्र का उल्लेख **"मंत्र महोदधि"** में इस प्रकार मिलता है

"ॐ नमो भगवते आंजनेयाय महाबलया स्वाहा"।

यह अष्टादशाक्षर मंत्र है इसका प्रयोग प्रातः काल ब्रह्मवेला में उठ दैनिक कार्यो से निवष्त हो करना चाहिये। मंत्र साधना के विभिन्न चरण निम्नानुसार है।

विनियोग

ॐ अस्य मंत्रस्य ईश्वर ऋशिः, अलनुष्टुप छन्दः हनुमान् देवता, हुं बीज्म, स्वाहा शक्तिः, सर्वेष्टसिद्धये जपे विनीयोगः

दूसरे चरण में पुष्पाजंलि दें तथा ऋष्यादिन्यास करें।

ऋष्यादिन्यास

ॐ ईश्वर ऋषये नमः, शिरासे। ॐ हुं बीजाय नमः, गुह्यो।
ॐ अनुष्टुप्–छदसे नमः, मुखे। ॐ स्वाहा शक्तये नमः, पादयोः।
ॐ हनुमद्देवतायै नमः, हृदि। ॐ विनयोगाय नमः, सर्वांगे।

इसके बाद हृदयादिन्यास करें–

हृदयादिन्यास

ॐ आंजनेयाय नमः, हृदयाय नमः। ॐ अग्निगर्भाय नमः, कवचाय हुम्।
ॐ रूद्रमूर्तये नमः, शिरसे स्वाहा। ॐ रामदूताय नमः, नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ वायुपुत्राय नमः, शिखायै वषट्। ॐ ब्रह्मस्त्र निवारकाय नमः,अस्त्राय फट्।

इन तीनों चरणों के विधिवत समापन पश्चात हनुमान जी का स्मरण निम्न ध्यान श्लोक द्वारा करें।

ध्यान

दहनतप्तसुवर्ण समप्रभ भयहरं हृदये विहितांजलिम्।
श्रवणकुण्डलशोभिमुखाम्बुजं नमन वानरराज महद्भुतम्।।

'मंत्र महोदधि' में ही इसके बाद सर्वतोभद्र मण्डल पर पण्डूकादि परतत्वान्त पीठ–देवताओं की स्थापना कर नौ पीठ शक्तियों की पूजा करने का प्रावधान मिलता है। इसके लिए क्रमशः पूर्व की ओर से मंत्रों को पढ़ते जाए साथ ही उन पर गंध, पुष्प, अक्षत आदि सामूहिक रूप से चढ़ाते जाए–

ॐ विमलायै नमः (पूर्व में), ॐ प्रह्वयै नमः (वायुकोण में),
ॐ उत्कर्षिण्यै नमः (अग्नि कोण में), ॐ सत्यायै नमः (उत्तर में),
ॐ ज्ञानायै नमः (दक्षिण में) ॐ ईशाायै नमः (उत्तर में),
ॐ क्रियायै नमः (ईशाकोण में), ॐ अनुग्रहायै नमः (मध्य में)।
ॐ योगायै नमः (पश्चिम में),

इस क्रिया के बाद स्वर्ण या अन्य पवित्र धातु से बनी मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घी से लेप करके दूध या जल की धारा प्रवाहित करें। फिर पीठ के मध्य में उसकी स्थापना एवं प्राण प्रतिष्ठा करके मूल मंत्र से मूर्त की कल्पना कर पाद्य, अर्ध्य, नैवेध, पुष्प, गंधादि से पूजा–अर्चना करें।

अब आवरण पूजन के लिए आज्ञा प्राप्ति हेतु सबसे पहले पुष्प हाथ में ले मंत्र का उच्चारण करें–

ॐ संविन्मयः मरो देवः परामष्तरसप्रियः।
अनुज्ञां: हनुमन् देहि परिवारार्चनाय में।।

मंत्रोच्चार के बाद पुष्प चढ़ाकर 'पूजितास्तष्ताः संतु' ऐसा कहें। तदनन्तर सबसे पहले षट्कोण केसर में अग्निकोण से आरंभ कर क्रमशः छः अंगों का पूजन मंत्र पढ़कर इस प्रकार करें–

ॐ आंजनेयाय हृदयाय नमः, हृदय श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (अग्निकोण में),

ॐ रूद्रमूर्तये शिरये स्वाहा, शिरः श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (दक्षिण में),

ॐ वायुपुत्राय शिखायै वषट्, शिखा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (ईशाकोण में),

ॐ अग्निगर्भाय कवचाय हुम्, कवच श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (पश्चिम में),

ॐ रामदूताय नेत्रत्रयाय वौषट्, नेत्रत्रय श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (वायु कोण में),

ॐ ब्रह्मस्त्र निवारकाय अस्त्राय फट्, अस्त्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (उत्तर में)।

तदन्तर हाथ में पुष्प लेकर पुनः मूलमंत्र का उच्चारण कर निम्नलिखित मंत्र पढ़ते हुए पुष्पाजंलि समर्पित करें–

ॐ अभीष्ट सिद्धि में देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणर्चनम्।।

इसके बाद अष्टदल कमल पर पूज्य और पूजक अर्थात् अपने इष्ट और स्वयं के मध्य पूर्व दिशा की कल्पना करके पूर्व से प्रारंभ कर अन्य दिशाओं में क्रमशः 'द्वितीयावरण पूजन' करें।

ॐ रामभक्ताय नमः (पूर्व में), ॐ द्रोणाद्रिहारकाय नमः (वायुकोण में),
ॐ महातेजसे नमः (अग्निकोण में), ॐ सर्वविघ्ननिवारकाय नमः (उत्तर में),
ॐ कपिराजाय नमः (दक्षिण में), ॐ सर्वविध्ननिवारकाय नमः (नैर्ऋत्य में)।
ॐ महाबलाय नमः (ईशान कोण में)

यह द्वितीयवरण का पूजन संपन्न हुआ अब पुष्पाजंलि अर्पित करें। अब तष्तीय आवरण के पूजन के लिए अष्टकोण के अग्रभाग पर पहले की भांति पूर्व से प्रारंभ कर अन्य दिशाओं में पूजन करते हुए निम्नोक्त प्रकार से करें–

ॐ सुग्रीवाय नमः (पूर्व से अष्टकोण के अग्रभाग पर),
ॐ अंगदाय नमः (अग्निकोण में)
ॐ नीलाय नमः (दक्षिण में)
ॐ जाम्वंतो नमः (ईशान कोण में)
ॐ नलाय नमः (पश्चिम में)
ॐ सुषेणाय नमः (वायुकोण में)
ॐ द्विविदाय नमः (उत्तर में)
ॐ मयन्दाय नमः (नैर्ऋत्य में)

यह तृतीयावरण पूजन हुआ अब पुष्पाजंलि अर्पित करें।

सबसे अंत में चतुर्थ आवरण के पूजन में भूपुर पर अर्थात् सर्वतोभद्र के बाह्या भाग पर दसों दिकपालों की और उनके वज्रादि आयुधों की पूजा करके पुष्पाजंलि समर्पित करें। पुनः पुजा समापन पर धूप, दीप, नैवेधादि से पूजन करें व नमन करें।

साधना के सुपरिणामों की प्राप्ति हेतु मूल मंत्र का पुरश्चरण विधि से लक्ष बार जप करना चाहिये। उसका दशांश हवन करें इससे मंत्र सिद्धि को प्राप्त होगा व अनंत शक्तियों से युक्त होगा।

हनुमानमंत्र चमत्कारी अनुष्ठान

यह 20 चमत्कारिक मंत्रों का अति प्राचीन संग्रह है जो चमत्कारिक ढंग से कार्यो की सिद्धि में सहायक है। मंत्र का अनुष्ठान उन साधकों को लाभदायक है जो विपत्तिग्रस्त है। यह पूर्ण विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि जो मनुष्य श्रद्धा भक्ति में डूब व विश्वास से सरोबार हो "हनुमन्मंत्र चमत्कारानुष्ठान पद्धति" का सविधि अनुष्ठान करेगा वह अवश्य फलीभूत होगा–ये मंत्र और साधना विधि प्रस्तुत की जा रही है।

1. ऊँ नमो हनुमते रूद्रावताराय वायुसुताय अंजनी गर्भसम्भूताय अखंडब्रह्मचर्य वव्रपालनतत्पराय धवलीवष्तजगत्त्रितयाय ज्वलदग्निसूर्य कोटि समप्रभाय प्रकट पराक्रमाय आक्रान्तदिङ्मण्डलाय यशोवितानाय यश्झोडलंकृताय शोभिताननाय महा सामर्ध्याय महातेजःपुंज विराजमानाय श्रीरामभक्तितत्पराय श्रीरामलक्ष्मणानन्द कारणाय कपिसैयप्राकाराय सुग्रीवसख्यकारणाय सुग्रीवसाहायया कारणाय ब्रह्मस्त्रब्रह्म शक्तिग्रसनाय लक्ष्मण शक्ति भेदनिवारणाय शल्य विशल्यौषधि समानयनाय बालोदितभानुमण्डलग्रसनाय अक्षयकुमारच्छेदनाय वनरक्षाकरसहूह विभंजनाय द्रोणपर्रतोत्पाटनाय स्वामिवचन सम्पादितार्जुनसंयुग संग्रामाय गंभर शब्दोंदयाय दक्षिणाशामर्तण्डाय मेरूपर्वतपीठिकार्चनाय दावानलंकालानिरूद्राय समुद्रलध्ङनाय सीताऽऽश्वासनाय सीतारक्षकाय राक्षसीसंघविदारणाय अशोकवनविदारणाय लंकापुरीदहनाय दशग्रीवशिरः कृन्तकाय कुम्भकर्णादिवध कारणाय बालिनिवर्हणकारणाय मेघनादहोमविध्वंसनाय इन्द्रजिद्धधकारणाय सर्वशास्त्रपारंगताय सर्वग्रहविनाशकाय सर्वज्जवरहराय सर्वभयनिवारणाय सर्वकष्टनिवारणाय सर्वापत्तिनिवारणाय सर्वदुष्टादिनिवर्हणाय सर्वशत्रुच्छेदनाय

भूतप्रेतपिशाचडाकिनीशाकिनीध्वंसकाय सर्वकार्य साधकाय प्राणिमात्ररक्षकाय रामदूताय स्वाहा।

2. ऊँ नमो हनुमते रूद्रावताराय विश्वरूपाय अमित विक्रमाय प्रकटपराक्रमाय महाबलाय सूर्यकोटिसमप्रभाय रामदूताय स्वाहा।
3. ऊँ नमो हनुमते रूद्रावताााय रामसेवकाय रामभक्तितत्पराय रामहृदयाय लक्ष्मणशक्तिभेदनिवारणाय लक्ष्मणरक्षकाय दुष्टनिवर्हणाय रामदूताय स्वाहा।
4. ऊँ नमो हनुमते रूद्रावताराय सर्वशत्रुसंहणाय सर्वरोगहराय सर्ववशीकरणाय रामदूताय स्वाहा।
5. ऊँ नमो हनुमते रूद्रावताराय आध्यात्मिकाधिदैविकाधिभौतिकता पत्रयनिवारणाय रामदूताय स्वाहा।
6. ऊँ नमो हनुमते रूद्रावताराय देवदानवर्षिमुनि वरदाय रामदूताय स्वाहा।
7. ऊँ नमो हनुमते रूद्रावताराय भक्तजनमनः कल्पना कल्पद्रुमाय दुष्टमनारेथ सतभ्भनाय प्रभंजनप्राणप्रियाय महाबलपराक्रमाय महाविपत्ति निवारणाय पुत्रपौत्रधनधान्यादिविविधसम्पत्प्रदाय रामदूताय स्वाहा।
8. ऊँ नमो हनुमते रूद्रावताराय वज्रदेहाय वज्रखाय वज्रमुखाय वज्ररोम्णे वज्रदंताय वज्रकराय वज्रभक्ताय रामदूताय स्वाहा।
9. ऊँ नमो हनुमते रूद्रावताराय परयंत्रमंत्रत्राटकनाशकाय सर्वज्वरच्छेदकाय सर्वव्याधिनिकृन्तकाय सर्वभयप्रकाशमनाय सर्वदुष्टमुखस्तम्भनाय सर्व कार्य सिद्धि प्रदाय रामदूताय स्वाहा।
10. ऊँ नमो हनुमते रूद्रावताराय पंचवदनाय पूर्वमुखे सकल शत्रुसंहारकाय रामदूताय स्वाहा।
11. ऊँ नमो हनुमते रूद्रावताराय पंचवदनाय पूर्वमुखे सकल शत्रुसंहारकाय रामदूताय स्वाहा।
12. ऊँ नमो हनुमते रूद्रावताराय पंचवदनाय दक्षिणमुखे करालवदनाय नारसिंहाय सकलभूतप्रेतदमनाय रामदूताय स्वाहा।
13. ऊँ नमो हनुमते रूद्रावताराय पंचवदनाय पश्चिममुखे गरूडाय सकलविदननिवारणाय स्वाहा।
14. ऊँ नमो हनुमते रूद्रावताराय पंचवदनाय उत्तरमुखे आदिवराहाय सकलसम्पत्कराय रामदूताय स्वाहा।
15. ऊँ नमो हनुमते रूद्रावताराय ऋर्यमुख हयग्रीवाय सकलजनवशीकरणाय रामदूताय स्वाहा।
16. ऊँ नमो हनुमते रूद्रावताय सर्वग्रहान् भूत भविष्यद्ववर्मानान् समीपस्थ्ज्ञान् सर्वकालदुष्टबुद्धिनुच्चयोच्चाटय परबलानि क्षोभय क्षोभय मम सर्वकार्याणि साधन साधय स्वाहा।

17. ऊँ नमो हनुमते रूद्रावताराय परकृतयंत्रमंत्रपराहंकारभूतप्रेत पिशाचपर दषष्टिसर्वविघ्नतर्जन चेटक विद्यासर्वग्रहभयं निवारय निवारय स्वाहा।
18. ऊँ नमो हनुमते रूद्रावताराय डाकिनीशाकिनीब्रह्मराक्षसकुलपिशाचोरूभयं निवारय निवारय स्वाहा।
19. ऊँ नमो हनुमते रूद्रावताराय भूतज्जरप्रेतज्वरचातुर्थिकज्वरविष्णुज्वर महेशज्वरं निवारय निवारय स्वाहा।
20. ऊँ नमो हनुमते रूद्रावताराय अक्षिशूलपक्षशूल शिरोऽभ्यन्तरशूलपित्तशूल ब्रह्मराक्षसशूलपिशाचकुलच्छेदनं निवारय निवारय स्वाहा।

साधना विधिः–शनिवार या मंगलवार की रात्रि में प्रारंभ किए गए मंत्र के 11 हजार "मूंगा" माला पर उच्चारण करें। मंत्रोच्चारण पूर्ण होने पर मंत्र सिद्ध हो जाएगा तत्पश्चात आवश्यकता पड़ने पर मनुष्य को स्वयं अपने अथवा दूसरे के कार्य के लिए "हनुमंत्रचमत्कारानुष्ठान पद्धति" के प्रत्येक मंत्र का 11 हजार जप करके प्रत्येक मंत्र का दशांश (1100) होम करें। अनुष्ठानकर्ता को चाहिये कि जिस कार्य के लिए जप और होम करें, उस कार्य का नामोच्चारण संकल्प में अवश्य करें।

मंत्र साधनाः आवश्यक वृत्तियां

साधकों को हनुमान मंत्र साधना के चमत्कारिक प्रयोगों से अवगत कराने के पश्चात यह बताना भी अत्यावश्यक है कि मात्र मंत्रोच्चारण से साधना पूर्ण नहीं होती, अपितु प्रत्येक साधना कुछ विशेष, मनो, चित्त व शारीरिक वृत्तियों की अपेक्षा रखती है, जब तक साधक इन वृत्तियों का समावेश व समन्वय साधना में नहीं करता है तो साधना परिणामों के अपेक्षित रूप प्रकट होना संदिग्धतापूर्ण है। अतः आगे इन वृत्तियों का सविस्तार वर्णन किया जा रहा है। साथ ही यह कामना भी की जाती है कि यह साधना में साधकों को उद्देश्यपूर्ति में महत्वपूर्ण सहायता करेंगे।

एकाग्रता

साधक के लिए किसी भी तरह की "आध्यात्मिक साधना" यदि सर्वप्रथम किसी बात की आवश्यकता चाहती है तो वह है "चित्त की एकाग्रता"। साधक को यदि किसी मंत्र साधना के लिए अपने मानस को तैयार करना होता है, या दष्ढ़ संकल्पित होना होता है, तो पहले एकाग्र हो विचार करने की आवश्यकता पड़ती है। यदि चित्त एकाग्र न होगा, तो साधना की प्रथम सीढ़ी यानि संकल्प को ही प्राप्त नहीं कर पाएगा।

अभ्यास व चिंतन के समन्वय से एकाग्रता को प्राप्त किया जा सकता है,

क्योंकि अभ्यास का पराक्रम किसी से छिपा नहीं है। इसे इस युक्ति द्वारा चरितार्थ किया गया है।

"करत–करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान
रसरी आवत जात ही सिल पर होत निसान"

साधक को जब प्रतीत हो कि मन एक ही भाव, एक ही लगन से शांत हो प्रभु में तन्मय है तो यह जान ले कि उसने साधना के पहले सोपान को पा लिया है।

स्मरण

स्मरण या ध्यान साधना में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। मन के अपार सामर्थ्य को एक ही दिशा में लगा देना **"ध्यान"** है। स्मरण से बिखरी शक्तियां एक हो जाती है मानो माला में मोती। इस तरह की एकाग्रता एकता को जन्म देती है व एकता शक्ति का प्रतीक है और यही शक्ति किसी समस्या विशेष पर गंभीरता पूर्वक विचार करने, उलझी गुत्थियों को सुलझाने का काम करेगी। जहां ध्यान या स्मरण न हो उस वातावरण में साधक सधनता से साधना कार्य संपन्न नहीं कर पाता। स्मरण से ही हम किसी वस्तु के मूल स्वरूप और वास्तविकता को सही रूप में पहचान सकते है।

विशेष तौर पर आध्यात्मिक गतिविधियों में स्मरण का अत्याधिक महत्व है। ध्यान पूर्वक साधना से सिद्धि प्राप्त होती है जो हर क्षेत्र में सफलता का परिचायक है। सिद्धि प्राप्त साधक से निराशा, असफलता, पराजय आदि कोसों दूर रहते है व वह सफलता के शीर्ष को प्राप्त करता है।

इन्द्रिय निग्रह

इन्द्रियों की मन मानियों का ही परिणाम है कि साधना कार्यो में व्यवधान उत्पन्न होता है जो साधक संयम करता है वह सिद्धि के मार्ग को प्रशस्त करने में सफल होता हैं। इन्द्रिय निग्रह का संयम या "शक्ति संचय" भी कह सकते है। इन्द्रियों की शक्ति का यदि निरंतर ह्रास होता रहे तो शक्ति–विकास साधना में बाधा आती है। यदि शक्ति–संचय बढ़ता रहे तो आशानुकूल सफलता मिलती है।

इन्द्रियां ही शक्ति के विनाश का मार्ग है, यह मनुष्य की शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आत्मिक पतन का नेतृत्व करती है। यदि उचित रीति से संयम का पालन किया जाए तो हर व्यक्ति महानतम कार्य कर सकता है।

सात्विक आहार

सात्विक व शुद्ध आहार से बुद्धि व व्यक्तित्व भी सात्विक होते है व इसके विपरीत तामसी भोजन से बुद्धि भी तामसी बन जाती है एक कहावत है कि **"मनुष्य जैसा अन्न खाता है उसकी बुद्धि भी वैसी ही बन जाती है"**। अतः साधक को सात्विक भोजन ग्रहण करना चाहिये। मंत्र–साधना में सफलता के

लिए आहार–शुद्धि अत्यावश्यक है। यह निश्चित है कि मादक व गरिष्ठ सेवन से साधना में व्यवधान आता हैं। अतः साधक को चाहिये कि न केवल साधना समय में अपितु जीवन पर्यंत आहार की पवित्रता बनाये रखे यह लक्ष्योन्मुख है।

वाणी संयम

वाणी संयम या "मौन" भी शक्ति संचय का व साधना का महत्वपूर्ण उपकरण है क्योंकि यह मंत्र विशेष पर अपना प्रभाव छोड़ता है। मौन से शरीर में शक्ति को नवीनता मिलती है अतः यह हर प्राणी के लिए श्रेयस्कर है। मौन का अभाव ही मनुष्य को असफलता के गहन गर्त में धकेल पतन की ओर अग्रसर करता है और मौन की उपस्थिति मनुष्य जीवन को उसके परम लक्ष्य प्राप्त कराती है, क्योंकि मौन का प्रत्यक्ष संबंध, शारीरिक अंगों में स्फूर्ति, मानसिक शक्तियों में वृद्धि और बुद्धि के विकास से है। इतना ही नहीं आत्मबल जो कि जीवन के विकास का पहिया है मौन के द्वारा ही उत्पन्न होता हैं। अतः साधक को इष्ट मंत्र से शीघ्र सफलता प्राप्त करने के लिए "वाणी–संयम" का नियम अपनाना चाहिये जो अल्प व अच्छा बोलने की शिक्षा देता हैं।

उपवास

"मंत्र–साधना" में उपवास के महत्व को कम नहीं आंका जा सकता। उपवास तपों के समरूप है क्यों कि जिस प्रकार तप मनुष्य जीवन के मैल दूर करता है उसी प्रकार उपवास मानव मन पर लगे मैल को स्वच्छ करता है। अनुभवी व सिद्ध साधकों ने अपने उद्बोधन में उपवास को महत्वपूर्ण बतलाया है उनके ही शब्दों में **"उपवास शक्ति का भंडार है"**। हमारे आंतरिक शत्रु जो कि हमें दिन रात धुन की तरह खाते रहते है और शारीरिक व मानसिक दृष्टि से खोखला बना देते है उस पर विजय का एक मात्र साधन उपवास हैं कहा तो यहां तक गया है कि उपवास के दिन की गई साधना दोगनी गति से फलीभूत होती है।

"मंत्र–साधना" के उपासकों को यहीं संदेश है कि आत्मिक उत्थान के लिए उपवास महत्वपूर्ण है।

पवित्र–साधना

आसन की पवित्रता का "**मंत्र–साधना**" के इतिहास में विशेष उल्लेख मिलता है। पुराणों व शास्त्रों में कुशा, मृगचर्म, ऊनी, काष्ठ व गोबर पुते चौक के आसन का ही उल्लेख मिलता है। इनके प्रावधान यूं ही नहीं किए गए है, इसके पीछे वैज्ञानिक व ठोस कारण है। चूंकि ये सभी वस्तुएं असंक्रामक है यानि साधक की शक्ति का प्रवाह नीचे की और प्रवाहित होकर बेकार न चला जाये। इसके विपरीत धातु, वस्त्र या पत्थर के आसन को निषिद्ध माना गया है क्योंकि यह सभी संक्रामक है, व शक्ति के व्यर्थ नष्ट होने को रोकने में असमर्थ है। इन

सभी बातों को तो विज्ञान भी मानता है। अतः साधक को आसन पर भी ध्यान देना चाहिये।

आंतरिक मनन

आमतौर पर साधक मात्र मंत्रोच्चार को ही इतिश्री मान लेते है, परंतु उसके अर्थ समझने को आवश्यक नहीं मानते, ऐसी कोरी साधना अर्थ हीन ही नहीं असफल भी होती है। अतः अर्थ की उपेक्षा से बचे। अर्थ को समझने से एक तो मंत्र का साधक का जुड़ाव बढ़ेगा व जीवन में उतारने में भी सरलता होगी। साथ ही अर्थपूर्ण मंत्र के जप को मन बार–बार मनन करता है। जब यह बार–बार का प्रहार मन में जमे पुराने व्याभिचारी दुर्गुणों पर पड़ता है, तो वे हवा हो जाते है व सात्विक मंत्र का मन पर प्रभुत्व हो जाता है।

"आंतरिक मनन" का तात्पर्य है कि नेत्र पटल बंद कर मंत्र के एक–एक वाक्य और शब्द का अर्थ जानकर विचार करें। यदि मंत्रों के अर्थो का मनन व चिंतन न हो तो साधना अधूरी रह जाती हैं। मंत्र का अर्थ ही विद्या और ज्ञान है जो जीवन का कायाकल्प करते है। साधकों को एक ही संदेश है कि **"आंतरिक मनन"** द्वारा मंत्रों की शिक्षा व प्रेरणा ग्रहण करें।

प्राणायाम

प्राण वायु को अपने अधीन करना ही प्राणायाम है। प्राणायाम से साधक अपना शारीरिक व मानसिक विकास करता है और आत्मा से परिचित होता है। साधना क्षेत्र ही नहीं दर्शन भी प्राणायाम के महत्व की व्याख्या करता है। दर्शन के शब्दों में "**प्राणायाम के निरंतर अभ्यास से मन की व्यग्रता नष्ट होती है और उसमें स्थिरता आती है**"। गीता के शब्दों में "**प्राणायाम द्वारा ध्यान करने से वशीभूत हो जाने पर जैसे एक ज्योति में दूसरी ज्योति मिलकर एक हो जाती है, ऐसे ही साधक अपने में मुझे और मुझ परमात्मा में स्वयं को मिला लेता है**"। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि मन को अपने अधीन करने का एक मात्र उपाय **"प्राणायाम"** ही है। क्योंकि सिर्फ विचारों से मन को वश में करना दिवास्वप्न है,उसमें प्राणायाम का योग आवश्यक है। प्राणायाम ही मन को ध्यान की पराकाष्ठा पर ले जाने का एक मात्र साधन है किसी ने ठीक ही कहा है कि मन उसी प्रकार प्राण से बंधा होता है जिस प्रकार पशु रस्सी से। अतः साधकों को मंत्र–साधना के प्रबल अस्त्र "प्राणायाम" द्वारा चंचल मन को वश में करना चाहिये। यहीं साधना सिद्धि को सफलता के चरम पर ले जाएगा।

तप

तप, तपस्या या तपश्चर्या के बारे में कुछ कहना सूर्य को दीपक दिखाने जैसा होगा, क्योंकि प्रत्येक भारतीय भली भांति तप के सामर्थ्य से परिचित है। तप, कठिन परिश्रम का ही नाम है तप का ही फल था कि हमारे ऋषि–मुनि

अद्वितीय शक्तियों के स्वामी थे व हमें भी मंत्र–शक्ति का दान दे गए। मंत्र सिद्धि भी तप का ही परिणाम है कोई जादू नहीं।

जीवन के परिदृष्य में देखे तो जीवन में जो कठिन परिश्रम व अथक प्रयास करता है वह ही सफल होता है। इसके विपरीत जो लोग कर्म से जी चुराते है व भाग्य के फैसले को अंगीकार करते है वे कायर है। ऐसे लोग ही अपनी कमजोरियों को छिपाने के लिए ईश्वर को दोष देते है। परिश्रम की भावना ही तप है, जहां तप है वहीं शक्ति हैं, वहीं मुक्ति है, वहीं सुख है, आनंद है, ज्ञान है, धन है, ऐश्वर्य है, कीर्ति है। यदि **"मंत्र–साधना"** द्वारा सफलता को अंगीकार करने का स्वप्न साधक ने देखा है तो उसे तप का मार्ग ही स्वीकार करना पड़ेगा।

दिशा ज्ञान

हर प्रकार की साधना में अलग–अलग दिशाओं का प्रावधान है, दिशा भ्रमित हो गलत दिशा में साधना करने से वांछित परिणामों को नहीं पाया जा सकता। दिशा का महत्व इतना है कि मंत्र जाप में दिशा का ध्यान रखना परम आवश्यक है।

शास्त्रों में संध्या कालीन पश्चिम व प्रातःकालीन साधना पूर्व दिशा में करने का वर्णन मिलता है। इसका कारण यह है कि सूर्य जो तेजस्विता का प्रतीक है व प्राणशक्ति का भंडार भी अतः उसकी किरणों में वह शक्ति है जो **"मंत्र–साधना"** को सफल बनाती है, अतः सूर्याभिमुख हो साधना करनी चाहिये। यदि साधक इसके विपरीत जायेगा तो साधना में निश्चित व्यवधान आएगा। विभिन्न धर्मावलंबी सूर्य के प्रताप से ही अपने धर्मस्थलों के द्वार पूर्व में रखना उचित मानते है, जैसे हिन्दूओं के मंदिर, ईसाइयों के गिरिजाघरों के द्वार पूर्व में होते है। अतः मंत्र साधकों को चाहिये कि सूर्य की दिशा में साधना करें।

साधना स्थल

"मंत्र–साधना" सिद्धि के लिए उपयुक्त स्थान का चयन करते समय इन सिद्धांतों को ध्यान में रखे उस स्थान का चयन करें जहां चित्त की एकाग्रता, शांति, पवित्रता, दिव्यवातावरण, सौम्यता सहज ही हो। जिस स्थान विशेष में उक्त गुण हो, वहीं स्थान साधना के लिए उपयुक्त है क्योंकि यह गुण **"मंत्र–साधना"** में सहायक है। ऐसे स्थानों के कुछ उदाहरण एकान्त उद्यान, पवित्र वन, सरिता पट या संगम, तीर्थ, गुफा, पुण्य–स्थल, मंदिर, सिद्ध–पीठ, बेल वृक्ष, पर्वतों की तराई, तुलसी वाटिका, गोशाला जिसमें बैल न हो, पीपल या आंवले के नीचे या अपने ही घर का कोई एकांत स्थल है। साधना स्थल शोर व कोलाहल व आवागमन रहित होना उचित है।

जिन स्थलों पर पूर्व में सिद्ध पुरूषों ने साधनायें की हो वे स्थान भी सिद्ध हो जाते है अतः वहां की गई साधना शीघ्र होती हैं। अतः साधक को **"मंत्र–साधना"**

सिद्धि के लिए स्थान चयन में उपरोक्त सिद्धांतो का पालन करना चाहिये।

दृढ़ संकल्प

संसार का प्रत्येक महान व्यक्ति दृढ़ व प्रबल इच्छा शक्ति के बल पर ही महान बनता है और यह महान व्यक्ति ही महान कार्यो को संपन्न करते हैं। दृढ़ संकल्पित व्यक्ति ही जोखिम पूर्ण कार्यो को अपने हाथ में लेता है व पूर्ण करता है। दष्ढ़ इच्छा शक्ति, मानसिक क्षेत्र का एक ऐसा दुर्ग है, जिसमें किसी भी कुविचार व विषय वासनाओं का प्रवेश नहीं हो पाता। ऐसे व्यक्ति जीवन के भंयकर तूफान, आंधी, झंझावत और कठिनाइयों की सीमा रेखाओं को पार कर लेते है। ये सदैव प्रसन्न व आशातीत रहते है। हर विपत्ति में ये लोग अपना रास्ता किसी न किसी तरह निकाल ही लेते है। ऐसा दष्ढ़ निश्चय वाला व्यक्ति ही मनुष्य जीवन के चारों पुरूषार्थो धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त करना है।

संकल्प एक विद्युत है। जो कण–कण में गति लाने की सामर्थ्य रखती हैं। संकल्प–शक्ति के बल पर ही हम अज्ञात बिखरी शक्तियों का एकत्रीकरण करते हैं। संकल्प शक्ति को धारण किये बिना मनुष्य अपने अंदर की शक्तियों से परिचित नहीं हो सकता। संकल्प करते ही वह अपनी शक्ति को पहचान लेता है। अतः किसी भी देवता से संबंधित मंत्र सिद्धि में प्रबल व दृढ़–इच्छा शक्ति का होना परमावश्यक है। इसके अभाव में मंत्र सिद्धि असंभव है।

प्रबल श्रद्धा

यदि आप कार्य विशेष में सफलता चाहते है, सिद्धि चाहते है तो पूर्ण आस्था, विश्वास व श्रद्धा आवश्यक है। तात्पर्य यह है कि जो साधक साधना द्वारा सिद्धि चाहते है उन्हें इष्टदेव के प्रति अगाध श्रद्धा होनी चाहिये। जिस साधना में श्रद्धा का अभाव है वहां सफलता संदिग्ध है व अविश्वास, संदेह, कुटिलता आदि का प्रभुत्व है। अतः साधक यह जान ले कि श्रद्धा ही साधना की नींव है।

शुद्ध भावना

"जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मुरत देखी तिन तेसी" साधक जैसी भावना रखता है सफलता भी उसे उसी अनुपात में मिलती है। मंत्र सिद्धि के लिए भावना–शक्ति अतिआवश्यक है। मंत्र साधना व भावना एक दूसरे से नितांत गहराई तक जुड़ी है। शास्त्र भावना के महत्व को इस प्रकार व्यक्त करते है।

मंत्रै, तीर्थे, द्विजे, देवे, दैवज्ञे, भैषजे, गुरौ।
यादष्शी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादष्शी।।

भावार्थः– मंत्र, तीर्थ, ब्राह्मण, देवता, ज्योतिषी, दवा तथा गुरू में जिस प्रकार की भावना होती है उसे वैसी ही सिद्धि प्राप्त होती है।

भावना के समय रोग के स्थान पर आरोग्य, अशुभ के स्थान पर शुभ, अभाव के स्थान पर वैभव के संकेत तन–मन से प्रदान करने चाहिये। क्योंकि इन संकेतों का प्रत्यक्ष प्रभाव मन पर पड़ता है व मन वैसा ही करने पर विवश हो

जाता है, जैसा हम आदेश देते है। साधक को **"शुद्ध भावना"** के साथ ही **"मंत्र–साधना"** करना चाहिये।
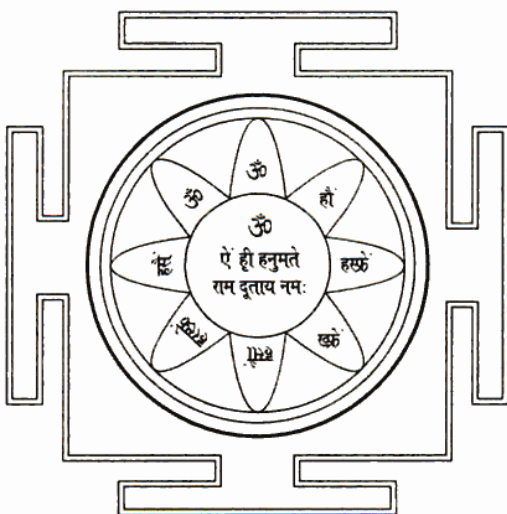
(मंत्र–साधना में सहायक इन वस्तियों का प्रयोग श्रेयस्कर है।)

श्री हनुमान : यंत्र साधना

शक्ति पुंज श्री हनुमान भक्तजनों व साधकों की समस्याओं व कष्टों का निवारण अनेक विधियों से करते है। हनुमान आराधना साधक को साधना के कई आयाम प्रदान करती है, यह साधक की भावना व परिस्थितियों का प्रभाव है कि उस साधक विशेष के लिए कौन–सी साधना उपयुक्त बन पड़ती है। ऐसी ही अलौकिक शक्तियों से सरोबार है **"हनुमान–यंत्र साधना"** जिससे संकटमोचन, दीनदयाल श्री हनुमान साधकों के दुःखों का नाश करते है।

"यंत्र–साधना" का वैदिक काल से ही विशेष महत्व रहा है, विभिन्न कष्टों के निवारणार्थ व धन–वैभव की प्राप्ति के लिए साधकों ने इस साधना का मार्ग अपना व अभीष्ट को प्राप्त किया। स्वभावतः श्री हनुमान सरल, दयालु व त्यागी है परंतु साथ ही उनके व्यक्तित्व के गुणों में साहस, पराक्रम, शौर्य, ओज व तेज की प्रधानता है **"यंत्र–साधना"** से साधक में इन्ही गुणों का अंश समाहित होता है। सुधि साधक वर्ग के कल्याणार्थ इसी अद्भूत साधना **"हनुमान–यंत्र साधना"** के वर्णन को प्रस्तुत किया जा रहा है।

श्री हनुमत्पूजन यंत्र

साधना विधिः– **"हनुमत्पूजन यंत्र"** की रचना किसी भी शनिवार या मंगलवार को भोजपत्र या ताम्रपत्र पर की जाये, लाल चंदन से की गई रचना अतिउत्तम होगी। चूंकि लाल रंग हनुमानजी को सर्वाधिक प्रिय है। अतः यंत्र को लाल वस्त्र के आसन पर ही स्थापित करना चाहिये। यदि साधक भी लाल वस्त्र धारण करें तो यह अत्याधिक प्रभावकारी रहेगा।

हनुमानजी का स्मरण कर सर्वप्रथम निम्न मंत्र से यंत्र को नमन करें–

मनोजवं मारूततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठ।
वातात्मजं वानरयूथ मुख्यं, श्रीराम इतं शरणं प्रपद्ये।।

"यंत्र–साधना" के प्रभावों की कोई सीमा नहीं है। यह असंभव को संभव बनाने की सामर्थ्य रखता है। उपरोक्त मंत्रोच्चार के बाद यंत्र की आराधना गंध, पुष्प, अक्षत, धूप, दीप, नैवेधादि से करें। याद रहे संपूर्ण आराधना सामग्री लाल रंग की हो। तदुपरान्त घी का दीपक जला लें व निम्न मंत्रों का उच्चारण क्रमशः प्रतिदिन करें, मंत्रोंच्चारण की अधिकतम सीमा का उल्लेख शास्त्रों में नहीं मिलता, परंतु कम से कम 51 जप अवश्य करें। प्रतिदिन आराधना सामग्री व विधि में कोई अंतर नहीं आएगा, परंतु यदि किसी प्रयोजन विशेष के लिए साधना की जा रही है तो मंत्रों के पीछे संकल्पकर प्रयोजन का पुट लगाये–

ऊँ ऐं ह्रीं हनुमते रामदूताय नमः।
ऊँ हं हनुमते रूद्रात्मक हुं फट्।
ऊँ हं पवन नन्दनाय स्वाहा।
ऊँ नमो भगवते आन्जनेयाय महाबलाय स्वाहा।

श्री हनुमान यंत्र (हनुमत् प्रत्यक्ष दर्शन)

नं	छं	जं	चं
दं	दं	चं	चं
जं	छं	जं	दं
छं	नं	जं	हं

हनुमान यंत्र

'प्रयोजन–पूर्ण साधना' में मंत्रोच्चारण की संख्या 5,100 व साधना दिवसों की संख्या नौ होने का प्रावधान है। प्रतिदिन साधना समाप्ति पर निम्न मंत्रोच्चारण के पश्चात ही आसन त्याग करें।

नमस्ते नमस्ते महावायु सूनो, नमस्ते नमस्ते भविष्यत् विधानः।
नमस्ते नमस्ते सदाभीष्टपूर्ते, नमस्ते नमस्ते निशं रामभक्तः।।

विशेषः–साधना की अनुभूतियों को साधक को स्वयं तक ही सीमित रखना चाहिये व किसी से भी चर्चा न करें विचार शुद्धता, आस्था, धैर्य व अखंड ब्रह्मचर्य का पालन साधन समय में अत्यावश्यक है।

हनुमान यंत्र मंत्र की साधना विधि से अवगत कराने से पूर्व यह बताना उचित होगा कि यह "**यंत्र–साधना**" इसलिये अतिमहत्वपूर्ण है, क्योंकि यह केसरीनन्दन के प्रत्यक्ष दर्शन की अनुभूति कराती है और यह निश्चित है, कि यदि कोई साधक इस यंत्र की साधना विधिवत् रूप से कर ले, तो उसे हनुमान जी के दर्शन के साथ ही कृपा की भी प्राप्ति होगी।

साधना विधिः–यंत्र की रचना शुभ मुहूर्त (शनिवार या मंगलवार रात्रि) में भोजपत्र या सफेद कागज पर ही चंदन से कर लें, अनार की कलम से लेखन उत्तम है। यूं तो साधक यंत्र की सिद्धि के लिए प्रतिदिन अत्याधिक संख्या में जप कर सकता है। (मंत्र– **ऊँ ह्रीं हनुमते रामदूताया नमः**) परन्तु यदि प्रतिदिन इस हिसाब से मंत्रोच्चार किया जाए की विषम संख्या में दिवसों की संख्या आए तो यह श्रेयस्कर होगा। प्रतिदिन मंत्रोच्चारण की शुरूआत से पूर्व यंत्र को लाल वस्त्र के आसन पर स्थापित कर पुष्प, धूप–दीप, अक्षत आदि से पूजन करें। साधना के अंतिम दिन हवन करें जो कि दशांश हो, हवन के पश्चात तर्पण मार्जन कर 7 बाह्मणों को भोजन कराकर दक्षिणा दें। समस्त साधना समय में आस्था व विश्वास रखें।

श्री हनुमान यंत्र (कामना पूर्ति)

राम		राम
	ॐ ऐं ह्रीं हनुमते राम दूताय नमः	
राम		राम

हनुमान यंत्र

'प्रयोजन–पूर्ण साधना' में मंत्रोच्चारण की संख्या 5,100 व साधना दिवसों की संख्या नौ होने का प्रावधान है। प्रतिदिन साधना समाप्ति पर निम्न मंत्रोच्चारण के पश्चात ही आसन त्याग करें।

नमस्ते नमस्ते महावायु सूनो, नमस्ते नमस्ते भविष्यत् विधानः।
नमस्ते नमस्ते सदामीष्टपूर्ते, नमस्ते नमस्ते निशं रामभक्तः।।

विशेषः–साधना की अनुभूतियों को साधक को स्वयं तक ही सीमित रखना चाहिये व किसी से भी चर्चा न करें विचार शुद्धता, आस्था, धैर्य व अखंड ब्रह्मचर्य का पालन साधन समय में अत्यावश्यक है।

हनुमान यंत्र मंत्र की साधना विधि से अवगत कराने से पूर्व यह बताना उचित होगा कि यह **"यंत्र–साधना"** इसलिये अतिमहत्वपूर्ण है, क्योंकि यह केसरीनन्दन के प्रत्यक्ष दर्शन की अनुभूति कराती है और यह निश्चित है, कि यदि कोई साधक इस यंत्र की साधना विधिवत् रूप से कर ले, तो उसे हनुमान जी के दर्शन के साथ ही कृपा की भी प्राप्ति होगी।

साधना विधिः–यंत्र की रचना शुभ मुहूर्त (शनिवार या मंगलवार रात्रि) में भोजपत्र या सफेद कागज पर ही चंदन से कर लें, अनार की कलम से लेखन उत्तम है। यूं तो साधक यंत्र की सिद्धि के लिए प्रतिदिन अत्याधिक संख्या में जप कर सकता है। (**मंत्र– ऊँ ह्रीं हनुमते रामदूताया नमः**) परन्तु यदि प्रतिदिन इस हिसाब से मंत्रोच्चार किया जाए की विषम संख्या में दिवसों की संख्या आए तो यह श्रेयस्कर होगा। प्रतिदिन मंत्रोच्चारण की शुरूआत से पूर्व यंत्र को लाल वस्त्र के आसन पर स्थापित कर पुष्प, धूप–दीप, अक्षत आदि से पूजन करें। साधना के अंतिम दिन हवन करें जो कि दशांश हो, हवन के पश्चात तर्पण मार्जन कर 7 ब्राह्मणों को भोजन कराकर दक्षिणा दें। समस्त साधना समय में आस्था व विश्वास रखें।

श्री हनुमान यंत्र (कामना पूर्ति)

राम		राम
	ॐ ऐं ह्री हनुमते राम दूताय नमः	
राम		राम

हनुमान यंत्र

साधना–विधि:–किसी भी मंगलवार को प्रातः काल ब्रह्ममुहूर्त में उठे। नियमित कार्यों के पश्चात **'ॐ श्री हनुमते नमः'** मंत्र का उच्चारण हनुमान प्रतिमा के समक्ष कर मौन ग्रहण करें। तदुपरान्त भोजपत्र पर उपरोक्त यंत्र का अंकन लाल चंदन से अनार की कलम द्वारा करें। मन में मंत्रोच्चार अनवरत चलना चाहिये। फिर लाल वस्त्र को काष्ठ चौकी पर बिछा यंत्र की स्थापना करें तब पुष्प, धूप, दीप से पूजा करके मौन का व्रत मंत्रोच्चारण से ही तोड़े, यह मंत्रोचारण 51 "मूंगामाला जप" तक चलना चाहिये व प्रत्येक मंत्रोच्चारण के अंत में अपनी कामना के शब्द जोड़े। ऐसी साधना नियमित रूप से 51 दिवसों तक करें व धैर्य खंडन न होने दे, संपूर्ण साधना विधि में अखंड ब्रह्मचर्य का भी कठोरता से पालन अनिवार्य है। अंतिम दिन यंत्र को "पवित्र नदी" में विसर्जित कर दे, विसर्जन की वापसी में मौन रहे व पीछे मुड़कर न देखे, चाहे कितना ही आवश्यक कार्य क्यों न हो। व उसी दिन अपनी सामर्थ्यनुसार ब्राह्मणों को भोजन कराये व दक्षिणा दें। आपकी कामना पूर्ति निश्चित व अटल हैं।

मूठ नाशक यंत्र

मूठ निवारक यन्त्र

उपरोक्त यंत्र की निवारक शक्ति से परिचय कराने से पूर्व "मूठ" की असीम शक्ति से परिचित कराना समीचीन होगा। मंत्र विज्ञान की तीनों शाखाओं यथा मंत्र, यंत्र, तंत्र में "मूठ" के प्रयोग का वर्णन मिलता है, यद्यपि यह अपनी अचूक प्रहारक क्षमता के लिए जाना जाता है, परंतु यह ध्यान रहे कि "मूठ" का प्रयोग "व्यभिचारी" कर्म है। "मूठ" की उत्पत्ति या खोज कहें तो यह दुष्ट विनाश के लिए की गई थी, परंतु वर्तमान परिदृश्य में केवल दुष्ट व ईर्ष्यालु लोग ही अपने

हित साधने के लिए इसे प्रयोग में लाते है। ये लोग इस मारक क्रिया का प्रयोग अपने विरोधियों को नष्ट करने के लिए करते हैं। इतिहास में भी कुछ लोगों द्वारा "मूठ" के कुप्रयोग के प्रसंग मिलते है, परंतु उनका अंत भी बहुत बुरा हुआ।

"मूठ" की क्षमता इतनी अधिक और शीघ्र प्रभाव डालने वाली होती है, कि जिस पर मूठ चला दी जाय, उसका विनाश अवश्यंभावी है। सिद्ध पुरूषों ने तो यहां तक कहा है कि यदि संपूर्ण विधि विधान से मूठ चला दिया जाये तो यह ब्रह्मस्त्र से भी बढ़कर है। इसमें उड़द के दानों का प्रयोग किया जाता है।

साधना विधिः- "मूठ" के इन्ही कुप्रभावों से बचने के लिए साधकों को यहां यह अचूक "यंत्र साधना" बतलायी जा रही है जो मूठ प्रभाव नष्ट करने की एकमात्र साधना है। स्मरण रहे कि यह साधना मूठ चलाने से पूर्व की जानी चाहिये अन्यथा यह प्रभावहीन सिद्ध होगी। साधना से निर्मित कवच का प्रयोग जीवन पर्यंत मूठ प्रभाव से बचने का कारगर उपाय है।

होलिका की मध्य रात्रि को किसी पवित्र व एकांत स्थान पर पूर्ण नग्न हो स्नान करें। तत्पश्चात भोजपत्र पर धतूरे के पत्तों से उपरोक्त यंत्र का निर्माण करें, यंत्र की पूजा अर्चना संपूर्ण विधि विधान से करें पूर्ण साधना सामग्री की व्यवस्था पूर्व में ही कर लें। तत्पश्चात "मूंगा माला" से अपने इष्ट देवता के नाम का 1000 जप करें फिर यंत्र को कपड़े में या कवच के रूप में केशों से बांध ले। यह आवश्यक है कि यह कवचर सदैव टोपी या साफे में सर पर रहना चाहिये। यह नियम पशु या भवन पर लागू नहीं होता हां भवन में मुख्य प्रवेश द्वार के दाहिनी दिवार पर टांगे। यह अचूक व अदभूत "यंत्र साधना" साधक को निश्चित रूप से "मूठ" के प्रहारों से सुरक्षित रखेगी। यंत्र में देवदत्त के स्थान पर व्यक्ति का नाम आएगा।

भय निवारक यंत्र : स्थान विशेष

कई बार मनुष्य के मन में किसी विशेष स्थान को लेकर भय व्याप्त हो जाता है, मजबूरी वश यदि व्यवित्त को उस स्थान पर बार-बार जाना हो तो यह उसके लिए बड़ी समस्या खड़ी कर देता है। इस भय की प्रवष्त्ति भी अलग तरह की होती है जिसे मनुष्य समझ नहीं पाता। बस वह उस स्थान पर आते ही आश्चर्य जनक रूप से भय से घिर जाता है। इस प्रकार के भय निवारण के लिए ही यह यंत्र उपयोगी है।

साधना विधिः- यंत्र की रचना भोजपत्र पर अनार की कलम में अष्ट गंध की स्याही द्वारा अमावस्या के तीसरे दिन अर्थात् शुक्ल पक्ष की तृतीया को अर्द्ध-रात्रि के समय की जानी चाहिये यंत्र-रचना के बाद दुर्गाजी या हनुमान

31	38	2	8
7	3	35	34
37	32	9	1
4	6	33	36
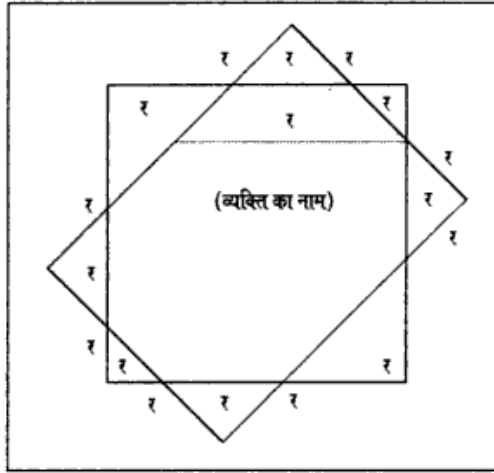
भय निवारण यन्त्र

जी की प्रार्थना की जानी चाहिये। इस हेतु इन दो मंत्रों में से किसी एक का प्रयोग किया जा सकता है **"ॐ दुर्गायै नमः"** या **"ॐ हनुमते नमः" "मूंगा माला"** से 11 जाप करें। तत्पश्चात यंत्र की धूप–दीपादि से पूजा करें। इस साधना से यंत्र सिद्धि को प्राप्त होगा, अब आपको जिस किसी स्थान विशेष पर भय व्याप्त है (यदि कोई मकान हो) तो प्रवेश द्वार के पास दो फीट का गढ़ा खोद यंत्र को गाड़ दे, (यदि रास्ता हो) तो दाहिनी ओर सात कदम चलकर गढ़ा खोद गाड़ दें, यंत्र शक्ति से उस स्थान विशेष के भयदायक तत्व नष्ट हो जाएंगे। स्मरण रहे यंत्र गाड़ कर आते समय किसी से बात न करें ना ही पीछे मुड़कर देंखे।

भय निवारक यंत्र : व्यक्ति विशेष

आज के परिदृश्य में जब कि मनुष्य सिर्फ स्वार्थ पूर्ति के लिए घृणित से घृणित कृत्य करते हुए भी नहीं लजाता व कैसा भी दुष्कृत्य अपने हित साधने हेतु करने को तत्पर है। ऐसे माहौल में सज्जन व सद्पुरूषों को अकारण ही भय सताना कोई आश्चर्य जनक बात नहीं है। सामाजिक रिश्तों यथा मित्र, परिवार, पास पड़ोसी आदि में न जाने कौन दुष्ट, हितैषी का रूप धारण कर हमारे सर्वनाश की ताक लगाये बैठा हो? ऐसी शंकाओं से भयभीत मनुष्य को जब कोई सहारा नजर नहीं आता तो उसका जीवन दुःखों के सागर में परिवर्तित हो जाता है। इससे उसका चित्त किसी कार्य में नहीं लगता व मनोबल गिर जाता है। उपरोक्त **"यंत्र–साधना"** इस प्रकार के भय जो किसी व्यक्ति या परिस्थिति से हो सकता है, का उचित निवारण करती है।

	क्रों	क्रों	क्रों	क्रों	क्रों	क्रों	क्रों	
क्रों	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	क्रों
क्रों	ज	झ	ज	ट	ठ	ड	ॠ	क्रों
क्रों	छ	म	म	य	र	ढ	लृ	क्रों
क्रों	च	ब	स	ह	ल	ण	लॄ	क्रों
क्रों	ड	फ	ष	श	व	त	ए	क्रों
क्रों	थ	प	न	ध	द	थं	ऐ	क्रों
क्रों	ग	ख	क	अ:	अं	औ	ओ	क्रों
	क्रों	क्रों	क्रों	क्रों	क्रों	क्रों	क्रों	

भय-निवारक यन्त्र

साधना विधिः- किसी भी अमावस्या को ताम्रपत्र पर चंदन से उक्त यंत्र की रचना करें। यह ठीक अर्ध्य रात्रि के समय हो। संपूर्ण विधि विधान से यंत्र की पूजा अर्चना की जाये।

फिर पश्चिम मुखी हो लाल वस्त्र के आसन पर यंत्र को स्थापित करें व 501 बार **"ॐ हनुमते नमः"** का जप करें। अंत में व्यक्ति विशेष या परिस्थिति विशेष से भय निवारण की प्रार्थना हनुमान जी से करें,, तत्पश्चात यंत्र को नदी में विसर्जित करें, व विसर्जन के नियमों का पालन करें। अगले 11 दिनों तक प्रातःकाल स्नान के पश्चात व रात्रि में सोने से पूर्व हनुमान चालीसा का पाठ करें। साधना दिनों में ब्रह्मचर्य का पालन अनिवार्य रूप से हो। यंत्र साधना के प्रभाव से मनोबल में वर्षद्धि होगी व भयभीत करने वाली शक्तियों का नाश होगा।

रक्षा व्यूह यंत्र

रक्षा व्यूह यन्त्र

संकट, कष्ट, परेशानी, विपत्ति आदि विपरीत परिस्थितियों के कई रूप हो सकते पर मौटे तौर पर इन्हें तीन रूपों में बांटा जा सकता है यथा–

–दैहिक –दैविक –भौतिक

सभी मनुष्यों को अपने जीवन काल के विभिन्न पड़ावों पर इनका सामनाविभिन्न रूपों में करना पड़ सकता है। ऐसी ही विघ्न–बाधाओं से मुक्ति के लिए "**रक्षा व्यूह यंत्र**" साधकों के लिए महत्वपूर्ण उपहार है। जैसा कि इसके नाम ही से स्पष्ट है कि यह यंत्र साधक के चारों और एक "**रक्षा व्यूह**" की रचना कर देता है, ताकि कोई भी संकट उस व्यूह को भेद साधक तक न पहुंच सकें।

साधना विधिः–किसी भी शुक्रवार को संध्या पश्चात केले के पत्र पर यंत्र की रचना सम्मिलित रूप से कपूर, कस्तूरी, कुमकुमादि से जायफल की लकड़ी की कलम से करें। यंत्र रचना के समय साधक का मुख पूर्व में हो यंत्र निर्माण पर यंत्र पूजन करें। पूजा में सफेद पुष्प व मौसमी फल का प्रयोग करें। तीसरे व साधना के अंतिम दिन पूजा के पश्चात 1000 जप "**ॐ दुर्गायै नमः**" के करें व दशांश (100) हवन करें। तदन्तर तीन ब्राह्मणों को भोजन दक्षिणा प्रदान करें। तत्पश्चात यंत्र का नमन कर त्रिलोह के ताबीज (कवच) में भरकर गले या बांए बाहु पर धारण करें। इस साधना से व्यक्ति को विघ्नबाधाओं से सदैव त्राण मिलता है। यह यंत्र सब प्रकार के कष्टों से रक्षार्थ कवच है।

सावधानियां:—तीनों दिन तक अर्थात् साधना काल में संयम का कठोरता से पालन करें, एक समय नमक रहित भोजन ग्रहण करें, रात्रि में सोने से पूर्व दुर्गा सप्तशती का पाठ करें।

शत्रु संहारक यंत्र

242	249	2	7
6	3	246	245
248	243	8	1
4	5	244	247

शत्रु संहारक यन्त्र

यंत्र का प्रयोग सदैव सत्य की रक्षार्थ व केवल दुष्ट प्रवृत्ति के व्यक्तियों के विरूद्ध किया जाना चाहिये। आपकी सफलता से ईर्ष्यावश कई दुष्प्रवृत्ति के लोग आपका अहित चाहेंगे आप ऐसे लोगों से रक्षार्थ उपरोक्त यंत्र का प्रयोग कर सकते है यह शत्रु की शक्ति को नष्ट कर देगा।

साधना विधि:– किसी भी मंगलवार को जब कि मुहूर्त के अन्य सभी अंग भी अनुकूल हो, यंत्र की रचना प्रातःकाल भोजनपत्र पर अष्टगंध की स्याही व अनार की टहनी की सहायता से करें। यंत्र रचना के पश्चात काष्ठ पर लाल वस्त्र बिछाकर यंत्र स्थापित करें, और धूप–दीप से पूजन करें व **"ॐ हनुमते नमः"** का 108 बार जप करें। जाप के समय गाय के घी का दीपक प्रज्ज्वलित रहे। तत्पश्चात प्रणाम कर यंत्र को कवच में भरकर गले में धारण करें। इस यंत्र का प्रभाव शत्रुओं को भयभीत कर देगा व शत्रु नाश होगा और शत्रु कभी साधक के समक्ष खड़े होने की हिम्मत नहीं कर पाएगा।

सावधानियां:—तीनों दिन तक अर्थात् साधना काल में संयम का कठोरता से पालन करें, एक समय नमक रहित भोजन ग्रहण करें, रात्रि में सोने से पूर्व दुर्गा सप्तशती का पाठ करें।

शत्रु संहारक यंत्र

242	249	2	7
6	3	246	245
248	243	8	1
4	5	244	247

शत्रु संहारक यन्त्र

यंत्र का प्रयोग सदैव सत्य की रक्षार्थ व केवल दुष्ट प्रवृत्ति के व्यक्तियों के विरूद्ध किया जाना चाहिये। आपकी सफलता से ईर्ष्यावश कई दुष्प्रवृत्ति के लोग आपका अहित चाहेंगे आप ऐसे लोगों से रक्षार्थ उपरोक्त यंत्र का प्रयोग कर सकते है यह शत्रु की शक्ति को नष्ट कर देगा।

साधना विधिः– किसी भी मंगलवार को जब कि मुहूर्त के अन्य सभी अंग भी अनुकूल हो, यंत्र की रचना प्रातःकाल भोजनपत्र पर अष्टगंध की स्याही व अनार की टहनी की सहायता से करें। यंत्र रचना के पश्चात काष्ठ पर लाल वस्त्र बिछाकर यंत्र स्थापित करें, और धूप–दीप से पूजन करें व **"ॐ हनुमते नमः"** का 108 बार जप करें। जाप के समय गाय के घी का दीपक प्रज्ज्वलित रहे। तत्पश्चात प्रणाम कर यंत्र को कवच में भरकर गले में धारण करें। इस यंत्र का प्रभाव शत्रुओं को भयभीत कर देगा व शत्रु नाश होगा और शत्रु कभी साधक के समक्ष खड़े होने की हिम्मत नहीं कर पाएगा।

बंधन निवारक यंत्र

24	31	2	7
6	3	28	27
30	25	8	1
4	5	26	29

बन्धन निवारक यन्त्र

बंधन में बंध जाना यानि विकास या समर्ध्दि रूक जाना, इसका कारण है किसी दुष्ट या व्याभिचारी द्वारा दुष्कर्म किया जाना। बंधन का प्रभाव दुकान, मकान, नौकरी, कार्य, खेत, फसल, संबंधों आदि सभी पर पड़ता है। ये सब बंध जाते है, इनमें वर्ध्दि नहीं होती सारे प्रयास विफल सिद्ध होते है। ऐसे ही बंधनकारी षडयंत्रों के तोड़ के रूप में ही उपरोक्त यंत्र का प्रयोग किया जाता है।

साधना विधिः–यंत्र की रचना दीपावली की रात्रि या ग्रहण रात्रि को करना चाहिये, स्नान के बाद पवित्र भोजनपत्र पर अष्टगंध से अनार की लेखनी द्वारा यंत्र की रचना करें। तत्पश्चात पुष्प, धूप–दीप से पूजा करें। फिर जो भी आपके इष्ट देवता हो उनकी स्तुति से एक माला जपे। जप समाप्त होने पर यंत्र को फिर से धूप–अगरबत्ती देकर लाल धागे में पिरो ले, यंत्र को आठ तहों में लपेटकर चौकोर पैकेट जैसा कर लेना चाहिये। पिरोते समय इस बात का स्मरण रखें कि एक ओर नीबू व दूसरी ओर लाल मिर्च हो अर्थात् यंत्र मध्य में स्थित हो। अब इस सिद्ध यंत्र को दुकान, घर, फर्म या अन्य बंधित स्थान के प्रवेश द्वार पर लटका दें।

यंत्र के प्रभाव से बंधन, बाधा और विघ्न सब दूर हो जाएंगे व आप फिर समृद्धि व विकास के मार्ग पर अग्रसर होंगे।

विजय यंत्र
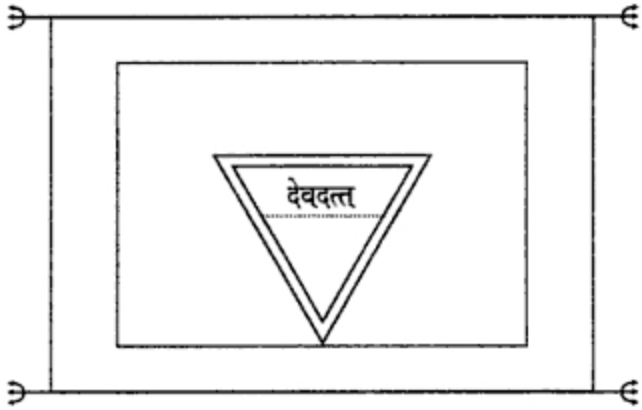
592	599	2	7
6	3	596	595
598	593	8	1
4	5	594	597

विजय यन्त्र

जीवन में मतभेद या विवाद सामान्य सी बात है, व यह प्रत्येक के जीवन में अनिवार्य रूप से स्थान बनाती है। यह भी सत्य है कि दोनों पक्षों में से एक सत्य व धर्म का संगी होता है तो दूसरा असत्य व अधर्म का। कई बार सत्य के संगी को इस तरह के विवादों में न्यायालय द्वारा आवश्यक साधनों के अभाव में दोषी करार दे दिया जाता है या उसके साथ अन्याय होता है। ये दोषपूर्ण निर्णय सही व्यक्ति को मानसिक व शारीरिक संताप भुगतने को मजबूर कर देता है। ऐसी ही विपरीत परिस्थितियों से निपटने के लिए उपरोक्त यंत्र अचूक साधन है। यह यंत्र न्यायाधीश के विवेक को जागृत कर उसे सही निर्णय सुनाने को बाध्य करता है।

साधना विधिः- दीपावली की मध्य रात्रि अथवा अन्य ग्रहणावसरों पर मध्य रात्रि के समय ही चांदी के पत्र पर उक्त यंत्र को उत्कीर्ण करायें, फिर लाल–वस्त्र पर आसन बिछा स्थापित करें व पूजा–पाठ करें और "ॐ दुर्गायै नमः" की 101 "मूंगा माला" का जाप करें तत्पश्चात कवच रूप में गले में धारण करें। निश्चित रूप से न्यायालय आपके अनुकूल न्याय संगत निर्णय देगा। जहां निर्णय आपके पक्ष में होगा वहीं शत्रु की कूटनीति, बल–प्रयोग, आक्रमण भावना समाप्त हो जाएगी।

भूत, प्रेत, निवारक यंत्र

भूत निवारक यन्त्र

इस यंत्र का प्रयोग प्रेत-ग्रस्त रोगी के छुटकारे के लिये किया जाता है। इसके साथ ही इसका प्रयोग करने से बच्चे बाहर की हवा से सुरक्षित रहते है, व दीर्घायु प्राप्त करते हैं। यद्यपि इस यंत्र की साधना विधि कुछ कठिन है, परंतु साथ ही इसका प्रभाव भी अत्यंत शक्तिशाली है।

साधना विधि:- किसी भी अमावस्या की रात्रि को श्मशान में जाकर वहां से किसी मुर्दे के कफन का टुकडा लाये। आते समय भूल कर भी पीछे मुड़कर न देखें। घर के प्रवेश द्वार के बाहर ही कहीं गुप्त स्थान पर उसे रख दें। उस रात्रि को स्वयं भी घर के अंदर प्रवेश न करें व बाहर ही शयन व्यवस्था कर ले प्रातः स्नान कर व कपड़े जो पहने हुए थे धो कर ही घर में प्रवेश करें। तत्पश्चात जो अष्टमी आए तब तक रात्रि में यंत्र को उस कफन के कपड़े पर कौवे के पंख से एकांत में अष्टगंधा की स्याही से लिखें। यंत्र में देवदत्त के स्थान पर भूतगस्त व्यक्ति का नाम लिखें। इस अष्टमी को प्रातःकाल से ही मौन रहे व आवश्यकतानुसार फलाहार करें। यंत्र रचना के पश्चात यंत्र को घी के दीपक पर सात बार फेरे व काले धागे में लपेट कर श्मशान में उसी स्थान पर मिट्टी हटा कर गाड़ दें। पुनः स्मरण रहे कि वापसी में पीछे मुड़कर न देंखे। इस रात्रि को भी घर में प्रवेश वर्जित है व प्रातःकाल में स्नान व वस्त्र धोने के बाद ही घर में प्रवेश करना चाहिये। इस साधना के बारे में किसी को भी नहीं बताना

चाहिये। साधना पश्चात प्रेत–गस्त रोगी आश्चर्यजनक रूप से क्लेश मुक्त होगा। संपूर्ण साधना अवधि में पूर्ण श्रद्धा व विश्वास कायम रहना अनिवार्य है।

यंत्र उपासना : एक संदेश

"यंत्र–साधना" के दिव्य प्रयोगों से सुधि साधकों को अवगत कराने के पीछे एक मात्र मंतव्य यही है कि दुःखी विपत्तिग्रस्त साधकों को दुःखों के सागर से पार लगाना, साथ ही जन मानस में इस साधना के प्रति जिज्ञासा जागृत करना। क्योंकि आज बहुत से "तथाकथित" शिक्षित लोग साधना को झूठलाने में लगे हैं, परंतु शायद वे इस तथ्य से परिचित नहीं कि साधना स्वयं एक विज्ञान है, जो प्रत्येक प्रयोग के लिए वैज्ञानिक तथ्य प्रस्तुत करता है। आशा है कि साधक पूर्ण साधना विधि–विधानांतर्गत करेंगे व स्वयं के साथ ही अन्य आवश्यक सहायता के इच्छुक लोगों को भी लाभांवित करेंगे। सार स्वरूप लेखक यह कहना चाहता है कि युग परिवर्तन होता हो तो भले ही हो परंतु साधना सदैव प्रासंगिक है।

अनुभूति साधना सिद्धि प्रयोग

सुधि साधको! कुछ प्रयोग ऐसे होते है, जो बिना किसी विशेष स्वार्थ के होते है। अगर इनका उदेश्य होता है तो यह कि जीवन जो है वो सुखमय रूप से अनवरत चलता जाये व सभी का कल्याण हो। इस साधना कि यही विशेषता है कि साधक जब अपने साथ ही सभी प्राणियों के कल्याणार्थ साधना करता है तो अप्रत्यक्ष रूप से स्वयं भी लाभान्वित होता है, तो सभी साधकों के लिए यह साधना विधि प्रस्तुत की जा सकती है।

साधना विधिः– साधना के लिए किसी भी शुक्ल पक्ष के मंगल व शनिवार को लिया जा सकता है, परंतु इतना विशेष रूप से स्मरण में रखें कि उस दिन रिक्ता तिथि यानि चतुर्थी, नवमी या चतुर्दशी न हो और साथ ही गृह सूतक रहित हो अर्थात् घर में जन्म या मृत्यु का समय न हो। यदि ऐसा कुछ साधना समयान्तरगत हो तो साधना को स्थगित करने के स्थान पर किसी ज्ञानी ब्राह्मण से पूर्ण करावें।

इस प्रयोग को स्त्रियां कर सकती है परंतु सिर्फ वे महिलायें जो रजोनिवृत्ति पा चुकी हों। साथ ही यह भी ध्यान रखें, कि ब्रह्मचर्य का अनिवार्य पालन हो, सात्विक विचारों के साथ ही साधक मात्र सात्विक आहार ही ग्रहण करें। क्षौर कर्म न करें। भोजन दिन में एक समय नमक रहित ग्रहण करें यदि फलाहार ही

करें तो सर्वश्रेष्ठ रहेगा।

जिस मंगलवार या शनिवार का चयन साधना कार्य में किया गया है। उससे ठीक पहले आने वाले सोमवार को अग्रलिखित सामग्री की व्यवस्था कर लें। सवा पात्र गाय का शुद्ध घी, एक छटांक भुने हुए चने, सवा पाव गुड़। गुड़ के 21 विभाजन कर दें। शुद्ध कपास (बाजार की रूई प्रयोग में न लें) की रूई लेकर बाईस फूल बत्ती बना उन्हें घी में भिगोकर रख लें। बत्तियों, गुड़ व चने को अलग–अलग ताम्रबर्तनों में पवित्र स्थान पर रख दें जहां कोई अपवित्र हाथ उन्हें न छू सकें। दिया सलाई व एक स्टील की तस्तरी भी साथ में रखें इसी तस्तरी में पूजा–सामग्री अक्षत, कुमकुमादि भी रखें। अब एक ऐसे हनुमान मंदिर की तलाश करें जो पूर्वामुखी हो व जितना प्राचीनतम हो उतना अच्छा साथ ही भीड़–भाड़ व शोर वाले स्थान से दूर होना चाहिये। अब मंगलवार या शनिवार को प्रातःकाल ब्रह्ममूहूर्त में उठ निवृत हो स्नानादि कर स्वच्छ श्वेत वस्त्र पहने, स्नान कुएं के पानी से करें। माथे पर कुमकुम या चंदन का तिलक लगाकर साधना सामग्री वाले स्थान पर जाएं व तस्तरी में एक डली गुड़, 11 चने, एक फूल बत्ती रखकर रूमाल या अन्य पवित्र वस्त्र से तस्तरी ढक लें, दिया सलाई लेना न भूलें क्यों कि मार्ग में किसी से बातचीत वर्जित है व एक बार प्रस्थान करने के बाद साधना के बाद ही घर में लौटना चाहिये। सब सामग्री ले तस्तरी हाथ में ले मंदिर के लिए नंगे पांव ही प्रस्थान करें, जाते व आते समय दांये, बांये व पीछे देखना व किसी से बोलना वर्जित है, हां चौराहे पर देखना वर्जित नहीं है बीच में कोई बोले या बुलाये तो उत्तर नहीं देना चाहिये भले ही कितना आवश्यक कार्य हो। हनुमान मंदिर पहुंच कर तस्तरी रख साष्टांग प्रणाम करें व घी से भीगी बत्ती जलायें। तत्पश्चात केसरी नंदन से अपनी इच्छा मौन रहकर ही प्रकट करें "प्रार्थना श्रद्धा व विश्वासपूर्ण होना चाहिये। फिर गुड़ व चना हनुमान जी को चढा दें।

घर के लिए प्रस्थान करने से पूर्व पुनः दण्डवत प्रणाम करें, व वापसी के समय भी मौन रहें व दांये, बांये व पीछे न देंखे। घर पहुंचकर यथा समान तस्तरी रख सात बार "श्रीराम" का जप करें। ऐसा ठीक 21 दिन करें व रात में सोने से पूर्व 11 बार "हनुमान चालीसा" का जाप करें व इच्छा की पूर्ति के लिए पवनपुत्र से प्रार्थना करें। साधना के 22वें दिन ब्रह्ममूहूर्त में उठ, निवृत हो, सवा सेर आटे की 5 बाटियां बनाकर कण्डों की अग्नि पर सेंके तथा गुड़–घी मिलाकर चूरमा बना लें, बचे गुंड़ को भी मिश्रित कर दें। शेष बचे चने व 22वीं बत्ती से भी पूजन कार्य करें। जो मौन रहकर किया गया हो। इस पूजा में चूरमें को प्रसाद के रूप में उपयोग लें लाये, चूरमा इतना हो कि आप दोनों समय

सीता–विरह–वारीश–मग्न–सीतेशतारक!।
लोलल्लांगूल पातेन ममारातीन् निपातय।।
रक्षोराज–प्रतापाग्नि–दह्यमानजगद्वन!।
लोलल्लांगूल पातेन ममारातीन् निपातय।।
ग्रस्ताऽशेष–जगत्–स्वास्थ्य–राक्षसाम्भोधिमन्दर!।
लोलल्लांगूल पातेन ममारातीन् निपातय।।
पुच्छ–गुच्छ–स्फुरद्–भूमि–जगद्–दग्धारिपत्तन!।
लोलल्लांगूल पातेन ममारातीन् निपातय।।
जगन्मनो–दुरुल्लंघ्य–पारावारविलङ्घन!।
लोलल्लांगूल पातेन ममारातीन् निपातय।।
स्मृतमात्र–समस्तेष्ट–पूरक! प्रणतप्रिय!।
लोलल्लांगूल पातेन ममारातीन् निपातय।
रात्रिञ्चर–चमूराशि–कर्तनैक–विकर्तन!।
लोलल्लांगूल पातेन ममारातीन् निपातय।।
जानकी जानकीज्यानि–प्रेमपात्र! परन्तप!।
लोलल्लांगूल पातेन ममारातीन् निपातय।।
भीमादिक्–महावीर–वीरवेशावतारक!।
लोलल्लांगूल पातेन ममारातीन् निपातय।।
वैदेही–विरहक्लान्त–रामरोषैक–विग्रह!।
लोलल्लांगूल पातेन ममारातीन् निपातय।।
वज्रांगनख–दंष्ट्रेश! वाज्रवज्रावगुण्ठन!।
लोलल्लांगूल पातेन ममारातीन् निपातय।।
अखर्व–गर्व–गंधर्व–पर्वतोद् भेदन स्वरः!।
लोलल्लांगूल पातेन ममारातीन् निपातय।।
लक्ष्मणप्राण–संत्राण–त्राता तीक्ष्णकरान्वय!।
लोलल्लांगूल पातेन ममारातीन् निपातय।।
रामादि विप्रयोगार्त भरताद्यार्तिनाशन।
लोलल्लांगूल पातेन ममारातीन् निपातय।।
सीताऽऽशीर्वाद–सम्पन्न! रामस्तावयवाक्षत।
लोलल्लांगूल पातेन ममारातीन् निपातय।।
इत्येवमश्वत्थ–तलोपविष्टः शत्रुञ्जयं नाम पठेत् स्वयं यः।
स शीघ्रमेवास्त–समस्त शत्रुः प्रमोदते मारुति–प्रसादात्।।

इस शत्रुञ्जय स्तोत्र को पीपल के वृक्ष के नीचे बैठकर पढ़ने से शीघ्र ही शत्रुओं का नाश हो जाता है।

सीता–विरह–वारीश–मग्न–सीतेशतारक।।
लोलल्लांगूल पातेन ममारातीन् निपातय।।
रक्षोराज–प्रतापग्नि–दहत्रमानजगद्धन!।
लोलल्लांगूल पातेन ममारातीन् निपातय।।
ग्रस्ताऽशेष–जगत्–स्वास्थ्य–राक्षसाम्भोधिमन्दर!।
लोलल्लांगूल पातेन ममारातीन् निपातय।।
पुच्छ–गुच्छ–स्फुरद्–भूमि–अगद्–दग्धारिपत्तन!।
लोलल्लांगूल पातेन ममारातीन् निपातय।।
जगन्मनो–दुरुल्लंध्य–पारावारविलङ्घन!।
लोलल्लांगूल पातेन ममारातीन् निपातय।।
स्मृतमात्र–समस्तेष्ट–पूरक! प्रणतप्रिय!।
लोलल्लांगूल पातेन ममारातीन् निपातय।
रात्रिञ्चर–चमूराशि–कर्तनैक–विकर्तन!।
लोलल्लांगूल पातेन ममारातीन् निपातय।।
जानकी जानकीज्यानि–प्रेमपात्र! परन्तप!।
लोलल्लांगूल पातेन ममारातीन् निपातय।।
भीमादिक्–महावीर–वीरवेषावतारक!।
लोलल्लांगूल पातेन ममारातीन् निपातय।।
वैदेही–विरहक्लान्त–रामरोषैक–विग्रह!।
लोलल्लांगूल पातेन ममारातीन् निपातय।।
वज्रांगनख–दंष्ट्रेश! वाज्रवज्रावगुण्ठन!।
लोलल्लांगूल पातेन ममारातीन् निपातय।।
अखर्व–गर्व–गंधर्व–पर्वतोद् भेदन स्वरः!।
लोलल्लांगूल पातेन ममारातीन् निपातय।।
लक्ष्मणप्राण–संत्राण–त्राता तीक्ष्णकरान्वय!।
लोलल्लांगूल पातेन ममारातीन् निपातय।।
रामाधि विप्रयोगार्त भरताद्यर्तिनाशन।
लोलल्लांगूल पातेन ममारातीन् निपातय।।
सीताऽऽशीर्वाद–सम्पन्न! रामस्तावयवाक्षत।
लोलल्लांगूल पातेन ममारातीन् निपातय।।
इत्येवमश्वत्थ–तलोपविष्टः शत्रुञ्जयं नाम पठेत् स्वयं यः।
स शीघ्रमेवास्त–समस्त शत्रुः प्रमोदते मारुति–प्रसादात्।।

इस शत्रुञ्जय स्तोत्र को पीपल के वृक्ष के नीचे बैठकर पढ़ने से शीघ्र ही शत्रुओं का नाश हो जाता है।

हनुमत् स्तोत्र

श्री रघुराज–पदाब्ज–निकेतन! पंकजलोचन! मंगलराशे।
चण्डमहाभुज–दण्ड सुरारि–विखण्डल पण्डित! पाहि दयालो।
पातकिनं च समुद्धर मां महतां हि सतामपि मानमुदारं।
त्वां भजतो मम देहि दयाधन! हे हनुमत्। स्वपदाम्बुजदास्यम्।
पुत्र–धन–स्वजनात्म–गष्हादिषु सक्तमतेरति किलिवषमूर्तेः।
केनचिदप्यमलेन पुराकष्त–पुण्यं–सुपुञ्ज्लवेन विभो वै।
त्वां अजतो मम दहि दयाधन! हे हनुमत्! स्वपदाम्बुजदास्यम्।।
संसषतिकूप–मनल्पमघोर निदाष–निदानमजस्त्रमशेष।
प्राप्य सुदुःख–सहस्त्रभुजंग–विषैक समाकुल–सर्वतनोर्मे।
घोरमहाकष्पणापदमेव गतस्य हरे पतितस्य भवाब्धौ।
त्वां भजती मम देहि दयाधन! हे हनुमत्! स्वपदाम्बुज दास्यम्।
संसषतिघोरमहागहने चरतो मणि रञ्जित–पुण्य–सुमूर्तेः।
दुःख फलं करणादिपताशमनंग–सुपुष्पमचिन्त्य सुमूलम्।
तं ह्यधिरूह्य हरे पतितं शरणागतमेव विमोचय मूढं।
त्वां भजतो मम देहि दयाधन! हे हनुमत्! स्वपदाम्बुज दास्यम्।।
संसषतिपन्नग–वक्रभयें करदंष्ट्र–महाविषदग्ध–शरीरं।
प्राणविनिर्गम–भीति समाकुल मन्धमनाथमतीव विषण्णम्।
मोहनहाकुहरे पतितं दययोद्धर माम जितेन्द्रिय कामम्।
त्वां भजतो मम देहि दयाधन! हे हनुमत्। स्वपदाम्बुज दास्यम्।।
ब्रह्म–मरूद्गण–रूद्र–महेन्द्र–किरीट–सकोटि–लसत्पदपीठं।
दाशरथि जपति क्षितिमण्डल एष निधाय सदैव ह्रदयब्जे।
तस्य हनूमत् एवं षिवंकष्टकमेतदनिष्ट हर वै।
यः सततं हि पठेत् स नरो लभतेऽच्युत–रामपदाब्ज–निवासम्।।

हनुमत् कवचम्

विनियोग–

अस्य श्री हनुमत्कवचस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः वीर हनुमान् देवता, अनुष्टुपछन्द, मरूतात्मज इति बीजम्, अञ्जना सूनुरिति शक्तिः श्री रामकिंकर इति कीलकम् मम सर्व रक्षार्थ श्री हनुमत्कवच जपं करिष्ये।

ध्यान–

ध्यायेद् बाल दिवाकर–द्युतिनिभं देवारि–दर्पापहं
देवेन्द्र–प्रमुख–प्रशस्त–यशस देदीप्यमानं रूचा।

श्रंष्खला बन्धने यस्तु इमं जपति मानवः।
तत्क्षणान् मुक्तिमोप्नोति कारागेहे तथैव च।।
भूर्जपत्रे लिखित्वा तु बध्नीयात् कण्ठदेशतः।
सर्व कार्यफलं तेषां सर्वत्र विजयो भवेत्।।

यदि व्यक्ति को महान्, विद्वान, विलक्षण प्रतिभावान, श्रेष्ठ पुरूष होने की महत्वाकांक्षा है व अंत में मोक्ष को प्राप्त करना चाहता है तो "हनुमत् कवच" का दिन में एक पाठ उसे ये सभी प्राप्त करा सकता है। (दिन में तीन बार पाठ और लाभदायक है)।

विभिन्न प्रकार के शारीरिक रोगों पर भी "हनुमान कवच" कठोर प्रहार करता है। प्रयोग विधि इस प्रकार है पवित्र नदी में इस प्रकार खड़े हों कि पानी नाभि को छुये इसी अवस्था में "कवच" का सात बार जप करने से टी.बी., अतिसार, कोढ़, ज्वर आदि जटिल रोगों से स्थायी मुक्ति मिलती है। विशेष रूप से शत्रु पर विजय प्राप्ति के लिए "कवच" के सात जप अश्वत्थ (बड़ वृक्ष) के नीचे करने चाहिये। बंधनों या कारागृह में बंद व्यक्ति निरंतर कवच का पाठ करें तो शीघ्र मुक्ति मिलती है। "कवच" को स्थायी लाभ के लिए भोजपत्र पर अष्टगंधा से अनार की कलम द्वारा रचित कर प्रतिष्ठित कर गले में धारण करें, सभी दिशाओं में सफलता प्राप्त होगी।

हनुमत्स्तोत्राणि

अस्य श्री हनुमत्कवचस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः अनुष्टप् छन्दः श्री हनुमान्देवता मारूतात्मजेति बीजम् अञ्जनी सूनुरिति शक्तिः आत्मनः सकलकार्य सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऊँ हनुमते अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ऊँ पवनात्मजाय तर्जनीभ्यां नमः।
ऊँ अक्षपद्माय मध्यमाभ्यां नमः।
ऊँ विष्णुभक्ताय अनामिकाभ्यां नमः।
ऊँ लंका विदाहकाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ऊँ श्रीरामकिंकराय करतल कर पष्ठाभ्यां नमः।

ध्यान–

ध्यायेद्बाल–दिवाकर द्युतिनिभ देवारिदर्पापहं,
देवेन्द्र प्रमुखेः प्रशंसि यशसं देदीप्यमानं रूचा।

सुग्रीवादिसमस्त वानर युतं सुव्यक्त तत्त्वप्रियं,
संरक्तारूण लोचनं पवनजं पीताम्बरालंकष्तम्।
वज्रांग पिंगलेशाढ्यं स्वर्णकुण्डलमण्डितम्।
नियुद्धमुपसंक्रम्य पारावार पराक्रमम्।।
स्फटिकाभं स्वर्णकान्तिं द्विभुजं च कष्ताञ्जलिम्।
कुण्डल द्वय संशोभि मुखाम्बुज हरिं भजेत्।।
वामहस्ते गदायुक्तं पाशहस्तं कमण्डलुम्।
ऊर्ध्वदक्षिणदोर्दण्डं हनुमन्तं विचिन्तयेत्।।
हनुमान्पूर्वतः पातु दक्षिणे पवनात्मजः।
पातु प्रतीच्यामक्षघ्नः पातु सागर पारगः।।
उदीच्यामूर्ध्वगः पातु केषरीप्रियनन्दनः।
अधस्ताद्विष्णु भक्तश्च पातु मध्ये च पाविनः।।
अवांतरदिशः पातु सीताशोक विनाशनः।
लंकाविदाहकः पातु सर्वापद्भ्यो निरन्तरम्।।
सुग्रीव सचिवः पातु मस्तकं वायुनन्दनः।
भालं पातु महावीरो भ्रुवोर्मध्ये निरन्तरम्।।
नेत्रे छायापहारी च पातु नः प्लवंगेश्वरः।
कपोलो कर्णमूले च पातु श्रीरामकिंकरः।।
नासाग्रमञ्जनीसूनुः पातु वक्त्रं कपीश्वरः।
पातु कंठे च दैत्यारिः स्कन्धौ पातु सुरार्चितः।।
भुजौ पातु महातेजाः करौ तु चरणायुधः।
नखान्नखायुधः पातु कुक्षौ पातु कपीश्वरः।।
वक्षो मुद्रापहारी च पार्श्वे पातु भुजायुधः।
लंकाविभंजकः पातु पष्ठदेशे निरन्तरम्।।
नाभि च रामदूतश्च कटिं पात्वनिलात्मजः।
गुह्ययं पातु कपीशस्तु गुल्फौ पातु महाबलः।।
अचलोद्धारकः पातु पादौ भास्करसन्निभः।
अङ्गान्यमित सत्त्वाढयः पातु पादांगुलीः सदा।।
हनुमत्कवचं यस्तु पठेद्विद्वान् विचक्षणः।।
स एव पुरूष श्रेष्ठो भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति।
त्रिकालमेककालं वा पठेन्मासत्रयं पुनः।।

सर्वारिष्टं क्षणे जित्वा स पुमान् श्रियमाप्नुयात्।
अर्धरात्रौ जले स्थित्वा सप्तबारं पठेद्यदि।।
क्षयापस्मारकुष्ठादिताप ज्वर निवारणम्।
अश्वत्थमूलेर्कबारं स्थित्वा पठति यः पुमान्।।
स एव जयमाप्नोति संग्रामेष्वभयं तथा।
यः करे धारयेन्नित्यं सर्वान्कामानवाप्नुयात्।।
लिखित्वा पूजयेद्यस्तु तस्य गष्छभयं हरेत्।
कारागष्हे प्रयाणे च संग्रामे देवविप्लवे।
यः पठेद्धनुमत्कवचं तस्य नास्ति भयं तथा।।
यो वारां निधिमल्प पल्लवमिवोल्लंध्य प्रतापान्वितो,
वैदेही धन तल्पशोक हरणो वैकुण्ठ भक्तप्रियः।
अक्षघ्यूर्जित राक्षसेश्वर महादर्पापहारो रणे,
सोऽयं वानर पुङ्गवोऽवतु सदा चास्मान्समीरात्मजः।

पंचमुख हनुमत्कवचम्

श्री गणेशाय नमः।
श्री पंचवदनायाञ्जनेनाय नमः।

ऊँ अस्य श्री पंचमुख विराट् हनुमान देवता ह्रीं बीजं श्रीं शक्तिः क्रौ कीलकं क्रूं कवचं क्रैं अस्त्राय फट्।
इति दिग्बंधः।
श्री गरूड़ उवाच–

अतः ध्यानं प्रवक्ष्यामि श्रष्णु सर्वांग सुन्दर।
यत्कष्तं देवदेवेन ध्यानं हनुमतः प्रियम्।।
पञ्च वक्त्र महाभीमं त्रिपञ्चनयनैर्युतम्।
बाहुभिर्दषाभिर्युक्तं सर्व कामार्थ सिद्धिदम्।।
पूर्व तु वानरं वक्त्रं कोटि सूर्य समप्रभम्।
दष्ट्रा कराल वदनं भष्कष्टी कुटिलेक्षणम्।।
अस्यैव दक्षिणं वक्त्रं नारसिंह महाद्भुतम्।
अत्युग्र तेजोवपुष भीषणं भयनाषनम्।।
पश्चिमं गारूड वक्त्रं वक्रतुण्डं महाबलम्।

सर्व नाम प्रशमनं विषभूतादि कष्न्तनम्।।
उत्तरं सौकरं वक्त्रं कष्ष्णं दीप्तं नभोपमम्।
पातालसिंह वेताल ज्वर रोगादि कष्न्तनम्।।
ऊर्ध्व हयाननं घोरं दानवांतकरं परम्।
येन वक्त्रेण विप्रेंद तारकाख्यं महासुरम्।।
जघानं शरणं तत्स्यात्सवं तत्स्यात्सर्व शत्रुहरं परम्।
ध्यात्वां पञ्चमुखं रूद्रं हनुमन्तं दयानिधिम्।।
खड्गं त्रिशूल खट्वांड्ग पाषमंकुशपर्वतम्।
मुष्टि कौमोदकीं वक्षं धारयन्तं कमण्डलुम्।।
भिन्दिपालं ज्ञानमुद्रां दशाभिर्मुनि पुड्गवम्।
एतान्यायुधजालानि धारयन्तं भजाम्यहम्।।
प्रेतासनोपविष्टं तं सर्वाभरणभूषितम्।
दव्यमालाम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम्।।
सर्वाश्चर्यमयं देवं हनुमद्विश्वतोमुखम्।
पंचास्यमच्युतमनेक विचित्रवर्ण वक्त्रं,
शशाड्क शिखरं कपिराज–वर्यम्।
पीताम्बरादि मुकुटैरूपशोभिताड्ग,
पिड्गाक्षमाद्यमनिषं मनसा स्मरामि।।
मर्कटेशं महोत्साहं सर्वशत्रहरं परम्।
शत्रु संहर मां रक्ष श्रीमन्नापदमुद्धर।।
हरि मर्कट मर्कट मन्त्रमिदं परिलिख्यति लिख्यति वामतले।
यदि नश्यति नश्यति शत्रुकुलं यदि मुञ्चति मुञ्चति वामलता।।
ॐ हरिमर्कटाय स्वाहा।
ॐ नमो भगवते पञ्चंवदनाय पूर्वक पिमुखाय सकलशत्रु संहारणाय स्वाहा।
ॐ नमो भगवते पंञ्चंवदनाय दक्षिणमुखाय करालवदनाय नरसिंहाय सकलभूत प्रथमनाय स्वाहा।
ॐ नमो भगवते पंचवदनामय पश्चिम मुखाय गरूडाननाय सकल विष हराय स्वाहा।
ॐ नमो भगवते पंचवदनामोत्तर मुखायादिवराहाय सकल सम्पत्काराय स्वाहा।
ॐ नमो भगवते पंचवदनायोर्ध्व मुखाय हयग्रीवाय सकल जन वशं कराय स्वाहा।

ॐ अस्य श्री पंचमुखहनुमन्मंत्रस्य श्री रामचंद्र ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः पंचमुखवीर हनुमान् देवता हनुमनिति बीजम् वायुपुत्र इति शक्तिः अंजनीसुत इति कीलकम् श्रीराम दूतहनुमत्प्रसाद सिद्धयर्थ जपे विनियोगः।

इति कष्यादिकं विन्यस्य।

ॐ अंजनी सुताय अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ रूद्रमूर्तये तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ वायु पुत्राय मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ अग्निगर्भाय अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ रामदूताय कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ पंचमुख हनुमते करतल करपष्ठाभ्यां नमः।

इति करन्यासः।

अंजनी सुताय हृदयाय नमः।

ॐ रूद्रमूर्तये शिरसे स्वाहा।

ॐ वायु पुत्राय शिखायै वषट्।

ॐ अग्निगर्भाय कवचाय हुं।

ॐ रामदूताय नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ पंचमुख हनुमते अस्त्राय फट्।

पंचमुख हनुमते स्वाहा।

इति दिग्बन्धः।।

ध्यानम्–

वन्दे वानरनारसिंह खगराट् क्रोडाश्ववक्त्रान्वितं,
दिव्यालंकरणं त्रिपञ्चनयनं देदीप्यमानं रूचा।
हस्ताब्जैरसिखेट पुस्तक सुधा कुम्भां कुशादि हल,
खट्वागं फणिरूह दशभुजं सर्वारिवीरपहम्।।

मंत्र–

ॐ श्रीराम दूतायांजनेयाय वायुपुत्राय महाबलपराक्रेमाय सीता दुःख निवारणाय लंकादहन कारणाय महाबल प्रचण्डाय फाल्गुन सखाय कोला–हलाय सकल ब्रह्माण्ड विश्वरूपाय सप्त समुद्र निर्लवनाय पिंगल नयनायामितविक्रमाय सूर्य विम्बफलसेवनाय दुष्ट निवारणाय दर्षष्टि निरालंकष्ताय संजीवनी संजीवितांगदलक्ष्मण महाकपि सैन्य प्राणदाय दशकण्ड विध्वंसनाय रोमेष्टाय महाफाल्गुनसखाय सीता सहित राम वर प्रदाय षट् प्रयोगागमंचमुखवीर

हनुमन्मन्त्र जपे विनियोगः।

ऊँ हरिमर्कट मर्कटाय बं बं बं बं बं वौषट् स्वाहा।

ऊँ हरिमर्कट मर्कटाय फं फं फं फं फं फट् स्वाहा।

ऊँ हरिमर्कट मर्कटाय खें खें खें खें खें मारणाय स्वाहा।

ऊँ हरिमर्कट मर्कटाय लुं लुं लुं लुं लुं आकर्षित सकल सम्पत्कराय स्वाहा।

ऊँ हरिमर्कट मर्कटाय धं धं धं धं धं शत्रु स्तम्भनाय स्वाहा।

ऊँ टं टं टं टं टं कूर्म मूर्तये पंचमुखवीर हनुमते परयंत्र परतंत्रोच्चाटनाय स्वाहा।

ऊँ कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं दं धनं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं त्रं क्षं स्वाहा।।

इति दिग्बंधः।।

ऊँ पूर्वकपिगुखाय पंचमुख हनुमते टं टं टं टं टं सकल शत्रु सहारणाय स्वाहा।।

ऊँ दक्षिण मुखाय पंचमुख हनुमते कराल वदनाय नरसिंहाय ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रू ह्रै ह्रौ ह्रः सकल भूत प्रेत दमनाय स्वाहा।।

ऊँ पश्चिम मुखाय गुरूड़ाननाय पंचमुख हनुमते मं मं मं मं मं सकल विष हराय स्वाहा।

ऊँ उत्तरमुखायादिवराहाय लं लं लं लं लं नषसिंहाय नीलकण्ठ मूर्तये पंचमुख हनुमते स्वाहा।।

ऊँ ऊर्ध्व मुखाय हयग्रीवाय रूं रूं रूं रूं रूं रूद्रमूर्तये सकल प्रयोजन निर्वाहकाय स्वाहा।।

ऊँ अंजनीसुताय वायुपुत्राय महाबलाय सीताशोक निवारणाय श्रीरामचंद्र कष्पा पादुकाय महावीर्य प्रमथनाथ ब्रह्माण्ड नाथाय कामदाय पंचमुख वीर हनुमते स्वाहा।।

सकल प्रयोजन निर्वाहकाय पंचमुखवीर हनुमते श्रीराम चन्द्रवर प्रसादाय जं जं जं जं जं स्वाहा।

इदं कवचं पठित्वा तु महाकवचं पठेन्नरः।
एकवारं जपेत्स्तोत्रं सर्वशत्रु निवारणम्।।
द्विवार तु पठेन्नित्यं र्ससम्पत्करं शुभम्।
त्रिवारं च पठेन्नित्यं सर्वसम्पत्करं शुभम्।।
चतुवरिं पठेन्नित्यं सर्वरोग निवारणम्।

पंचवारं पठेन्नित्यं सर्वलोक वषंकरम्।।
षड्वारं च पठेन्नित्यं सर्वदेव वषकरम्।
सप्तवारं च पठेन्नित्यं सर्वसौभाग्य दायकम्।।
अष्टवारं पठेन्नित्यंमिष्ट कामार्थ सिद्धिदम्।
नत्रवारं पठेन्नित्यं राजभोगमवाप्नुयात्।।
दशवारं पठेन्नित्यं त्रैलोक्य ज्ञानदर्शनम्।
रूद्रावर्षत्ति पठेन्नित्यं सर्वसिद्धिर्भवेद् ध्रुवम्।।
कवचस्मरणनैव महाबलमवाप्नुयात्।

एकादश मुख हनुमत्कवचम्

श्री गणेशाय नमः।

लोपामुद्रोवाच–

कुम्भोद्भव दयासिन्धो श्रुतं हनुमतः परम्।।
यंत्रमंत्रादिकं सर्व त्वन्मुखोदीरितं मया।।
दया कुरू मयि प्राणनाथ वेदितुमुत्सहे।
कवचं वायुपुत्रस्य एकादश मुखात्मनः।।
इत्येवं वचनं श्रुत्वा प्रियायाः प्रज्ञयान्वितम्।
वक्तुं प्रचक्रमे तत्रा लोपामुद्रां प्रति प्रभुः।।
अगस्त्य उवाच–
नमस्कष्त्वा रामदूतं हनुमन्तं महामतिम्।
ब्रह्मप्रोक्तं तु कवचं श्रष्णु सुन्दरि सादरम्।।
सनन्दाय सुमहच्च्वतुरानन भाषितम्।
कवचं कामदं दिव्यं सर्वरक्षो निबर्हणम्।।
सर्वसंपत्प्रदं पुण्यं मर्त्यानां मधुरस्वरे।
ॐ अस्य श्री कवचस्यैकादश चक्रस्य धीमतः।
हनुमत्कवचमन्त्रस्य सनन्दन ऋषिः स्मष्तः।
प्रसन्नात्मा हनूमश्चिम देवताऽत्र प्रकीर्तिता।।
छन्दोऽनुष्टुप् समाख्यातं बीजं वायु सुतस्तथा।
मुख्यः प्राणः शक्तिरिति विनियोगः प्रकीर्तितः।।
सर्वकामार्थ सिद्धयर्थे जप एवमुदीरयेत्।

ॐ स्फ्रैं बीजं शक्तिधृक् पातु शिरो मे पवनात्मजः।।
क्रौं बीजात्मा नयनयोः पातु मां वानरेश्वरः।
क्षं बीजरूपी कर्णौ मे सीताशोक विनाशनः।।
ग्लौं बीजवाच्यो नासां मे लक्ष्मणप्राणदायकः।
त्र बीजार्थश्च कण्ठं मे पातु चाक्षय कारकः।।
ऐं बीजवाच्यो ह्रदयं पातु म कपिनायकः।
बं बीज कीर्तितः पातु बाहु में चांजनीसुतः।।
ह्रां–बीजं राक्षसेन्द्रस्य दर्पहा पातु चोदरम्।
ह्रां सौं– बीजमय मध्यं पातु लंकाविदारकः।।
ॐ ह्रीं बीजधरः पातु गुह्य देवेन्द्रवन्दितः।
रं बीजात्मा सदा पातु चोरू वारिधिलघनः।।
सुग्रीवसचिवः पातु जानुनी मे मनोजवः।
पादौ पादतले पातु द्रोहाचल धरो हरिः।।
आपादमस्तकं पातु रामदूतो महाबलः।
पूर्वे वानरवक्त्रौ मामाग्नेय्यां क्षत्रियान्तकष्त्।।
दक्षिणे नारसिंहस्तु नैर्ऋत्यां गुणनायकः।
वारूण्यां दिशि मामत्यात्खगवक्त्री हरीश्वरः।।
वायव्यां भैरवमुखः कौबेर्या पातु मां सदा।
क्रौडाख्यः पातु मां नित्यमीषान्यां रूद्ररूपधष्क।।
ऊर्ध्व हयायननः पातु त्वधः शेष मुखस्तथा।
रोमास्यः पातु सर्वत्र सौम्यरूपी महाभुजः।।
इत्येवं रामदूतस्य कवचं प्रपठेत्सदा।
एकादश मुखस्यैतुदीप्यं वै कीर्तितं मया।।
रक्षोघ्नं कामदं सौम्यं सर्वसम्पद्धिधायकम्।
पुत्रदं धनदं चोग्रशत्रुसंघ त्रिमर्वनम्।।
स्वर्गाववर्गदं दिव्यं चिन्तितार्थप्रदं शुभम्।
एतत्कवचमज्ञात्वा मंत्र सिद्धिने जायते।।
चत्वारिं सहस्त्राणि पठेच्छुद्धात्मना नरः।
एक वारं पठेन्नित्य कवचं सिद्धिदं पुमान्।।
द्विवारं वात्रिवारं वा पठनादास्यमाप्नुयात्।
क्रमादेकादशादेवमार्वतन जपात्सुधीः।।

वर्षान्ते दर्शनं साक्षाल्लभते नात्र संशयः।
यं यं चिन्तयते चार्थं तं तं प्राप्नोति पुरुषः।।
ब्रह्मोदीरितमेतद्धि तवाग्रे कथितं महत्।
इत्येवमुक्त्वा वचनं महर्षिस्तूष्णीं वभष्वेन्दुमुखीं निरीक्ष्य।।
संहृष्टचेताऽपि तदा तदीयपादौ ननामातिमुदा स्वभर्तुः।

हनुमत् 'दीप-दान'

विभिन्न प्रकार की साधनाओं यथा मंत्र, तंत्र, यंत्र सभी में अपने इष्ट देवता को 'दीप–दान' देने का उल्लेख ग्रन्थों में सहज ही मिल जाता है। साथ ही यह उल्लेख भी मिलता है कि 'दीप–दान' के महत्व को जान लेने वाला व्यक्ति सिद्ध शक्तियों को सरलता से पा लेता है। यहां हनुमान जी को अपने इष्ट मानने वालों के लिए 'दीप–दान' विधि बतलाई जा रही है। साथ ही दीप पात्र का प्रमाण, तेल का मान, द्रव्य का प्रमाण, बत्ती का मान, स्थान, भेद–मंत्र, दीपदान मंत्र आदि का भी वर्णन किया जा रहा हैं। 'दीपदान' के बारे में प्रचलित है कि पुष्प गंध युक्त तेल से दिया गया 'दीपदान' कामनाओं की पूर्ति आश्चर्यजनक ढंग से करता है। इसके साथ ही कुछ अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथों में यह वर्णन मिलता है कि आतिथ्य में तिल का तेल प्रयुक्त करने से लक्ष्मी कृपा प्राप्त होती है, व सरसों का तेल रोग विनाश में सहायक होता है।

'दीपदान' में अनाज के प्रकारों का अपना महत्व है। गेंहू, उड़द, तिल व चावल इन पांच प्रकार के अनाजों के मिश्रण से बने आटे के दीपदान को ही हनुमान जी के 'दीपदान' के लिए उत्तम माना गया है। इसी का 'दीपदान' कामनापूर्ति कारक है।

वैसे तो 'दीपदान' के लिए यह कहा गया है कि लक्ष्मी--प्राप्ति के लिए कस्तूरी का दीपक, कन्या प्राप्ति के लिए इलायची, लौंग, कर्पूर व कस्तूरी का दीपक व मित्रता के लिए भी कस्तूरी के दीपक उत्तम है परंतु ये सभी वस्तुएं मंहगी होने व साथ ही शुद्ध कस्तूरी अप्राप्य होने के कारण आज के युग में ऊपर बतलाये गए पांच प्रकार के अनाजों का ही 'दीपदान' उचित है। इसके लिए निम्न मानों का उपयोग किया जाता है।

आठ मुट्ठी बराबर एक किंचित
आठ किंचित बराबर एक पुष्कल
चार पुष्कल बराबर एक आठक
चार आठक बराबर एक द्रोण
चार द्रोण बराबर खारी या प्रस्थं

इसी तरह
दो पल बराबर एक प्रसष्त
दो प्रसष्त बराबर एक कुद्रव
चार कुद्रव बराबर एक प्रस्थ
चार प्रस्थ बराबर एक आढक
चार आढक बराबर एक द्रोण
चार द्रोण बराबर एक खारी
इन मानों का उपयोग षटकर्मों में होता है।
इनमें 5/7/9 ये प्रमाण दीपक के है।
सुगन्धित तेल से जलने वाले दीपक का कोई मान नहीं है।

विधि:- प्रमाण के मानों के अनुसार धान्य लेकर सोमवार को जल में भीगों दें फिर कंवारी कन्या से उसे सिलबट्टे पर पिसवायें। अब पवित्र जल से धान्य गूंथे व दीपक का निर्माण करें, दीपक को प्रज्ज्वलित करते समय 'हनुमत कवच' का पाठ एकाग्रचित्त हो करें फिर अगले दिन अर्थात् मंगलवार को शुद्ध धरा पर रख दीपदान करें। चूंकि कूट बीज की संख्या ग्यारह (11) है, अतः दीपक की बत्ती के भी ग्यारह तंतु होने चाहिये। पात्रार्थ कोई नियम नहीं है। मार्ग में जो दीप जलाए जाते है उनमें 21 तंतुओं की बत्ती प्रयुक्त की जाती हैं 'हनुमान दीपदान' के लिए दीपक की बत्ती लाल तंतु की होना आवश्यक है। इतने पल तेल दीपक में डाले जितनी संख्या कूट की हो। गुरू कार्य में तेल की मान ग्यारह पल होता है। नित्य कर्म में तेल का मान पांच पल हो, तेल काया दीपक का मान रूचि अनुसार रखें।

यदि नैमित्तिक कर्मो के लिए दीपदान करना हो तो हनुमान जी की प्रतिमा के समीप या शिव मंदिर में दीपदान करना चाहिये।

यदि विष व व्याधि के निवारणार्थ दीपदान किया जा रहा हो तो 'दीपदान' हनुमान प्रतिमा के समक्ष किया जाये। यदि 'दीपदान' का ध्येय लक्ष्मी व धन–धान्य की प्राप्ति है, तो स्फटिक युक्त शिवलिंग के समीप, शालिग्राम पिंडी के निकट 'दीपदान' करें। सामान्य कल्याण व अनवरत लाभ के लिए देव प्रतिमा के समक्ष, शुभ अवसर पर चौराहों पर 'दीपदान' करना चाहिये।

पीपल या वटवक्ष की जड़ के समीप किया गया 'दीपदान' कार्य सिद्ध करवाता है। विष, व्याधि, ज्वर उतारने, भूत ग्रह निवारण, कृत्या से छुटकारा पाने तथा घाव जोड़ने, दुर्गम मार्ग में वन्य जीवों से बचने हेतु, बंधन मुक्ति, पथिक के आगमन में, आने–जाने के मार्ग तथा राजद्वार पर दीपदान करें।

दीपदान के समय हनुमान जी की प्रतिमा बनाने के लिए दूध, दही, गोबर या मक्खन का प्रयोग करना चाहिये। इस प्रतिमा का मुख दक्षिण में हो। प्रतिमा के मस्तक पर मुकुट हो, सुंदर वस्त्र, पीठ या दिवार पर हनुमान जी की प्रतिमा

दीपदान करता है। उसके लिए कुछ भी असंभव नहीं रह जाता व अंत समय में परमसुख मोक्ष को प्राप्त करता है।

दीपदान की अवधि में यदि साधक से कोई त्रुटि भूलवश हो जाती है तो निराश न हो व पूजा के पश्चात 'क्षमा–याचना' के रूप में निम्न मंत्र का उच्चारण करें। दीपदान के सुपरिणामों में कोई कमी नहीं आएगी।

आवाहनं न जानामि न जानामि तवार्चनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर।।
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरण मम।
तस्मात्कारूण्य भावेन रक्षस्व परमेश्वर।।
गत पापं गतं दुःखं गतं दरिद्रयमेव च।
आगता सुख संपत्तिः पुण्याश्च तव दर्शनात्।।
मंत्र हीनं क्रिया हीनं भक्ति हीनं सुरेश्वरं
यत्पूजित मया देव परिपूर्ण तदस्तु मे।।
यदक्षरादं भ्रष्टं मात्रा हीनं च यद्भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर।।

हनुमान स्वप्नानुष्ठान

यह अद्भूत साधना है व अनुभूति सिद्ध है जो हनुमान जी के अनन्य भक्त को ही प्राप्त होती है। यद्यपि साधनानुष्ठान अत्यंत ही सरल व सहज है किसी भी मंगलवार को यह प्रारंभ किया जा सकता है। अनुष्ठान काल में ब्रह्मचर्य का पालन, अनिवार्य है तथा क्षौर, नख–कृन्तन, मद्यपान और मांसाहार सर्वथा निषिद्ध है।

साधना विधिः– यह कुल 81 दिन का अनुष्ठान है। किसी भी मंगलवार को प्रातःकाल ब्रह्ममूहूर्त में उठ शौच, मुखमार्जन और स्नान के अंतर शुद्ध वस्त्र पहनकर एक लोटा जल लेकर हनुमानजी के मंदिर में जाए, लोटा तांबे का हो। मूर्ति को लोटे के जल से स्नान करायें व एक दाना उड़द हनुमान जी के सिर पर रखकर 21 परिक्रमा करें। बाद में मन ही मन अपना मनोरथ श्रीहनुमाजी के समक्ष रखें। वापसी में उड़द का दाना वापस घर लाये व उसे पृथक स्थान पर रख दें। द्वितीय दिवस से एक–एक दाना बढ़ाते जायं इस प्रकार 41वें दिन 41 दानें रखकर 42वें दिन से एक–एक दाना कम करना आरंभ करें इस प्रकार 42वें दिन 40, 43वें दिन 39 और 81वें दिन 1 दाना होगा इसी तरह 81 दिन का यह अनुष्ठान पूर्ण होगा इसी दिन रात्रि में 'हनुमान चालीसा' के ग्यारह (11) पाठ करके सोयें स्वप्न में हनुमाजी अपने परम भक्तों को दर्शन देंगे। अगले दिन

प्रातःकाल उठ पृथक दानों को जो रोजाना मंदिर से आते समय लाते थे, को नदी में विसर्जित कर देना चाहिये। तत्पश्चात आकर स्नानादि करें। इस अनुष्ठान से आपकी सभी शुभकामनाएं व सद्मनोरथ पूर्ण होंगे और सबसे बड़ा लाभ यह मिलेगा, कि जीवन पर्यन्त पवन पुत्र की कृपा बनी रहेगी।

हनुमान उपासना : आवश्यक बातें

1. साधना समय

एक महत्वपूर्ण बात मैं साधकों को बतलाना चाहूँगा कि हनुमान जी अत्यंत ही सरल व विनम्र प्रकृति के है न ही उनकी साधना के लिए समय विशेष का बल पूर्वक प्रावधान है। अतः साधक को चाहिये कि जब भी संभव हो व परिस्थितियां अनुकूल हो मंगल या शनिवार को साधना प्रारंभ कर दें। यदि ग्रहण काल में साधना की जाये तो परिणाम सामान्य से 100 गुना श्रेष्ठ मिलता हैं। साधक को तो प्रतिक्षण हनुमान जी के स्मरण में ही बिताना चाहिये, किसी काल विशेष की प्रतिक्षा में समय नष्ट न करें।

2. कुछ सावधानियां

हनुमान साधना में नैवेध का प्रयोग साधना समय के अनुसार बदल जाता है जैसे–

प्रातः–गुड़ एवं नारियल का गोला।

मध्याह्नः– गुड़, घी, गेहूं की रोटी का चूरमा।

रात्रि– आम, अमरूद एवं केला समर्पित करें।

नैवेध का प्रयोग ही दोनों समय के भोजन में करना चाहिये।

साधना सामग्री में पुष्पों के प्रयोग में यह ध्यान रखें कि लाल तथा पीले पुष्पों को हनुमत्पूजा में चढ़ाये। बड़े पुष्पों में सूर्यमुखी, कमल, हजारा का प्रयोग भी किया जा सकता है।

* मंत्र का जंप करते समय आंखे बंद करने के स्थान पर हनुमत् प्रतिमा को एक टक निहारना चाहिये।
* मंत्रोच्चारण अत्यंत स्पष्ट व शुद्ध हो।
* महिलायें भी साधना करना चाहें तो कर सकती परंतु वे सभी प्रकार से शुद्ध व सात्विक हो।
* हनुमान साधना स्वकल्याण या लोक कल्याण की भावना से करनी चाहिये, इससे साधना में शीघ्र सफलता मिलती है।

* हनुमान साधना के लिए 'हनुमन यंत्र' या लाल चंदन की मूर्ति को उत्तम माना जाता है।
* जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है कि हनुमान लोक कल्याणकारी देवता है व कभी भी परअनिष्ट को साधना का ध्यैय न बनाये अन्यथा स्वयं पर अलाभकारी प्रभाव होंगे।
* साधना में "मूंगा" , "रूद्राक्ष" या "लाल हकीक माला" का प्रयोग जप के लिए करें।
* साधना के दिनों में राजसी व तामसी विचारों से दूर रहना चाहिये व तामसिक व्यक्तियों से दूर रहें व व्यर्थ के वाद–विवाद से बचें।
* लाल रंग हनुमान जी को अतिप्रिय है। अतः लाल आसन पर बैठे, लाल धोती एवं लाल चादर का प्रयोग करें।
* साधना समय में दीपक या अगरबत्ती अनवरत जलते रहना चाहिये।
* हनुमत् साधना के दिन एक ही समय भोजन ग्रहण करें व वह भी सूर्यास्त के बाद। यदि भोजन न किया जाये तो अधिक सही होगा, फलाहार भी किया जा सकता है। भोजन में नमक न हो।
* संपूर्ण साधना के समय में दासत्व भाव रखना चाहिये, ऐसी भावना से हनुमानजी शीघ्र ही प्रसन्न होते है।

3. हनुमान साधना के लाभ

संपूर्ण साधना विधि–विधान के द्वारा की गई साधना साधक को बल, बुद्धि व शक्ति प्रदान करती है।

साधना में निमग्न होते ही साधक का परिचय दिव्य व अलौकिक शक्तियों से होने लगता है।

पुराने व लाइलाज रोगों का जड़ से शमन होता है।

सभी बाधायें, कष्ट व दुःख दूर होते है।

व्यक्तित्व में निखार आता है व अंहकार दूर हो जाता है।

श्री हनुमान जी की साधना के सद्लाभों का पूर्व में विस्तार से विवेचन विभिन्न साधनाओं के संदर्भ में किया जा चुका है।

सुन्दर काण्ड

सुन्दरकाण्ड की महत्ता अनुपम व अद्वितीय है। सुन्दरकाण्ड की स्तुति किसी कामना विशेष की पूर्ति तक सीमित नहीं है। साधक किसी भी शुभ लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सुन्दरकाण्ड की स्तुति कर सकता है। साधना समय में ईश्वर के प्रति असीम आस्था व विश्वास का होना अति आवश्यक है।

साधना विधिः-किसी भी समस्या से छुटकारा पाने, सुख–समषद्धि प्राप्त करने, घर में शांति स्थापित करने व अन्य किसी भी शुभ उद्देश्य के लिए शनिवार या मंगलवार के दिन का चयन करें व ब्रह्म मूहूर्त में उठ स्नानादि से निवष्त हो उत्तर या पूर्व मुखी आसन पर बैठ सभी प्रकार की साधना सामग्रियों की व्यवस्था कर स्तुति करनी चहिये। 21 बार शुद्ध मन से भक्ति पूर्वक उच्चारण से सभी कार्य सिद्ध होते है। अपने सुखमय जीवन की निरन्तरता बनाये रखने के लिए नित्य पाठ अति लाभकारी है।

सुन्दरकाण्ड

दोहा

हनुमान तेहि परसा कर पुनि कीन्ह प्रनाम।
राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ विश्राम।।

पवनपुत्र श्रीहनुमानजी ने केवल उसे हाथ से छुआ मात्र मैनाक का मान रखने के लिए, फिर बोले –प्रभू! श्रीरामजी का काम किए बिना भला में कैसे विश्राम कर सकता हूँ।

चौपाई

जात पवनसुत देवन्ह देखा। जानैं कहुँ बल बुद्धि बिसेषा।।
सुरसा नाम अहिन्ह कै माता। पठइन्हि आइ कही तेहिं बाता।।

सभी देवताओं ने जब यह देखा कि पवनपुत्र वीर हनुमानजी अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं तो उनकी परीक्षा लेने के लिए सर्पों की माता सुरसा को भेजा। सुरसा ने हनुमानजी को बीच रास्ते में रोक लिया और कहा–

आजु सुरन्ह मोहिं दीन्ह अहारा। सुनत बचत कह पवनकुमारा।।
राम काजु करि फिरि मैं आवौं। सीता कइ सुधि प्रभु हिं सुनावौं।।

देवताओं ने तुम्हें यहां भेजकर मेरे भोजन की व्यवस्था कर दी है। उसकी इच्छा जानकर हनुमान जी बोले–मैं प्रभु! श्रीरामजी का काम करके लौट आऊं और प्रभु को माता सीता का समाचार दे दूं।

तब तव बदन पैठिहउँ आई। सत्य कहउँ मोहिं जान दे माई।।
कवनेउँ जतन देइ नहिं जाना। ग्रससि न मोहि कहेउ हनुमाना।।

हे माता! उसके बाद मैं तुम्हारे मुख में समा जाऊंगा अर्थात् तुम्हारा भोजन बन जाऊंगा। अतः इस समय मुझे प्रभु श्रीरामजी का कार्य करने के लिए आज्ञा दें। जब सुरसा नहीं मानी तो हनुमान जी बोले–ठीक है, मुझे निगल ले।

जोजन भरि तेहि बदनु पसारा। कपि तनु कीन्ह दुगुन बिस्तारा।।
सोरह जोजन मुख तेहि ठयऊ। तुरत पवनसुत बत्तिस भयऊ।।

यह सुन सुरसा ने अपना मुख योजन भर (चार मील) मुंह फैला दिया। तब हनुमान जी ने अपने शरीर को दुगुना कर दिया। सुरसा ने मुख का आकार सोलह योजन कर लिया तो हनुमान जी तुरन्त बत्तीस योजन के हो गए।

जस जस सुरसा वदनु बढ़ावा। तासु दून कपि रूप देखावा।।
सत जोजन तेहिं आनन कीन्हा। अति लघु रूप पवनसुत लीन्हा।।

जैसे–जैसे सुरसा अपने मुख का आकार बढ़ाती जाती, वैसे–वैसे हनुमान जी भी अपना आकार उससे दुगना कर लेते। जब उसका मुख सौ योजन (चार सौ कोस) हो गया, तब हनुमान जी ने अपना रूप छोटा कर लिया, सूक्ष्मरूपधारी हो गए।

बदन पइठि पुनि बाहेर आवा। मांगा बिदा ताहि सिरू नावा।।
मोहि सुरन्ह जेहि लागि पठावा। बुधि बल मरमु तोर मैं पावा।।

और वे उसके मुख में जाकर तुरन्त ही बाहर निकल आए, फिर सिर झुकाकर उससे आगे का मार्ग बताने का निवेदन करने लगे। तब सुरसा ने कहा–हे पवनपुत्र हनुमान! तुम्हारे बल बुद्धि को जान चुकी हुँ, तुम अतुलित बल–बुद्धिमान हो, इसी कार्य के लिए देवों ने मुझे भेजा है।

दोहा

राम काजु सबु करिहहु तुम्ह बल बुद्धिनिधान।
आसिश देइ गई सो हरिश चलेउ हनुमान।।2।।

तुम अवश्य ही प्रभु श्रीरामजी के कार्य सिद्ध करोगे, क्योंकि तुम बल बुद्धि के भंडार हो। यह आशीर्वाद देकर सुरसा चली गई और तब हनुमान जी ने भी हंसते हुए लंका की ओर प्रस्थान किया।

चौपाई

निसिचर एक सिंधु महुँ रहई। करि मया नभु के खग गहई।।
जीव जंतु जे गगन उड़ाहीं। जल बिलोकि तिन्ह कै परिछाहीं।।

समुद्र में एक राक्षसी रहती थी। वह अपनी मायावी शक्ति से समुद्र के ऊपर से होकर आकाश में उड़ने वाले पक्षियों को पकड़ लेती थी।

गहइ छाहं सक सो न उड़ाई। एहि बिधि सदा गगनचर खाई।।
सोइ छल हनूमान सहँ कीन्हा। तासु कपटु कपि तुरतहिं चीन्हा।।

उस परछाई को वह इस प्रकार पकड़ लेती थी कि वह जीव उड़कर आगे नहीं जा पाते थे एवं सीधे पानी में गिर पड़ते थे। इस प्रकार सदा आकाशचारी जीवों का भक्षण किया करती थी। हनुमान जी को आकाश मार्ग से जाते देख उसने वैसा ही किया परन्तु हनुमान जी ने तुरन्त ही उसके कपट को पहचान लिया।

ताहि मारि मारूतसुत बीरा। बारिधि पार गयउ मतिधीरा।।
तहाँ जाइ देखी बन सोभा। गुंजत चंचरीक मधु लोभा।।

पवनपुत्र वीर हनुमान ने अपनी शक्ति से उसका संहार कर दिया और समुद्र के उस पार जा पहुंचे। वहां पहुंचकर उन्होने उपवन की शोभा देखी जहां फुलों के लोभी भंवरे गुंजन कर रहे थे।

नाना तरू फल फूल सुहाए। खग मष्ग बष्ंद देखि मन भाए।।
सैल बिसाल देखि एक आगे। ता पर धाइ चढ़ेउ भय त्यागे।।

वन में भिन्न–भिन्न प्रकार के वष्क्ष शोभित थे। पशु–पक्षियों के झुण्ड देखकर वे अत्यन्त प्रसन्नचित्त हुए। आगे बढ़ते हुए वहां एक पर्वत दिखाई दिया, जिसे देखकर हनुमान जी दौड़कर उस पर जा चढ़े।

उमा न कछु कपि कै अधिकाई। प्रभु प्रताप जो कालहि खाई।।
गिरि पर चढ़ि लंका तेहिं देखी। कहि न जाइ अति दुर्ग बिसेषी।।

भगवान शंकर माता पार्वती से कहते हैं कि हे उमा! इस प्रकार के पराक्रम में वीर हनुमान का कोई बड़प्पन नहीं है। यह तो प्रभु का प्रताप है जो काल का भी काल है। उस पर्वत पर चढ़कर हनुमानजी ने लंका की तरफ देखा–वहां रावण का इतना बड़ा दुर्ग था कि जिसका वर्णन कठिन है।

अति उतंग जलनिधि चहुं पासा। कनक कोट कर परम प्रकाशा।।

वह दुर्ग बहुत ऊंचा था। सुरक्षा की दष्ष्टि से देखें तो चारों ओर समुद्र था और सोने की चारदीवारी से चहुंओर से सुरक्षित था। वहां तेज प्रकाश विद्यमान था।

कनक कोट बिचित्र मनि कृत सुंदरायतना घना।
चउहट्ट हट्ट सुबट्ट बीथीं चारू पुर बहु बिधि बना।।
गज बाजि खच्चर निकर पदचर रथ बरूथन्हि को गनै।
बहुरूप निसिचर जूथ अतिबल सेन बरनत नहिं बनै।।1।।

सुन्दर रंग–बिरंगी मणियों से जड़ा हुआ सोने का परकोटा दिख रहा था। अन्दर की ओर सुन्दर घर बने हुए थे। विशाल व बड़े–बड़े चौराहे, बाजार, सुन्दर मार्ग व गलियां थीं। हर प्रकार से लंका नामक वह नगर सजा–धजा था। हाथी, घोड़े, खच्चर व पैदल सैनिक और रथों के समूह को भला कौन गिन सकता था। अनेक राक्षस दल (सैन्य बल) थे जिनकी गणना सहज सम्भव न थी।

बन बाग उपवन बाटिका सर कूप बापीं सोहहीं।
नर नाग सुर गंधर्ब कन्या रूप मुनि मन मोहहीं।।

कहुँ माल देह बिसाल सैल समान अतिबल गर्जहीं।
नाना अखारेन्ह भिरहिं बहुबिधि एक एकन्ह तर्जहीं।।2।।

वक्षों के समूह, बाग–बगीचे, उपवन फुलवाड़ी, तालाब और बावड़ियां सुशोभित थीं जो बड़ी सुन्दर दिख रही थी। मनुष्य नागों, देवों और गन्धर्वों की ऐसी सुन्दर कन्यांए यहां रहती थीं जो अपने असीम रूप–सौंदर्य से बड़े–बड़े तपस्वी व ऋषि–मुनियों के ह्रदय को खुश कर दें। कहीं–कहीं जगह पर पहाड़ ऐसे लग रहे थे मानो बलशाली राक्षस गरज रहे हों।

करि जतन भट कोटिन्ह बिकट तन नगर चहुँ दिसि रच्छहीं।।
कहुँ महिश मानुश, धेनु खर अज खल निसाचर भच्छहीं।।
एहि लागि तुलसीदास इन्ह की कथा कछु एक है कही।
रघुबीर सर तीरथ सरीरन्हि त्यागि गति पैहहिं सही।।3।।

अत्यंत बलशाली, विशाल शरीर वाले हजारों राक्षस सब ओर (चारों दिशा) से नगर की सुरक्षा कर रहे हैं। कुछ दुष्ट राक्षस पशुओं का भक्षण कर रहे हैं।

पुर रखवारे देखि बहु कपि मन कीन्ह बिचार।
अति लघु रूप धरौं निसि नगर करौं पइसार ।।3।।

लंका नगरी की इतनी सुरक्षा देख पवनपुत्र हनुमानजी ने सोचा कि इस रूप में नगर में प्रवेश करना उचित न होगा। अत्यन्त सूक्ष्म रूप धरकर रात्रि के समय लंका में प्रवेश करना उचित होगा।

चौपाई

मसक समान रूप कपि धरी। लंकहि चलेउ सुमिरि नरहरी।।
नाम लंकिनी एक निसिचरी। सो कह चलेसि मोहि निंदरी।।

हनुमान जी ने अत्यन्त सूक्ष्म नर रूप धारण कर लिया और अपने प्रभु श्रीरामजी का स्मरण कर लंका में प्रवेश किया। लंका के द्वार पर पहुंचकर हनुमानजी ने लंकिनी नामक एक राक्षसी को पहरे पर पाया। उसने इतने सूक्ष्म रूप में भी हनुमान जी को देख लिया और बोली कि तू कैसे और कहां जा रहा है।

जानेहि नहीं मरमु सठ मोरा। मोर अहार जहाँ लगि चोरा।।
मुठिका एक महा कपि हनी। रूधिर बमत धरनी ढनमनी।।

अरे मुर्ख! तू मेरा भेद नहीं जानता। चोरी–छिपे यहां प्रवेश करने वाले सभी मेरे भोजन हैं। पवनपुत्र हनुमान जी ने उसे एक जोरदार घूंसा मार दिया। इस प्रहार से उसके खून निकलने लगा और वह धरती पर गिर गई।

पुनि संभारि उठी सो लंका। जोरि पानि कर विनय ससंका।।
जब रावनहि ब्रह्म बर दीन्हा। चलत बिरंचि कहा मोहि चीन्हा।।

वह लंकिनी बड़ी कठिनाई से अपने आपको संभाल कर उठी और भय से कांपती हाथ जोड़कर विनती करने लगी कि जब ब्रह्माजी ने रावण की साधना से प्रसन्न होकर वर दिया था तब उन्होने मुझे राक्षसों के विनाश की यही पहचान बता दी थी।

चौपाई

तरू पल्लव महुँ रहा लुकाई। करइ बिचार करौं का भाई।।
तेहि अवसर रावनु तहँ आवा। संग नारि बहु किएँ बनावा।।

जब हनुमान जी वक्षों के कोमल पत्तों के बीच में छिपे रहते है और सोचते है कि अब मैं इस समय माता सीता का दुख कैसे दूर करूं। मैं भगवान श्रीराम का संदेश इन तक कैसे पहूंचाऊं। इसी बीच बहुत सी सेविकाओं के साथ रावण वहां पहुँचता है।

बहु बिधि खल सीतहि समुझावा। साम दान भय भेद देखावा।।
कह रावनु सुनु सुमुखि सयानी। मंदोदरी आदि सब रानी।।

रावण सीताजी को अपनी रानी बनाने के लिए स्वयं एवं अपनी सेविकाओं द्वारा सीताजी को समझाता है कि आप अपना शरीर मुझे समर्पण कर दें। वह साम, दाम, भय, भेद आदि सभी नीतियां इस्तेमाल करके देख लेता है लेकिन माता सीता उसके पक्ष में जवाब नहीं देती है। रावण उन्हें यहां तक लालच देता है कि हे समुखि! मन्दोदरी आदि सभी रानियों को–

तव अनुचरीं करउँ पन मोरा। एक बार बिलोकु मम ओरा।।
तृन धरि ओट कहति बैदेही। सुमिरि अवधपति परम सनेही।।

मैं तुम्हारी दासी बना दूंगा। वे सभी तुम्हारी सेविकाएं के रूप में कार्य करेगी। मैं इसका वचन देता हूँ। तुम एक बार मेरी तरफ देखकर तो देखे। तब अपने परम स्नेही श्रीराम जी का ध्यान करके तिनके की ओट लेकर सीता माता ने कहा–

सुनु दसमुख खद्योत प्रकासा। कबहुँ कि नलिनी करइ बिकासा।।
अस मन समुझु कहति जानकी। खल सुधि नहिं रघुबीर बान की।।

हे दशानन! सुन, जुगनू के प्रकाश से कभी कमलिनी नहीं खिल सकती। (कमलिनी के लिए तो चांद के प्रकाश की ही आवश्यकता होती है) ऐसा ही तू अपने विषय में जान। अरे दुष्ट! तुझे श्रीराम जी के कालजयी बाणों से भी डर नहीं लग रहा है?

सठ सूनें हरि आनेहि मोहि। अधम निलज्ज लाज नहिं तोही।।

माता सीता रावण को कहती है कि हे दुष्ट जब तूने मेरा हरण किया था, तब मैं अकेली ही थी। तूने तो चोरों की भांति मेरा अपहरण किया था। (यदि उस समय श्रीराम या लक्ष्मण वहां होते तो तू क्या तेरी छाया भी मुझे छू नहीं सकती थी) अरे पापी! तुझे बिल्कुल भी लज्जा नहीं आती?

दोहा

आपुहि सुनि खद्योत सम रामहि भानु समान।
परूष बचन सुनि काढ़ि असि बोला अति खिसिआन।।9।।

अपने प्रताप (तेज) को जुगनू के समान व श्रीराम जी का प्रताप सूर्य के समान सुनकर तथा सीता जी के कठोर वचनों को सुनकर रावण अत्यधिक

क्रोधित होकर क्रोध में तलवार खींच लेता है और बोलता है–

चौपाई

सीता तैं मम कृत अपमाना। कटिहउँ तव सिर कठिन कृपाना।।
नाहिं त सपदि मानु मम बानी। सुमुखि होति न त जीवन हानी।।

हे सीता! तूने मेरा अपमान किया है, इसलिए मैं इस तेजधार वाली तलवार से तेरा शीश काट डालूंगा अन्यथा तत्काल मेरी बात (पटरानी बनने का प्रस्ताव) स्वीकार कर लें। हे समुखि! अभी भी समय है, वरना तुझे अपने जीवन से ही हाथ धोना पड़ सकता है।

स्याम सरोज दाम सम सुंदर। प्रभु भुज करि कर सम दसकंधर।।
सो भुज कंठ कि तव असि घोरा। सुनु सठ अस प्रवान पन मोरा।।

माता सीता जी ने कहा– हे दशग्रीव! मेरे गले में या तो प्रभु श्रीराम की कमल फूलों के हार–सी सुन्दर और हाथी की सूंड जैसी विशाल भुजा पड़ेगी या तेरी तलवार। अरे शठबुद्धि! यही मेरी प्रतिज्ञा (उत्तर) है।

चंद्रहास हरू मम परितापं। रघुपति बिरह अनल संजातं।।
सीतल निसित बहसि बर धारा। कह सीता हरू मम दुख भारा।।

सीता जी कहती है कि हे चन्द्रहास! (तलवार) तू ही मेरी पीड़ा को, जो श्री रघुनाथ जी के विरह की आग से उत्पन्न है, हर ले अर्थात् मिटा दे। हे तलवार! तेरी धार शीतल और तेज है, अतः मेरे इस दुःख दर्द को तू शीघ्र ही मुझे मौत देकर हरण कर ले। तलवार की शीतलता विरह की आग को शांत कर देगी और तेज धार बिना पीड़ा पहुंचाएं मृत्यु प्रदान कर देगी।

सुनत बचन पुनि मारन धावा। मयतनयाँ कहि नीति बुझावा।।
कहेसि सकल निसिचरिन्ह बोलाई। सीतहि बहु बिधि त्रासहु जाई।।

सीता जी के ऐसे वचन सुनते ही वह दुष्ट रावण उनको मारने के लिए दौड़ता है। तब मय नामक दानव की पुत्री और उसकी पटरानी ने उसे समझाया कि यह नीति के विरूद्ध है। क्या महाबली रावण एक नारी पर प्रहार करेगा? यह सुनकर रावण रूक जाता है और बड़ी ही भयानक राक्षसियों को बुलाकर उन्हें (सीता जी को) डराने–धमकाने का आदेश देता है।

मास दिवस महुँ कहा न माना। तौ मैं मारबि काढ़ि कृपाना।।

और जाते–जाते यह चेतावनी भी देकर जाता है कि यदि इसने एक माह तक मेरा प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया तो मैं इसे तलवार से मार डालूंगा।

दोहा

भवन गयउ दसकंधर इहाँ पिसाचिनि बष्द
सीतहि त्रास देखावहिं धरहिं रूप बहु मंद।।10।।

ऐसा कहकर रावण अपने महल की ओर चला जाता है और राक्षसियों के समूह भांति–भांति के रूप बनाकर सीता जी को भयभीत करने की चेष्टाएं करने लगती है।

चौपाई

त्रिजटा नाम राच्छसी एका। राम चरन रति निपुन बिबेका।।
सबन्हौ बोलि सुनाएसि सपना। सीतहि सेइ करहु हित अपना।।

उन राक्षसियों में त्रिजटा नामक एक राक्षसी भी थी जिसकी श्रीराम के चरणों में बड़ी आस्था थी। वह बहुत ही विवेकशील, चतुर और सूझ–बूझ वाली थी। उसने सभी राक्षसियों को बुलाकर स्वयं देखा भयानक स्वप्न सुनाया। वह बोली– अरी राक्षसियों! सीता जी की सेवा करके अपने पाप धो लो। अपना कल्याण हो जायेगा।

सपनें बानर लंका जारी। जातुधान सेना सब मारी।।
खर आरूढ़ नगन दससीसा। मुंडित सिर खंडित भुज बीसा।।

स्वप्न में मैंने देखा कि एक वानर ने आकर सारी लंगा को जला डाला हैं और राक्षसों की सारी सेना मार डाली है और रावण सिर मुड़ाए वस्त्रहीन होकर मुख काला किए गधे पर बैठा है।

एहि बिधि सो दच्छिन दिसि जाई। लंका मनहुँ विभीषन पाई।।
नगर फिरी रघुबीर दोहाई। तब प्रभु सीता बोलि पठाई।।

इस वेश में यह दक्षिण दिशा (यमलोक) की ओर जा रहा है और लंका का राज्य विभीषण को मिल गया है। तब सारी लंका में श्रीरामचन्द्र जी की जय–जयकर हो रही है और प्रभु श्रीराम जी ने सीता जी को अशोक वाटिका से बुलवा लिया है।

यह सपना मैं कहउँ पुकारी। होइहि सत्य गएँ दिन चारी।।
तासु बचन सुनि ते सब डरीं। जनकसुता के चरनन्हि परीं।।

मुझे पूरा विश्वास है कि चार दिन (कुछ समय) बाद ही मेरा यह स्वप्न सत्य होकर रहेगा। उसका स्वप्न और सुझाव (सीता जी की सेवा का भाव) सुनकर सभी राक्षसियां डर गई और जानकी जी (सीता माता) के चरणों में गिरकर बार–बार प्रणाम करने लगती है।

दोहा

जहँ तहँ गई सकल तब सीता कर मन सोच।
मास दिवस बीतें मोहि मारिहि निसिचर पोच।।11।।

इसके बाद सभी राक्षसियां वहां से उठकर अपने–अपने स्थान पर चली जाती है और माता सीता अपनी व्यथा में डूब जाती है कि एक माह बाद दुष्ट रावण मेरा संहार कर देगा। मैं क्या करूं?

चौपाई

त्रिजटा सन बोलीं कर जोरी। मातु बिपति संगिनि तैं मोरी।।
तजौं देह करू बेगि उपाई। दुसह बिरहु अब नहिं सहि जाई।।

तब सीताजी हाथ जोड़कर त्रिजटा राक्षसी से प्रार्थना करती है कि हे माता! तू इस विपत्ति से छूटकारा दिलाने के लिए मुझे ऐसा कोई उपाय बताये। तू ही कोई उपाय बना सकती है जिससे मैं इस शरीर को त्याग दूं। अब तो विरह की पीड़ा असह्य हो गई है। यह सब अब सहा नहीं जाता।

आनि काठ रचु चिता बनाई। मातु अनल पुनि देहि लगाई।।
सत्य करहि मम प्रीति सुनै को श्रवन सूल सम बानी।।

हे मां! तू ही अब कहीं से लकड़ियां लाकर एक चिता बना दे और उसमें आग लगा दे। हे सुबुद्धि! राम जी के प्रति मेरी प्रीति की सत्यता की रक्षा इसी प्रकार हो सकती है। शूल से चुभते रावण के वचनों को कानों से सुनने की अब मुझमें सामर्थ्य नहीं रही अर्थात् रावण के लज्जाहीन वचनों को सुनने से तो प्राणों को त्याग देना ही अच्छा है। अर्थात् मैं मेरी भगवान श्रीराम के बारे में कुछ भी कुवचन सुनना नहीं चाहती हूँ।

सुनत बचन पद गहि समुझाएसि। प्रभु प्रताप बल सुजसु सुनाएसि।।
निसि न अनल मिल सुनु सुकुमारी। अस कहि सो निज भवन सिधारी।।

सीता जी ने ऐसे वचन सुनकर त्रिजटा ने उनके चरण पकड़ लिए और श्रीराम जी के यश, बल, प्रताप की महिमा सुनाते हुए बोली – हे सुकुमारी सुनो! ऐसा करना उचित नहीं है। रात्रि के समय यहां आग नहीं मिलती। ऐसा कहकर वह अपने घर को चली जाती है।

कह सीता बिधि भा प्रतिकूला। मिलिहि न पावक मिटिहि न सूला।।
देखिअत प्रकट गगन अंगारा। अवनि न आवत एकउ तारा।।

सीता जी मन–ही–मन में सोचने लगीं कि अब क्या किया जाये? विधाता ही विपरीत हो गया है। न आग मिलेगी और न ही विरह की यह पीड़ा कब समाप्त होगी। फिर उन्होंने आकाश की ओर देखा और बोलीं– आकाश से कोई अंगारा (तारा) ही गिर जाए जिसकी आग से इस शरीर को जलाकर मैं इस पीड़ा से छुटकारा पा लूं।

पावकमय ससि स्रवत न आगी। मानहुँ मोहि जानि हत भागी।।
सुनहि बिनय मम बिटप असोका। सत्य नाम करू हरू मम सोका।।

यह चन्द्रमा भी तो एक अग्नि का ही पिण्ड हैं, किन्तु यह भी मुझे हतभागिनी जानकर आग नहीं बरसा रहा है। अरे अशोक वक्ष! तू ही मेरी सार्थकता सिद्ध कर।

नूतन किसलय अनल समाना। देहि अगिनि जनि करहि निदाना।।
देखि परम बिरहाकुल सीता। सो छन कपिहि कलप सम बीता।।

माता सीता अशोक को कहते हुए कहती है कि तेरे नए–नए कोमल पते अग्नि के समान हैं, तू उनसे आग लगा दें और विरह रूपी मेरे दुःख को अधिक न बढ़ा। सीता जी को श्री राम के विरह में व्याकुल देखकर हनुमान जी को एक–एक पल एक–एक कल्प के समान व्यतीत होता महसूस हुआ। कल्प (सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर व कलियुग के हजार–हजार बार बीतने पर एक कल्प

होता है) हनुमान जी को भी एक क्षण के लिए एक कल्प के समान लग रहा था। क्योंकि कष्ट का समय बड़ी मुश्किल से कटती है।

सोरठा

कपि करि हृदयँ विचार दीन्हि मुद्रिका डारि तब।
जनु असोक अंगार दीन्ह हरषि उठि कर गहेउ।।12।।

तब हनुमान जी ने हृदय में विचार कर माता सीता जी के सामने भगवान श्रीराम द्वारा दी गई अंगूठी डाल दी। सीता जी को लगा मानो उनकी प्रार्थना सुनकर अशोक वक्ष नें अंगारा बरसा दिया हो। तब सीताजी ने हर्षित होकर उस अंगूठी को अंगारा समझ कर उठा लिया।

चौपाई

तब देखी मुद्रिका मनोहर। राम नाम अंकित अति सुंदर।।
चकित चितव मुदरी पहिचानी। हरष बिशाद हृदय अकुलानी।।

तब उन्होंने राम नाम अंकित वह मुद्रिका उठा ली और उसे देखते ही उन्होंने पहचान लिया कि यह तो भगवान श्रीराम की मुद्रिका है। सीता जी आश्चर्य से उसे बार–बार देखने लगी। श्रीराम की मुद्रिका पाने की खुशी और विरह की पीड़ा से सीता जी और अधिक बैचेन हो उठी।

जीति को सकइ अजय रघुराई। माया ते असि रचि नहिं जाई।।
सीता मन बिचार कर नाना। मधुर बचन बोलेउ हनुमाना।।

वे सोचने लगी कि श्री राम तो सर्वथा अजेय है। उन्हें जीतकर कोई यह अंगूठी प्राप्त नहीं कर सकता है और किसी माया (छल) से ऐसी दिव्य अंगूठी बनाई नहीं जा सकती। सीता जी भ्रम में पड़कर अनेक तरीकों से विचार कर रही थीं कि तभी हनुमान जी बड़ी ही मधुर वाणी में–

रामचन्द्र गुन बरनैं लागा। सुनतहिं सीता कर दुख भागा।।
लागीं सुनैं श्रवन मन लाई। आदिहु तें सब कथा सुनाई।।

वे श्रीराम चन्द्र जी के गुणों का बखान करने लगे, जिसे सुनते ही सीताजी का दुःख दूर हो गया और कान लगाकर वह उनका गुणगान सुनने लगी। हनुमान जी ने प्रारम्भ से अन्त तक माता सीता को सारी कथा सुना डाली।

श्रवनामष्त जेहिं कथा सुहाई। कही सो प्रगट होति किन भाई।।
तब हनुमंत निकट चलि गयऊ। फिरि बैठीं मन बिसमय भयऊ।

सुनकर सीता जी बोली– जिसने यह अमष्त समान सुख देने वाले मधुर वचन बोले, वह सामने क्यों नहीं आता। हे भाई! तुम प्रकट क्यों नहीं होते। तब हनुमान जी माता सीता के समक्ष प्रकट हो जाते है और उन्हें देखकर माता सीता मुंह फेर लेती है और वे एक वानर रूपी मनुष्य के रूप में हनुमान जी को देखकर बहुत आश्चर्य करती है।

राम दूत मैं मातु जानकी। सत्य सपथ करूनानिधान की।।
यह मुद्रिका मातु मैं आनी। दीन्हि राम तुम्ह कहँ सहिदानी।।

हनुमान जी ने कहा– "हे जनकनन्दिनी! मैं भगवान श्री रामजी का दूत हूँ। मैं करूणानिधान श्रीराम जी की सच्ची शपथ लेता हूँ। हे माते! राम नाम से सजी यह पावन अंगूठी मैं ही लाया हूँ। यह निशानी भगवान श्रीराम जी ने स्वयं अपने हाथों से आपके लिए मुझे दी है।

नर बानरहि संग कहु कैसे। कही कथा भइ संगति जैसे।।

तब सीताजी ने पूछा– किन्तु श्रीराम जी की वानर जाति रूपी मानवों से संगति कैसे हुई? तब हनुमान जी ने अपने और श्रीराम जी के मिल की सारी कथा उन्हें कह सुनाई।

दोहा

कपि के बचन सप्रेम सुनि उपजा मन बिस्वास।
जाना मन क्रम बचन यह कृपासिधुं कर दास।।13।।

हनुमान जी के श्रद्धा व प्रेमयुक्त वचन सुनकर सीता माता के मन में विश्वास उत्पन्न हो गया और उन्होंने जान लिया कि यह मन–कर्म और वचन श्रीराम जी का दास है।

चौपाई

हरिजन जानि प्रीति अति गाढ़ी। सजल नयन पुलकावलि बाढ़ी।।
बूड़त बिरह जलधि हनुमाना। भयहु तात मो कहुँ जलजाना।।

हनुमान जी को श्री रघुराई का सेवक (भक्त) जानकर उनके मन में उनके लिए अपार श्रद्धा उमड़ आई। प्रेम की अधिकता के कारण उनकी आंखों में आंसू उमड़ आए और देह में रोमांच भर आया। तब सीताजी ने कहा– "हे तात हनुमान! तुम तो विरह सागर में लीन होती सीता के लिए सांत्वना रूपी जहाज बनकर आए हो।

अब कहु कुसल जाउँ बलिहारी। अनुज सहित सुख भवन खरारी।।
कोमलचित कृपाल रघुराई। कपि केहि हेतु धरी निठुराई।।

मैं बलिहारी हूँ। अब छोटे भाई लखन सहित खर के शत्रु सुखधाम श्रीराम जी का कुशल–मंगल कहो। श्रीराम जी तो कोमल ह्रदय व कृपालु हैं, फिर मेरे लिए हे हनुमान! वे इतने कठोर कैसे हो गए? किस कारण उन्होंने ऐसी निष्ठुरता धारण की कि अब तक मेरी सुध नहीं ली?

सहज बानि सेवक सुख दायक। कबहुँक सुरति करत रघुनायक।।
कबहुँ नयन मम सीतल ताता। होइहहिं निरखि स्याम मृदु गाता।।

माता सीता श्रीराम जी के बारे में कह रही है कि वैसे तो वह स्वभाव से ही अपने भक्तों के क्लेश दूर कर सुख देने वाले हैं, किन्तु श्री रघुनाथ जी कभी मुझे भी याद करते हैं। हे तात! क्या मुझे कभी उनकी सलोनी सूरत देखने का

सौभाग्य प्राप्त होगा? क्या उन्हें देखकर मेरे नेत्र शीतल होंगे?

बचनु न आव नयन भरे बारी। अहह नाथ हौं निपट बिसारी।।
देखि परम बिरहाकुल सीता। बोला कपि मृदु बचन बिनीता।।

हर्षातिरेक के कारण सीताजी की आवाज नहीं निकल रही थी और आंखें भी सजल थी। वियोग पीड़ा से तड़पकर वह बोली– हे स्वामी! आपने मुझे बिल्कुल ही भुला दिया। सीता जी को इस प्रकार विरह से व्याकुल देखकर हनुमान जी बहुत ही व्याकुल होकर उन्हें धीरज बंधाते हुए कोमल व विनीत स्वर में बोले–

मातु कुसल प्रभु अनुज समेता। तव दुख दुखी सुकृपा निकेता।।
जनि जननी मानहु जियँ ऊना। तुम्ह ते प्रेमु राम कें दूना।।

हे माता! प्रभु श्रीराम अपने अनुज लक्ष्मण सहित बिल्कुल कुशल हैं पर उनका मन आपके कारण बहुत दुखी है। हे माता! आप मन छोटा न करें।

दोहा

रघुपति कर संदेसु अब सुनु जननी धरि धीर।
उस कहि कपि गदगद भयउ भरे बिलोचन नीर।।14।।

हे माता! अब धैर्य से श्री रघुराई जी का संदेश सुनिए। ऐसा कहकर हनुमान पावन नाम से अभिभूत हो गए और उनकी आंखों में आंसू उमड़ आए।

चौपाई

कहेउ राम बियोग तव सीता। मो कहुँ सकल भए बिपरीता।।
नव तरू किसलय मनहुँ कृसानू। काल निसा सम निसि ससि भानू।।

हनुमान जी बोले– श्री रामचन्द्र जी ने कहा कि हे सीते! आपके वियोग में मेरे लिए प्रकृति के सभी पदार्थ प्रतिकूल हो गए हैं– जैसे वृक्षों में लगने वाले नए–नए पत्ते अग्नि के समान, रात्रि कालरात्रि के समान, चन्द्रमा सूर्य के समान–

कुबलय बिपिन कुंत बन सरिसा। बारिद तपत तेल जनु बरिसा।।
जे हित रहे करत तेइ पीरा। उरग स्वास सम त्रिबिध समीरा।।

और कमलों के वन भालों के समान हो गए हैं। आकाश से मेघ (बादल) शीतल जल के बजाय मानो खौलता हुआ तेल बरसा रहे हैं। आपके वियोग से पूर्व जो प्रकृति (चन्द्र, कमल, वर्शा आदि) हितकारी, सुख पहुंचाने वाले थे, वे सब शत्रु, पीड़ा देने वाले हो गए हैं। वन की शीतल वायु मानो सर्प के सांस की जैसी जहरीली और गर्म हो गई है।

कहेहू तें कछु दुख घटि होई। काहि कहौं यह जान न कोई।।
तत्त्व प्रेम कर मम अरू तोरा। जानत प्रिया एकु मनु मोरा।।

मन का दुख किसी के सामने कह देने से कुछ कम हो जाता है, मगर मैं अपने मन की पीड़ा किससे कहूं? मैं तो किसी से कह भी नहीं सकता। यह दु:ख कोई नहीं जानता। हे प्रिये! तेरे और मेरे प्रेम का तत्त्व (रहस्य) सिर्फ मेरा

ऐसा उत्तम आशीर्वाद पाने के बाद हनुमान जी सीता जी की उदारता के प्रति आभार प्रदर्शित करने के लिए उनके चरणों में सिर झुकाकर हाथ जोड़कर बोले– हे माता! मेरा जीवन धन्य हो गया क्योंकि आपका आशीर्वाद तो अचूक है– यह सारा संसार जानता है।

सुनहु मातु मोहि अतिसय भूखा। लागि देखि सुंदर फल रूखा।।
सुनु सुत करहिं बिपिन रखवारी। परम सुभट रजनीचर भारी।।

हे माता! सुनो सुन्दर–सुन्दर फल वाले वृक्षों को यहां देखकर मेरे मन में बड़ी भूख जाग गई है। (सीता बोली) बेटा सुनो यहां तो बड़े–बड़े भयंकर योद्धा राक्षस (मेरे यहां होने से) नियुक्त है।

तिनह कर भय माता मोहि नाहीं। जौं तुम्ह सुख मानहु मन माहिं।।

हनुमान बोले– माता जी! अगर आप मुझे खुशी से आज्ञा दें, तो मुझे उनका भय बिल्कुल नहीं होगा।

दोहा

देखि बुद्धि बल निपुन कपि कहेउ जानकी जाहु।
रघुपति चरण हृदयँ धरि तात मधुर फल खाहु।।17।।

हनुमान की शीघ्र सही निर्णय लेने की क्षमतावाली बुद्धि और इन सबको दमन करने वाली शक्ति दोनों को पर्याप्त समझकर जानकी जी ने कहा– पुत्र जाओ और भगवान श्रीराम जी का हृदय में ध्यान रखकर मीठे फल खाओ।

चौपाई

चलेउ नाइ सिरू पैठेउ बागा। फल खाएसि तरू तोरैं लागा।।
रहे तहाँ बहु भट रखवारे। कछु मारेसि कछु जाइ पुकारे।।

सीता माता को नमन करने के पश्चात् पवनपुत्र, आकर्षक "अशोक वाटिका", जो सुन्दर फलों व फूलों से आच्छादित थी के भीतर चलते गए। मार्ग में आए पेड़ों की टहनियां तोड़ने के साथ ही वे फलों का सेवन भी करते जा रहे थे। मार्ग में मिलने वाले विशाल–काय राक्षसों का संहार भी करने लगे, तब भयाक्रांत असुरों ने रावण को दरबार में जाकर समाचार दिया।

नाथ एक आवा कपि भारी। तेहिं असोक बाटिका उजारी।।
खाएसि फल अरू बिटप उपारे। रच्छक मर्दि मर्दि महि डारे।।

हे लंकाधिपति! आपके मनभावन "अशोक वाटिका" में कहीं से एक उद्दंड वानर घुस आया है। उस विशाल वानर ने पूरी वाटिका तहस–नहस कर डाली है, पेड़ों को उखाड़ फैंका है व फलों का रसास्वादन करते हुए रखवाली में खड़े पहरेदारों को भूमि पर पटक दिया हैं।

सुनि रावन पठए भट नाना। तिन्हहि देखि गर्जेउ हनुमाना।।
सब रचनीचर कपि संघारे। गए पुकारत कछु अधमारे।।

यह समाचार सुनते ही रावण ने अपने वीर राक्षस योद्धाओं को उस वानर का वध करने भेजा, जिन्हें लड़ने आया देख वीर हनुमान ने अधिकांश को मार गिराया, शेष जो भाग्यवश अधमरी अवस्था में बचे वे अपने प्राणों की रक्षार्थ रावण की शरण में आ गये।

पुनि पठयउ तेहि अच्छकुमारा। चला संग लै सुभट अपारा।।
आवत देखि बिटप गहि तर्जा। ताहि निपाति महाधुनि गर्जा।।

विकट स्थिति को भांपते हुए रावण ने इस बार स्वपुत्र अक्षय कुमार को लड़ने हेतु भेजा। परन्तु महाबलि हनुमान ने उन्हें देखते ही एक विशाल वक्ष उखाड़ा व दे मारा, जिससे वे वहीं प्राणत्याग कर गये। अपनी इस विजय पर हनुमान ने भीषण गर्जना की।

दोहा

कछु मारेसि कछु मर्देसि कछु मिलएसि धरि धूरि।
कछु पुनि जाइ पुकारे प्रभु मर्कट बल भूरि।।18।।

शेष बचे राक्षसों वीरों का भी हनुमान ने हाथों से मसलकर, भूमि पर पटक कर, व अन्य उपायों से वध कर डाला, तब घबराये राक्षस पुनः लंकाधिपति की शरण में गये व अनुरोध किया कि वह वानर अतिशक्तिशाली है उसने आपके पुत्र "अक्षय कुमार" को भी मार डाला।

चौपाई

सुनि सुत बध लंकेस रिसाना। पठएसि मेघनाद बलवाना।।
मारसि जनि सुत बाँधेसु ताही। देखिअ कपिहि कहाँ कर आही।।

यह समाचार सुन लंकेश क्रोध से तिलमिला उठे, और अपने ज्येष्ठ पुत्र मेघनाद को आदेश दिया की उस वानर को जीवित अवस्था में ही प्रस्तुत करे ताकि ज्ञात हो वह कौन है और किस लक्ष्य को लेकर यहां आया है।

चला इंद्रजित अतुलित जोधा। बंधु निधन सुनि उपजा क्रोधा।।
कपि देखा दारून भट आवा। कटकटाइ गर्जा अरू धावा।।

इंद्रजीत, जिसने सुर सम्राट इंद्र को भी जीत रखा था। अपने अनुज के वध ा का सुन, क्रोधावस्था में उस वानर का संहार करने चला। हनुमान ने इंद्रजीत को आता देख अपने वानर स्वभावानुसार दांत किट किटाते हुए व गर्जन करते हुए इंद्रजीत पर टूट पड़े।

अति बिसाल तरू एक उपारा। बिरथ कीन्ह लंकेस कुमारा।।
रहे महाभट ताके संगा। गहि गहि कपि मर्दइ निज अंगा।।

इस बार उन्होंने अति विशाल वक्ष उखाड़ा व इंद्रजीत के रथ पर दे मारा, जिससे रथ टूट गया व मेघनाद रथ–विहीन हो गया। हनुमान ने संग आई असुर सेना के वीरों को पकड़–पकड़ अपने ही अंगों से दबोच कर मार गिराया।

तिन्हहि निपाति ताहि सन बाजा। भिरे जुगल मानहुँ गजराजा।।
मुठिका मारि चढ़ा तरू जाई। ताहि एक छन मुरूछा आई।।

मेघनाद के साथी राक्षसों के वध पश्चात् वीर हनुमान सीधे मेघनाद पर ही टूट पडे। दोनों में भीषण युद्ध प्रारम्भ हो गया ऐसा प्रतीत होता था, मानों विशाल हाथी युद्ध कर रहे हों। हनुमान ने मेघनाद पर बलिष्ठ भुजा से मुष्ठा प्रहार किया, जिससे मेघनाद पल भर के लिये अन्तेतावस्था में आ गया। तभी हनुमान एक वक्ष पर जा बैठे।

उठि बहोरि कीन्हिसि बहु माया। जीति न जाइ प्रभंजन जाया।।

चेतनावस्था में आते ही मेघनाद छद्म युद्ध के लिये तरह–तरह के मायाजाल बिछाने लगे, परन्तु अंजनिपुत्र उनके वश में नहीं आ रहे थे।

दोहा

ब्रह्म अस्त्र तेहि साँधा कपि मन कीन्ह बिचार।
जौं न ब्रह्मसर मानउँ महिमा मिटइ अपार।।19।।

अंतिम रूप से परास्त इंद्रजीत ने ब्रह्म जी के प्रति असीम आस्था रखने वाले हनुमान जी ने ब्रह्मास्त्र सहर्ष स्वीकार किया, क्योंकि ऐसा न करने से ब्रह्मा जी की महिमा घट जाती।

चौपाई

ब्रह्मबान कपि कहुँ तेहिं मारा। परतिहुँ बार कटकु संघारा।।
तेहिं देखा कपि मुरूछित भयऊ। नागपास बाँधेसि लै गयऊ।।

ब्रह्मास्त्र लगते ही हनुमान को अचेतनावस्था अपने पाश में जकड़ने लगी, परन्तु उन्होंने इस अवस्था में भी कई राक्षसों का संधार किया। जब इंद्रजीत को पूर्ण विश्वास हो गया कि अब हनुमान जी पूर्णतः अचेत हो चुके है, तब उन्हें नागपाश में जकड़ "अशोक–उद्यान" से ले गया।

जासु नाम जपि सुनहु भवानी। भव बंधन काटहिं नर ग्यानी।।
तासु दूत कि बंध तरू आवा। प्रभु कारज लगि कपिहिं बंधावा।।

भगवान शिव पार्वती से कहते है, हे पार्वती! ध्यानपूर्वक सुनो– जिन श्रीराम का नाम लेकर संसार के विद्वत जन मोक्ष प्राप्त करते है, क्या उनका इन नागपाश में बांधा जा सकता है? परन्तु ईश्वर की ईच्छा समझकर स्वयं हनुमान ने यह बंधन स्वीकार किया।

कपि बंधन सुनि निसिचर धाए। कौतुक लागि सभा सब आए।।
दसमुख सभा दीखि कपि जाई। कहि न जाइ कुछ अति प्रभुताई।।

इस तरह के विशालकाय शक्तिशाली वानर के बंधन में आने के समाचार को सुन राक्षसों में उन्हें देखने की पिपासा जाग उठी व लोग उत्सुकतावश उन्हें

को नष्ट करने वाले हैं। जिन्होंने शिवजीका "पिनाक" नामक अद्भूत धनुष तोड़ डाला व साथ ही महाराजाओं के घमण्ड को चकनाचूर कर दिया।

खर दूषन त्रिसिरा अरू बाली। बधे सकल अतुलित बलसाली।।

जिन्होंने खर, दूषण व त्रिसिरा जैसे महान् असुर वीरों का संहार किया व बलि जैसे महाबाली का वध किया। जो अतुलनीय व आजीवन बलवान थे।

दोहा

जाके बल लवलेस तें जितेहु चराचर झारि।

तासु दूत मैं जा करि हरि आनेहु प्रिय नारि।।21।।

जिनका किंचित् मात्र बल पाकर तुम दिन भ्रमि व घमण्डी हो गये हो, जिनकी धर्मपत्नी को तुम छल से घर लाये हो, मैं उन्हीं (श्रीराम) का दूत हूँ।

चौपाई

जानउँ मैं तुम्हारि प्रभुताई। सहसबाहु सन परी लराई।।

समर बालि सन करि जसु पावा। सुनि कपि बचन बिहसि बिहरावा।।

मैं तुम्हारी शक्ति से भली–भांति परिचित हूँ। एक बार तुम्हारा युद्ध सहस्त्रबाहु से व एक बार बलि से भी हुआ था, जिससे तुम्हें जय व कीति मिली हनुमान जी के रहस्यपूर्ण वाक्यों को सुन स्पष्टीकरण देने के स्थान पर रावण हंसा व बात टाल दी।

खायउँ फल प्रभु लागी भँखा। कपि सुभाव तें तोरेउँ रूखा।।

सब कें देह परम प्रिय स्वामी। मारहिं मोहि कुमारगामी।।

हे रावण! मुझे अति तीव्र भूख लगी थी इसलिये मैंने तुम्हारी वाटिका के फल खाये, चूंकि मैं वानर हूँ अतः स्वभाववश वक्ष तोड़े भी। हे लंकेश! सभी अपने शरीर से प्रेम करते है, जब तुम्हारे असुरों ने मुझ पर प्रहार किया:–

जिन्ह मोहि मारा ते मैं मारे। तेहि पर बाँधेउँ तनयँ तुम्हारे।।

मोहि न कछु बाँधे कइ लाजा। कीन्ह चहउँ निज प्रभु कर काजा।।

मैंने केवल उन्हें मारा, जिन्होंने मुझे मारा। परन्तु फिर भी तुम्हारे पुत्र ने मुझे बांध लिया। लेकिन फिर भी मुझे कोई दुःख नहीं। क्योंकि मैं केवल अपने स्वामी (श्रीराम) के लिये कार्य करना चाहता हूँ।

बिनती करउँ जोरि, कर रावन। सुनहु मान तजि मोर सिखावन।।

देखहु तुम्ह निज कुलहि बिचारी। भ्रम तजि भजहु भगत भयहारी।।

हे रावण! मैं केवल तुमसे एक प्रार्थना करना चाहता हूँ कि तुम झूठे दंभ को त्याग कर मेरी कही बात मानों। तुम स्वयं के वंश (पवित्र पुलस्त्य ऋषि के) बारे में सोचो और मोह–माया को तज, भक्तों को मोक्ष दिलाने वाले भगवान का स्मरण करो।

जाकें डर अति काल डेराई। जो सुर असुर चराचर खाई।।

तासों बयरू कबहुँ नहिं कीजै। मोरे कहें जानकी दीजै।।

वह काल, जो सुरों, असुरो व सारे सजीव–निर्जीव जगत को खाने की शक्ति रखता है, स्वयं भगवान् से डरता है। तुम उस शक्तिमान प्रभु से जानबूझकर बैर मत लो व मेरा कहा मानों और माता सीता को सम्मान सहित वापस भेज दो।

दोहा

प्रनतपाल रघुनायक करुना सिंधु खरारि।
गएँ सरन प्रभु राखिहैं तव अपराध बिसारि।।22।।

श्रीराम कृपा के सागर है, वे अपनी शरण में आए हुए की सदैव ही रक्षा करते है। वे तुम्हें भी तुम्हारे सारे दोषों को अनदेखा कर शरण में ले लेंगे।

चौपाई

राम चरन पंकज उर धरहू। लंका अचल राजु तुम्ह करहू।।
रिषि पुलस्ति जसु बिमल मयंका। तेहि ससि महुँ जनि होहु कलंका।।

हे रावण! तुम श्रीराम के चरण कमलों को ह्रदय में बसा कर असीम समय तक लंका में शासन कर सकते हो। तुम्हारे नाना "मुनिराज पुलस्त्य" जी के यश को जो चंद्रमा की तरह कीर्तिमान है, अपने कर्मों से कलंक मत लगाइये।

राम नाम बिनु गिरा न सोहा। देखु बिचारि त्यागि मद मोहा।।
बसन हीन नहिं सोह सुरारी। सब भूषन भूषित बर नारी।।

बिना श्रीराम के नाम के किसी भी वाणी की आभा नहीं है। मोह माया प्रेम से ऊपर उठो। अरे रावण! सभी तरह के आभूषणों से युक्त नारी भी बिना वस्त्रों के शोभित नहीं होती।

राम बिमुख संपति प्रभुताई। जाइ रही पाई बिनु पाई।।
सजल मूल जिन्ह सरितन्ह नाहीं। बरशि गएँ पुनि तबहिं सुखाहीं।।

श्रीराम से नाता तोड़कर यदि धन, सम्पत्ति, ऐश्वर्य मिल भी जाये तो इसे सफलता नहीं मानना चाहिये, क्योंकि ये सभी क्षणभंगुर है व उसी तरह नष्ट हो जाएंगे जिस तरह बिना मूल जल स्त्रोत के नदियां वर्षा–काल जाते ही सूख जाती है।

सुनु दसकंठ कहउँ पर रोपी। बिमुख राम त्राता नहिं कोपी।।
संकर सहस बिष्नु अज तोहि। सकहिं न राखि राम कर द्रोही।।

हे लंकापति! मैं शपथपूर्वक यह कह सकता हूँ कि यदि श्रीराम ने तुमसे मुख मोड़ लिया तो तुम्हारी रक्षा कोई नहीं कर सकेगा। सहस्त्रों की संख्या में ब्रह्मा, विष्णु, महेश ही क्यों न आ जाये, वे भी श्रीराम के बैरी की रक्षा नहीं करेंगे।

दोहा

मोहमूल बहु सूल प्रद त्यागहु तम अभिमान।
भजहु राम रघुनायक कृपा सिंधु भगवान।।23।।

मोह–माया ही जिसका सार है, ऐसे अज्ञान रूपी तामसी मार्ग को त्यागकर रघुपति, कृपा–सागर श्रीराम का स्मण कर–

चौपाई

जदपि कही कपि अति हित बानी। भगति बिबेक बिरति नय सानी।।

बोला बिहसि महा अभियानी। मिला हमहि कपि गुरू बड़ ग्यानी।।

यद्यपि हनुमान जी ने रावण के कल्याणार्थ, भक्ति, वैराग्य, नीति–प्रधान व उचित बात सुझाई, परन्तु चूंकि रावण झूठे दम्भ में डूबा हुआ था, उसने इन बातों को हास्यास्पद कहा व कहा कि आया बड़ा वानर विद्धान।

मृत्यु निकट आई खल तोही। लागेसि अधम सिखावन मोही।।

उलटा होइहि कह हनु माना। मतिभ्रम तोर प्रगट मैं जाना।।

रावण ने कहा अरे दुष्ट वानर! तु मुझ महाज्ञानी को ही शिक्षा देने चला है, लगता है तेरी मष्त्यु सन्निकट है। हनुमान जी ने कहा इसका विपरीत होगा। (यानि रावण की मौत निकट है) मुझे साफ दिख रहा है कि तेरी मति मारी गई है व मष्त्यु तेरा वरण करने वाली है।

सुनि कपि बचन बहुत खिसिआना। बेगि न हरहु मूढ़ कर प्राना।।

सुनत निसाचर मारन धाए। सचिवन्ह सहित बिमीषनु आए।।

यह सुन रावण अति क्रोधावस्था में आया और उसने कहा कि इस दुष्ट वानर के शीघ्र ही प्राण क्यों नहीं ले लेते तुम। रावण का आदेश पाते ही असुर–गण हनुमान जी पर टूट पड़े परन्तु उसी क्षण अपने सहयोगी मंत्रियों के संग विभीषण जी आ पहुंचे।

नाइ सीस करि बिनय बहूता। नीति बिरोध न मारिअ दूता।।

आन दंड कछु करिअ गोसाँई। सबहीं कहा मंत्र भल भाई।।

बड़ें भाई रावण के आगे नतमस्तक हो प्रणाम करने के पश्चात् विभीषण ने विनम्रता से कहा की दूत को मारना अधर्म है। इसे कोई अन्य दण्ड दिया जाए सभी ने विभीषण के मत के हाँ में हाँ मिलाई व कहा, यही उचित रहेगा।

सुनत बिहसि बोला दसकंधर। अंग भंग करि पठइअ बंदर।।

रावण ने सहमत होते हुये कहा कि यदि मारना उचित नहीं है तो कम से कम इस वानर का कोई अंग–भंग कर इसे वापस भेज दो।

दोहा

कपि कें ममता पूंछ पर सबहि कहउँ समुझाइ।

तेल बोरि पट बाँधि पुनि पावक देहु लगाइ।।24।।

सभी भली प्रकार जान लो, कि किसी भी वानर को सबसे प्रिय अपनी पूंछ होती है, साथ ही यह संवेदनशील व मुलायम अंग है अतः तेल में भीगे कपड़ों से इसकी पूंछ बांध दी जाये व फिर आग लगा दी जाए।

पर ही भालु व वानर वीर झुण्डों में बिखरकर फलाहार करने लगे।

उहाँ निसाचर रहहिं ससंका। जब तें जारि गयउ कपि लंका।।
निज निज गष्हं सब करहिं बिचारा। नहिं निसिचर कुल केर उबारा।।

दूसरी ओर वहां लंका में हनुमान जी के लंका दहन से भयाक्रांत, लंका वासी अब तक सहमें हुए थे। वे विचार करने लगे कि अब असुरवंशियों का बच पाना असंभव है।

जासु दूत बल बरनि न जाई। तेहि आएँ पुर कवन भलाई।।
दूतिन्ह सन सुनि पुरजन बानी। मंदोदरी अधिक अकुलानी।।

लंकावासी यह सोचकर कांप जाते थे, कि जिसका दूत अद्वितीय शक्ति रखता है, यदि उसका स्वामी स्वयं आ गया तो हमारा क्या हाल होगा। मंदोदरी भी संदेश वाहिकाओं के द्वारा मिले समाचारों से भयभीत हो गई।

रहसि जोरि कर पति पग लागी। बोली बचन नीति रस पागी।।
कंत करष हरि सन परिहरहू। मोर कहा अति हित हियँ धरहू।।

मंदोदरी ने एकांतावस्था में लंकेश से जाकर करबद्ध निवेदन किया "हे प्रियतम्! मेरा कहा मानिये और श्रीराम से विरोध को अपने हृदय से त्याग दीजिये।

समुझत जासु दूत कइ करनी। स्रवहिं गर्भ रजनीचर धरनी।।
तासु नारि निज सचिव बोलाई। पठवहु कंत जो चहहु भलाई।।

जिसके दूत की गर्जित ध्वनि से राक्षस पत्नियों के गर्भ गिरने लगे। उस पराक्रमी की पत्नी को आप अपने मंत्री के संरक्षण में शीघ्र ससम्मान वापस भेजिये प्रियतम्! इसी में हम सभी की भलाई है।

तब कुल कमल बिपिन दुःखदाई। सीता सीत निसा सम आई।।
सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हें। हित न तुम्हार संभु अज कीन्हें।।

स्वामी! सीता जी यहां आपके कुल रूपी कमल समूह के लिए दुःख देने वाली शीतल रातों के समान आई है। बिना सीता को लौटायें आपकी रक्षा ब्रह्मा व शिव भी नहीं कर सकते।

राम बान अहि गन सरिस निकर निसाचर भेक।।
जब लगि ग्रसत न तब लगि जनतु करहु तजि टेक।।

प्रभो! श्रीराम के सर्प समान के बाणों के सामने राक्षक मेढ़क के समान है। ऐसा न हो कि वे सर्प यहां आकर सभी को निगल ले आप रक्षा का उपाय कीजिये।

श्रवन सुनी सठ ता करि बानी। बिहसा जगत बिदित अभिमानी।।
सभय सुभाउ नारि कर साचा। मंगल महुँ भय मन अति काचा।।

पंरतु यह सद्वचन दुस्साहसी रावण के समझ में कहां आने वाले थे उसने कहा ये सत्य है कि स्त्रिया स्वभावतः ही डरपोक होती है। अपनी भलाई में भी

डरती है तुम्हारा हृदय अत्यंत कमजोर है मंदोदरी।

जौं आवइ मर्कट कटकाई। जिअहिं बिचारे निसिचर खाई।।

कंपहिं लोकप जाकीं त्रासा। तासु नारि सभीत बड़ि हासा।।

रावण ने कहा, यदि वानर सेना यहां आ भी गयी तो राक्षसगण उनका भक्षण कर अपना पेट भरेंगे और यह तो अत्यंत हास्यास्पद स्थिति है कि आप उसकी पत्नी होकर भी डर रही है, जिस रावण के डर से लोकपाल गण भी कांपते है।

अस कहि बिहसि ताहि उर लाई। चलेउ सभाँ ममता अधिकाई।।

मंदोदरी हृदय कर चिंता। भयउ कंत पर बिधि बिपरीता।।

मंदोदरी को इस तरह ढांढस बंधा कर अपने हृदय से लगा लिया व दरबार में चला गया। मंदोदरी को यह भ्रम व विचार आया कि उसके स्वामी से भाग्य रूठ गया है।

बैठेउ सभाँ खबरि असि पाई। सिंधु पारका सेना सब आई।।

बुझेसि सचिव उचित मत कहहू। ते सब हँसे मष्ट करि रहहू।।

दरबार में सिंहासन पर विराजमान होते ही सर्वप्रथम समाचार रावण को यह मिला कि वानर सेना सागर के उस पार आ पहुंची है। इस संबंध में उससे उच्च मंत्री गणों से मंत्रणा की। इस पर मंत्रियों ने सुझाया कि यह स्थिति मंत्रणा योग्य है ही नहीं व मस्कुराने लगे।

जितेहु सुरासुर तब श्रम नाहीं। नर बानर केहि लेखे माहीं।।

जब आपने देवों व असुरों को भी अत्यंत सरल रीति से हरा दिया तो इन वानर–भालुओं की आपके सम्मुख क्या बिसात ?

सचिव बैद गुर तीन जौं प्रिय बोलहिं भय आस।।

राज धर्म तन तीनि कर होइ बेगि हीं नास।।

जब किसी राज्य के शीर्ष पुरूष यानि मंत्री, गुरू, वैध और पुरोहित ही भय व लोभवश चापलूसी में असत्य का साथ देते है तो उस राज्य में देश, देह और धर्म का विनाश अवश्यमंभावी है।

सोइ रावन कहुँ बनी सहाई। अस्तुति करहिं सुनाई सुनाई।।

अवसर जानि बिभीषनु आवा। भ्राता चरन सीसु तेहिं नावा।।

यही स्थिति लंका राज्य की हो गई, सभी लोग रावण की प्रशंसा के पुल बांधने लगे। उसकी प्रशंसा में कोई कमी नहीं रखी। उसी क्षण वहां विभीषण जी आए और बड़े भाई को नमन किया।

पुनि सिरू नाइ बैठ निज आसन। बोला बचन पाइ अनुशासन।।

जौ कृपाल पूँछिहु मोहि बाता। मति अनुरूप कहउँ हित ताता।।

तत्पश्चात उन्होंने अपना निश्चित आसन ग्रहण किया व जब रावण ने सलाह मांगी तब बोले– हे कृपालु! आप मेरी सलाह चाहते है तो मैं मेरी

बुद्धिपूर्वक कल्याणकारी बात कहूँगा।

जो आपन चाहै कल्याना। सुजसु सुमति सुभ गति सुख नाना।।
सो परनारि लिलार गोसाईं। तजउ चउथि के चंद कि नाईं।।

जो मानव अपना कल्याण, यश, सुबुद्धि और मोक्ष चाहता हो उसे नीति तो यही कहती है कि हे स्वामी! जिस प्रकार मनुष्य चतुर्थी को चंद्रमा देखना अहितकर समझते है व उसके दर्शन का त्याग करते है, ठीक उसी तरह मनुष्य को पर स्त्री का दर्शन व विचार त्याग देना चाहिये।

चौदह भुवन एक पति होई। भूतद्रोह तिष्ठई नहिं सोई।।
गुन सागर नागर नर जोऊ। अलप लोभ भल कहइ न कोऊ।।

जीवों से अकारण शत्रुता मोल लेने वाला चाहे चौदह भुवनों का स्वामी ही क्यों न हो उसका भी अविलंब नाश हो जाता है और व्यक्ति यदि लालची है तो वह अन्य कितने ही गुणों का स्वामी क्यों न हो वह कभी समाज के भले की नहीं सोचता व न ही समाज उसे सही कहता है।

काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ।
सब परिहरि रघुबीरहि भजहु भजहिं जेहि संत।।38।।

हे नाथ! काम, क्रोध, मद और लोभ जो मनुष्य को नरक का मार्ग दिखलाते है इनसे दूर रह मनुष्य को श्रीराम का ध्यान करना चाहिये। क्यों कि सभी सज्जन पुरूष ऐसा ही करते है।

तात राम नहिं नर भूपाला। भुवनेश्वर कालहु कर काला।।
ब्रह्म अनामय अज भगवंता। ब्यापक अजित अनादि अनंता।।

हे भ्राता! श्रीराम न केवल मनुष्यों के राजा है, अपितु सभी लोकों के स्वामी और काल के राजा है। वे ब्रह्म, विकार–रहित, अजन्मा, ऐश्वर्य, यश, श्री आदि दिव्य गुणों के भंडार भगवान, सर्वत्र विद्यमान, किसी के द्वारा न जीते जाने योग्य अनादि अनंत है।

गो द्विज धेनु देव हितकारी। कृपा सिंधु मानुष तनुधारी।।
जन रंजन भंजन खल ब्राता। बेद धर्म रच्छक सुनु भ्रता।।

यदि उन्होंने मनुष्य रूप धारण किया है तो मात्र इसलिए कि धरा, विप्र, गौ और सुरों का कल्याण हो। हे भ्राता! सुनो, श्रीराम वेद व धर्म के रक्षक, दुष्टों के संहारक और भक्तों के पालनहार है।

ताहि बयरू तजि नाइअ माथा। प्रनतारति भंजन रघुनाथा।।
देहु नाथ प्रभु कहुँ बैदेही। भजहु राम बिनु हेतु सनेही।।

वे रघुपति है, वैर तजकर आप अपना मस्तक उनके सम्मुख नवाइये। वे अपने शरण में आने वाले का उत्थान कर देते है। हे भ्राता! आप श्रीराम के भजन तप में निमग्न हो जाइये व माता सीता को ससम्मान वापस लौटा दीजिये।

सरन गएँ प्रभु ताहु न त्यागा। बिस्व द्रोह कत अघ जेहि लागा।।
जासु नाम त्रय ताप नसावन। सोइ प्रभु प्रगट समुझु जियँ रावन।।

जिसने संपूर्ण ब्रह्मांड से वैर ले रखा हो एक बार यदि वह भी प्रभु की शरण में जाये तो प्रभु उसे अपना लेंगे। तीनों तापों का नाश करने वाले स्वयं मनुष्य रूप में अवतरित है, आप इस बात को ठीक ढंग से समझ लीजिये।

बार बार पद लागउँ विनय करऊ दससीस।
परिहरि मान मोह मद भजहु कोसलाधीस ।।(39–क)।।

हे भ्राता! मैं बार–बार आपके चरणों में गिरकर प्रार्थना करता हूँ कि आप मान, मोह, लोभ व मद छोड़कर कोशलाधीश श्रीराम का स्मरण कीजिये।

मुनि पुलस्ति निज सिष्य सन कहि पठई यह बात।
तुरत सो मैं प्रभु सन कही पाइ सुअवसररू तात।। (39–ख)।।

यहीं संदेश अपने नाना "मुनि पुलस्त्य" ने भेजा है, जिसकों मैने आपसे विस्तार पूर्वक कह दिया।

तात अनुज तव नीति विभूषन। सो उर धरहु जो कहत बिभीषन।।

माल्यवान् नामक मंत्री जो कि लंका दरबार का सबसे बुद्धिमान सदस्य था। विभीषण के नीति–संगत विचारों की सराहना करने लगा व कहा कि आप विभीषण की बात हृदयंगम कर मान लीजिये।

रिपु उतकरष कहत सठ दोऊ। दूरि न करहु इहाँ हई कोऊ।।
माल्यवंत गृष्ह गयउ बहोरी। कहइ विभीषनु पुनि कर जोरी।।

इस पर रावण ने कहा तुम दोनों मूर्ख हो जो शत्रु–प्रताप का गुण गान कर रहे हो, यहां से कोई इन्हें दूर भगाओं। इस पर माल्यवान् तो अपने घर लौट गए, परंतु विभीषण फिर करबद्ध हो भ्राता से विनती करने लगे।

सुमति कुमति सब कें उर रहहीं। नाथ पुरान निगम अस कहहीं।।
जहाँ सुमति तहँ संपति नाना। जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना।।

हे भाई! वेद–पुराणों में स्पष्ट उल्लेख है कि प्राणियों में सद्‌बुद्धि और कुबुद्धि दोनों का वास होता है। सद्‌बुद्धि अपने साथ सुख व समर्षद्धि लाती है व कुबुद्धि आपदाएं और दुःख।

तव उर कुमति बसी बिपरीता। हित अनहित मानहु रिपु प्रीता।।
कालराति निसिचर कुल केरी। तेहि सीता पर प्रीति घनेरी।।

लगता है आपके मन में कुबुद्धि का वास हो गया है तभी आप हित को अहित व शत्रु को मित्र समझ बैठे है। सीता माता पर जो आपकी दृष्टि है वो ही राक्षस कुल का काल बनेगी।

तात चरन गहि माँहउँ राखहु मोर दुलार।
सीता देहु कहुँ अहित न होइ तुम्हार।।

हे तात् आप मुझ अनुज की एक गुहार मान लीजिये जिससे आपका अहित

दूर हो जाएगा आप माता सीता को ससम्मान श्रीराम को वापस लौटा दीजिये।

बुध पुरान श्रुति संमत बानी। कही बिभीषन नीति बखानी।।

सुनत दसानन उठा रिसाई। खल तोहि निकट मृत्यु अब आई।।

विभीषण द्वारा कहीं गई वेद–पुराणों की नीतिगत बातें रावण के समझ में नहीं आई व उनका विरोध करते हुए उसने कहा लगता है तेरी मौत निकट आई है।

जिअसि सदा सठ मोर जिआवा। रिपु कर पच्छ मूढ़ तोहि भावा।।

कहसि न खल अस को जग माहीं। भुज बल जाहि जिता मैं नाहीं।।

अरे दुष्ट! मेरे दिए अन्न पर तु पलता आया है और मेरे ही शत्रु का पक्ष ले रहा है। अरे मुर्ख! तु ही बता कि मैं संसार में किसे नहीं परास्त कर सकता अपनी भुजाओं की शक्ति से ?

मम पुर बसि तपसिन्ह पर प्रीती। सठ मिलु जाइ तिन्हहि कहु नीती।।

अस कहि कीन्हेसि चरन प्रहारा। अनुज गहे पद बारहिं बारा।।

मूर्ख! लंकानगरी में रहते हुए भी तपस्वियों से प्रेमभाव रखता है, तो जा उन्हीं से मिल जा और उन्हें ही नीति का पाठ पढ़ा– इतना कहकर विभीषण को लातमार दी, किंतु फिर भी विभीषण ने भ्राता के चरणों को पकड़े रखा।

उमा संत कइ इहइ बड़ाई। मंद करत जो करइ भलाई।।

तुम्ह पितु सरिस भलेहिं मोहि मारा। रामु भजें हित नाथ तुम्हारा।।

शिवजी ने कहा हे उमा! संतों का स्वभाव ही है कि वे बैरी का भी हित चाहते है। इसी तरह विभीषण जी ने रावण से कहा आप मेरे पितातुल्य है। इस बात का मुझे तनिक भी खेद नहीं कि आपने मुझे मारा। फिर भी मैं यहीं कहूँगा कि प्रभो श्रीराम के भजन में ही आपका हित है।

सचिव संग लै नभ पथ गयऊ। सबहि सुनाइ कहत अस भयऊ।।

इतना कहने के पश्चात विभीषण अपने सहयोगी मंत्रियों के साथ आकाश की और उड़ गए और कहा कि–

रामु सत्यसंकल्प प्रभु सभा कालबस तोरि।

मैं रघुबीर सरन अब जाउँ देहु जनि खोरि।।

हे रावण! ये जान लो कि श्रीराम सब समर्थ व सत्यव्रतधारी है। तुम्हारा दरबार अब काल के गाल में समाने वाला है अतः मैं श्रीराम की शरण में जा रहा हूँ। अब मुझ पर दोषारोपण मत करना कि मैने चेताया नहीं।

अस कहि चला विभीषण जबहीं। आयूहीन भए सब तबहीं।।

साधु अवग्या तुरत भवानी। कर कल्यान अखिल कै हानी।।

इतना कहने के पश्चात विभीषण ने प्रस्थान किया व मानों राक्षसों की मृत्यु अब समीप ही थी। (शिवजी बोले) क्यों कि हे भवानी! सद्पुरूष का जहां पर तिरस्कार व अपमान किया जाता है वहां सभी शुभ संकेत नष्ट हो जाते है।

को)। इस पर वानरराज सुग्रीव व हनुमान सहित सभी वानर चल दिए प्रभु की जय घोष करते।

सादर तेहि आगें करि बानर। चले जहाँ रघुपति करूनाकर।।
दूरिहि ते देखे द्वौ भ्राता। नयनानंद दान के दाता।।

विभीषण को आदर के साथ, वानरगण श्रीराम के पास ले चले विभीषण ने दूर से नैत्रों को प्रसन्नता देने वाले श्रीराम व लक्ष्मण को देखा।

बहुरि राम छबिधाम बिलोकी। रहेउ ठटुकि एकटक पल रोकी।।
भुज प्रलंब कंजारून लोयन। स्यामल गात प्रनत भय मोचन।।

विभीषण टकटकी लगाये श्रीराम की सुंदर मोहक छवि को निहारते रहे वे पलक तक झपकाना भूल गए। श्रीराम की विशाल भुजाएं, लाल कमल सी आंखे, व सांवला शरीर देख, विभीषण का भय जाता रहा।

सिंध कंध आयत उर सोहा। आनन अमित मदन मन मोहा।।
नयन नीर पुलकित अति गाता। मन धरि धीर कही मष्दु बाता।।

नाहर के समान बलिष्ठ कंधे व सुंदर चौड़ी छाती है तथा मुखमंडल इस तरह का है कि कई कामदेव भी मुग्ध हो जाये! श्रीराम के दर्शन से विभीषण का मन पुलकित हो उठा व नैत्र जल से भर आए। विभीषण ने धैर्य–पूर्वक कोमल स्वर में कहा।

नाथ दसासन कर मैं भ्राता। निसिचर बंस जनम सुरत्राता।।
सहज पापप्रिय तामस देहा। जथा उलूकहि तम पर नेहा।।

हे प्रभो! मैं उस रावण का भाई हूँ जिसके दस मुख है। मेरा जन्म राक्षस वंश में हुआ है देव रक्षक! मेरा तन तामसी है जिस प्रकार उलूक को अंधेरा प्रिय लगता है उसी प्रकार मुझे तामस कर्म प्यारा है।

श्रवन सुजसु सुनि आयउँ प्रभु भंजन भव भीर।
त्राहि त्राहि आरति हरन सरन सुखद रघुबीर

मैं आपकी शरण में यह सुनकर आया हूँ कि श्रीराम जन्म–मृत्यु से मुक्त कर मोक्ष दिलाते है। हे दीनदयाल! हे शरणार्थी की रक्षा करने वाले! मेरी भी रक्षा कीजिये, रक्षा कीजिये।

अस कहि करत दंडवत देखा। तुरत उठे प्रभु हरष बिसेषा।।
दीन बचन सुनि प्रभु मन भावा। भुज बिसाल गहि ह्रदयँ लगाया।।

इतना कहने के पश्चात विभीषण श्रीचरणों में दण्डवत हो गए ऐसा देख श्रीराम हर्षित हो उठ और उन्होंने विभीषण को उठाकर आलिंगनबद्ध कर लिया।

अनुज सहित मिलि ढिग बैठारी। बोले बचन भगत भयहारी।।
कहु लंकेस सहित परिवारा। कुसल कुठाहर बास तुम्हारा।।

तत्पश्चात लक्ष्मण सहित विभीषण को गले लगाकर श्रीराम ने उन्हें पास बैठाया और कहा हे लंकेश! सपरिवार अपना कुशलक्षेम सुनाओ। तुम बड़ी कठिन अवस्था में रहते हो।

खल मंडली बसहु दिन राती। सखा धरम निबहइ केहि भाँती।।
मैं जानउँ तुम्हारि सब रीती। अति नय निपुन न भाव अनीती।।

हे मित्र! तुम दिवस–रात्रि दुष्टों की मंडली में रहते हो, इस अवस्था में धर्म का पालन कैसे कर पाते हो ? मैं तुम्हारे स्वभाव से पूर्वतः परिचित हूँ तुम नीतिज्ञ हो और अन्याय को पसंद नहीं करते।

बरू भल बास नरक कर ताता। दुष्ट संग जनि देइ विधाता
अब पद देखि कुसल रघुराया। जौं तुम्ह कीन्हि जानि जन दाया।।

हे विभीषण ऐसा माना गया है कि चाहे नरक में ही स्थान क्यों न मिले परंतु जीवन में दुष्टों का साथ उससे भी कष्टकारी है। विभीषण बोले मैं आपके श्रीचरणों का दर्शन कर कुशल हूँ व कृतार्थ हूँ जो आपने मुझे अपनी दया का पात्र बनाया।

तब लगि कुसल न जीव कहुँ सपनेहूँ मन विश्राम।
जब लगि भजत न राम कहुँ सोक धाम तजि काम।।

प्राणी की कुशलता तब तक नहीं कही जा सकती जब तक कि वह विषय वासनाओं का साथ छोड़ प्रभु राम की शरण में नहीं आ जाता।

तब लगि हृदयँ बसत खल नाना। लोभ मोह मच्छर मद माना।।
जब लगि उर न बसत रघुनाथा। धरें चाप सायक कटि भाथा।।

लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष, मद और झूठा अंहकार केवल तब तक रहता है, जब तक कि कोई धनुष–बाण व तरकशधारी श्रीराम के चरणों में नहीं आता।

ममता तरून तमी अंधियारी। राग द्वेष उलूक सुखकारी।।
तब लगि बसति जीवन मन माहीं। जब लगि प्रभु प्रताप रबि नाहीं।।

राग–द्वेष उस तरह की ममता है जो अंधेरी रात्रि में दुष्ट उल्लुओं को प्रश्रय देती है और इस अंधेरी रात का भी अस्तित्व तब तक ही है जब तक कि प्राणी के मन में भगवान श्रीराम के नाम का सूर्य नहीं उदय होता।

अब मैं कुसल मिटे भय भारे। देखि राम पद कमल तुम्हारे।।
तुम्ह कृपाल जा पर अनुकूला। ताहि न ब्याप त्रिबिध भव सूला।।

हे श्रीरामचंद्र! आपके दर्शन से अब मैं कुशल हूँ आपकी कृपा जिसे मिल जाये उनके तीनों सांसारिक कष्ट आध्यात्मिक, अधिदैविक तथा अधिभौतिक नष्ट हो जाते है।

मैं निसिचर अति अधम सुभाऊ। सुभ आचरनु कीन्ह नहिं काऊ।।
जासु रूप मुनि ध्यान न आवा। तेहिं प्रभु हरषि हृदयं मोहि लावा।।

अब मुझे ही लीजिये, मैं राक्षस हूँ, अत्यंत नीच प्रवषति का कल्याणकारी आचरण कभी नहीं किया। फिर भी मुझे आपका दर्शन सुलभ हुआ जो बड़े–बड़े ऋषि–मुनियों को भी दुर्लभ है।

अहोभाग्य मम अमित अति राम कृपा सुख पुंज।।
देखउं नयन बिरंचि सिव सेब्य जुगल पद कंज।।

हे प्रभो! सुख सागर! मेरा भाग्य अत्यंत उत्तम है , जो मैने ब्रह्मा और शिव सेवित आपके श्रीचरणों के दर्शन पाये। मेरे नेत्र भी धन्य हो गए।

सुनहु सखा निज सुभाऊ। जान भुसुंडि संभु गिरिजाऊ।।

जौं नर होइ चराचर द्रोही। आवै सभय सरन तकि मोही।।

प्रभो बोले ! मित्र विभीषण मैं तुम्हे अपना स्वभाव बतलाता हूँ जिससे, शिवजी, पार्वती जी व काकभुसुण्डि भी भली भांति परिचित है। यदि कोई प्राणी संपूर्ण सजीव व निर्जीव जगत का दोषी हो और वह भी मेरी शरण में आए तो मैं उसका वरण करूंगा, उसे भयभीत होने की आशंका नहीं है।

तजि मद मोह कपट छल नाना। करउं सद्य तेहि साधु समाना।।

जननी जनक बंधु सुत दारा। तनु धनु भवन सुह्रद परिवारा।।

यदि वह सब प्रकार के मिथ्या दंभ, आसक्ति और छल–कपट तज दे तो मैं उसे शीघ्र ही सच्चा साधु सा बना देता हूँ। माता–पिता, भाई, पुत्र, पत्नी, देह संपति, घर, मित्र और कुटुंब।

सब कै ममता ताग बटोरी। मम पद मनहि बांध बरि डोरी।।

समदरसी इच्छा कछु नाहीं। हरष सोक भय नहिं मन माहीं।।

इन सभी से बंधी मोह वाली रस्सी को मेरे चरणों में डाल देता है, यानि आसक्ति त्याग, मेरे प्रति प्रेम जगाता है, सभी प्राणियों को समदर्षिट से देखना है, मेरी भक्ति के बिना मन में कुछ अन्याय न रखता हो। मन में शोक, प्रसन्नता या डर का भाव न हो।

अस सज्जन मम उर बस कैसे। लोभी ह्वदयं बसइ धनु जैसे।।

तुम्ह सारिखे संत प्रिय मोरें। धरउं देह नहि आन निहोरें।।

ऐसा सज्जन पुरूष मेरे ह्वदय मैं उसी प्रकार बसता है, जिस प्रकार लोभी के ह्वदय में धन का वास होता है। मुझे तो तुम्हारे समान संत ही प्रिय है अन्यथा किसी के अनुरोध पर मैं प्रकट नहीं होता। आप जैसे संतों व सज्जनों के आग्रह पर ही मैने पष्थ्वी पर अवतार लिया।

सगुन उपासक परहित निरत नीति दष्ढ़ नेम।।

ते नर प्राण समान मम जिन्ह के द्विज पद प्रेम।।

संपूर्ण जीवन जो परहित में लगे रहते है और मेरे सगुण रूप की उपासना करते है, अपनी ली गई शतप्रतिज्ञाओं और नीतियों से विचलित नहीं होते और सच्चा सुख ब्रह्माणों के चरणों में समझते है, ऐसे मनुष्य मुझे अत्यंत प्रिय है।

सुनु लंकेस सकल गुन तोरें। तातें तुम्ह अतिसय प्रिय मोरें।।

राम बचन सुनि बानर जूथा। सकल कहहिं जय कृपा बरूथा।।

और ये सभी सद्गुण मैं तुम्हारे भीतर देखता हूँ लंकाधिपति! इसलिए तुम मुझे अति प्रिय हो। ऐसे सुंदर व कोमल वचनों का श्रवण कर वानर व भालु–गण उत्साह पूर्वक प्रभु का जयघोष करने लगे।

सुनत विभीषनु प्रभु कै बानी। नहिं अघात श्रवनामष्त जानी।।

पद अंबुज गहि बारहिं बारा। ह्वदयं समान न प्रेमु अपारा।।

ऐसे मधुर वचनों को सुन विभीषण की श्रवण पिपासा बढ़ती जा रही थी। इतना प्रेम उनके मन में असमाहित था। अतः विभीषण पुनः पुनः चरणों का स्पर्श करते थे।

सुनहु देव सचराचर स्वामी। प्रनतपाल उर अंतरजामी।।
उर कुछ प्रथम बासना रही। प्रभु पद प्रीति सरित सो बही।।

विभीषण बोले हे देव! हे सजीव व निर्जीव के स्वामी! हे शरणागतों की रक्षा करने वाले! हे अंतर्यामी! यहां आने से पूर्व मेरा मन गुप्त कल्पनाओं व कामनाओं से भरा था वे सभी कल्पनाएं व कामनाएं आपकी स्नेही धारा में बह गई।

अब कृपाल जिन भगति पावनी। देहु सदा शिव मन भावनी।।
एवमस्तु कह प्रभु रनधीरा। मांगा तुरत सिंधु कर नीरा।।

हे कृपालु! मुझे ऐसी अनन्य भक्ति दीजिये जो शिवजी को भी अत्यंत प्रिय हो! तब रणधीर श्रीराम ने कहा ऐसा ही होगा। व तुरंत समुद्र का जल लाने का आदेश दिया।

जदपि सखा तव इच्छा नाहीं। मोर दरसु अमोघ जग माहीं।।
अस कहि राम तिलक तेहि सारा। सुमन बर्षष्टि नभ भई अपारा।।

हे मित्र! तुम मेरे सम्मुख निष्काम भाव से आये हो, परंतु चूंकि मेरा दर्शन कभी निष्फल नहीं जाता और श्रीराम ने विभीषण का राजतिलक कर दिया तभी आकाश से देवताओं ने हर्षित हो पुष्पवर्षा की।

रावन क्रोध अनल निज स्वास समीर प्रचंड।
जरत विभीषनु राखेउ दीन्हेंउ राजु अखंड।।

इस प्रकार कृपानिधान श्रीराम ने विभीषण की श्वास (वचन) से उत्पन्न रावण के क्रोध से विभीषण की रक्षा की व उसे लंका का अखंड राज्य प्रदान कर दिया।

जो संपति सिव रावनहि दीन्हि दिएं दस माथ।
सोइ संपदा विभीषनहि सकुचि दिन्हि रघुनाथ।।

भगवान महादेव शिव ने जो वैभव व ऐश्वर्य–पूर्ण लंका–नगरी रावण को उसके द्वारा दस–सिरों की बलि देने से प्रसन्न होकर दी थी वहीं नगरी प्रभु श्रीराम ने बहुत संशय से विभीषण को सौंप दी, अर्थात् उसका राज्याभिषेक कर दिया।

अस प्रभु छाड़ि भजहिं जे आना। ते नर पसु बिनु पूंछ विषाना।।
जिन जन जानि ताहि अपनावा। प्रभु सुभाव कपि कुल मन भावा।।

जो मनुष्य परम दयालु प्रभु श्रीराम के स्मरण के अन्यथा स्मरण करते है, वे उस पशु के समान है जो सींग–पूंछ विहीन हो। भगवान राम द्वारा विभीषण को इस तरह राज्य सौंपना, वानरों को बहुत भाया।

पुनि सर्बग्य सर्ब उर बासी। सर्बरूप सब रहित उदासी।।
बोले बचन नीति प्रतिपालक। कारन मनुज दनुज कुल घालक।।

तत्पश्चात श्रीराम जो सर्वज्ञ, मनभावना, अनेक रूपों वालें, सबसे अलग, सर्वव्यापक, कृपालु और असुरों के नाश हेतु अवतार लेने वाले है, वे नीति की

तब रावण ने हंसकर कहा अरे शुक! अपना और उस विभीषण का समाचार सुना जिसकी मृत्यु उसकी प्रतीक्षा कर रही है।

करत राज लंका सठ त्यागी। होइहि जब कर कीट अभागी।।
पुनि कहु भालु कीस कटकाई। कठिन काल प्रेरित चलि आई।।

वह मूर्ख विभीषण! यहां का राज्य–सुख भोग छोड़कर वहां चला गया है अब उसकी भी वहीं हालत होगी जो जौं में मिले धुन की होती है वह भी वानर–भालु सेना के साथ बिन–मौत मारा जाएगा।

जिन्ह के जीवन कर रखवारा। भयउ मष्दुल चित सिंधु बिचारा।।
कहु तपसिन्ह के बात बहोरी। जिन्ह के हृदयं त्रास अति मोरी।।

उन वानर–भालु सेना की रक्षार्थ कृपालु सागर बीच में आ गया अन्यथा उन तपस्वियों की मष्त्यु मेरे डर के मारे ही हो जाती।

की भइ भेंट कि फिरि गए श्रवन सुजसु सुनि मोर।
कहसि न रिपु दल तेज बल बहुत चकित चित तोर।।

उन तपस्वियों से तुम्हारी भेंट हुई या मेरे पराक्रम के बारे में सुनकर भाग गए? तु शत्रु–सेना की सामर्थ्य के बारे में क्यों नहीं बतलाता तेरी अवस्था इतनी घबराई हुई क्यों है ?

नाथ कृपा करि पूंछेहु जैसे। मानहु कहा क्रोध तजि तैसे।।
मिला जाय जब अनुज तुम्हारा। जातहिं राम तिलक तेहि सारा।।

हे नाथ! कृपाकर आप मेरी बात क्रोध त्याग कर सुनिये हे स्वामी! आपके अनुज श्री विभीषण, प्रभु श्रीराम से जा मिले है और उन्होंने उनका राज्याभिषेक भी कर दिया।

रावन दूत हमहि सुनि काना। कपिन्ह बांधि दीन्हें दुख नाना।।
श्रवन नासिका काटें लागे। राम सपथ दीन्हें हम त्यागे।।

जब वानरों को यह ज्ञात हुआ कि हम आपके दूत है तो उन्होंने हमें विविध्ा रीतियों से प्रताड़ित करना प्रारंभ कर दिया यहां तक कि हमारे नाक–कान काटने लगे। उन्होंने हमें बड़ी कठिनता से श्रीराम की शपथ दिलाने पर छोड़ा।

पूंछिहु नाथ राम कटकाई। बदन कोटि सत बरनि न जाई।।
नाना बरन भालु कपि धारी। बिकटानन बिसाल भयकारी।।

हे स्वामी! आप श्रीराम की सेना के बारे में जानेने के इच्छुक है तो सुनिये! उस सेना के साहस और पराक्रम की व्याख्या तो सहस्त्र मुखों से भी नहीं की जा सकती। उस सेना में विविध रंगों के विशालकाय वानर व भालु है जो पराक्रमी व भंयकर मुख वाले है।

जेहिं पुर देहउ हतेउ सुत तोरा। सकल कपिन्ह महं तेहि बलु थोरा।।
अमित नाम भट कठिन कराला। अमित नाग बल बिपुल बिसाला।।

जिस बंदर ने लंका नगरी में उत्पात मचाया व जला दिया वह तो उस सेना का सबसे दुर्बल वानर है। उस सेना में कई–कई हाथियों की शक्ति रखने वाले

हष्ट–पुष्ट वानर व भालु है।

द्विविद मयंक नील अंगद गद बिकटासि।
दधिमुख केहरि निसठ सठ जामवंत बलरासि।।

जिन प्रजातियों के वानर–सैनिक अत्यंत वीर है वे है द्विविद, मयंद, नील, नल, गद, अंगद, विकटास्य, दधिमुख, निशठ, शठ एवं जांमवंत।

ए कपि सब सग्रीव समानां इन्ह सम कोटिन्ह गनइ को नाना।।
राम कृपां अतुलित बल तिन्हहीं। तष्न समान त्रैलोकहि गनहीं।।

इन प्रजातियों के एक–एक वानर में सुग्रीव के समान शक्ति है और इन वानरों की संख्या अनगिनत है। प्रभु श्रीराम की कृपा से उनकी शक्ति में व्यापक वृद्धि हो गई। स्वयं की शक्ति के सामने वे तीनों लोकों की संपूर्ण शक्ति को तृण के समान मानते हैं।

अस मैं सुना श्रवन दसकंधर। पदुम अठारह जूथप बंदर।।
नाथ कटक महँ सो कपि नाहीं। जो न तुम्हहि जीते रन माही।।

हे नाथ! हमने सुना है कि उनके सेनापतियों की संख्या ही अठ्ठारह पदम है। हे स्वामी! उस सेना का कोई भी अकेला वानर ही राक्षसों को पराजित करने की सामर्थ्य रखता है।

परम क्रोध मीजहिं सब हाथा। आयसु पै न देहिं रघुनाथा।।
सोखहिं सिंधु सहित झष ब्याला। पूरहिं न त भरि कुधर बिसाला।।

वे वानर युद्ध के इतने इच्छुक है कि उत्सुकतावश हाथ मसलते रहते है परंतु श्रीराम ही उन्हें अभी युद्ध का आदेश नहीं देते। वे कहते है या तो वे जलचरों सहित ही सागर सुखों देंगे या फिर पर्वतों से सागर पाट देंगे।

मर्दि गर्द मिलवहिं दससीसा। ऐसेइ बचन कहहिं सब कीसा।।
गर्जहिं तर्जहिं सजह असंका। मानहुँ ग्रसन चहत हहिं लंका।।

वे कहते है कि हम रावण को मसलकर धूल में मिला देंगे। सभी वानर स्वभावतः ही निर्भीक है और सदैव ही गुर्राते हुए लंका नगरी को निगल जाने की बात करते हैं।

सहज सूर कपि भालु सब पुनि सिर पर प्रभु राम।
रावन काल कोटि कहुँ जीति सकहिं संग्राम।।

एक तो वे वानर स्वभाव से ही वीर है तिस पर प्रभु श्रीराम की उन पर कृपा है जिससे वे रणभूमि में करोड़ों कालों का नाश करने की शक्ति रखते है।

राम तेज बल बुधि बिपुलाई। सेष सहस सत सकहिं न गाई।।
सक सर एक सोषि सत सागर। तव भ्रातहि पूँछेउ नय नागर।।

लाखों शेषनाग भी साथ हो तो भी प्रभुश्रीराम के गुणों व शक्ति की महिमा गानें को कम है। वे नीति कुशल होने के साथ ही साथ इतने वीर है कि एक साथ कई सागरों को सुखा दें और नीति के विषय पर ही उन्होंने आपके भाई

विभीषण से राय मांगी।

तासु वचन सुनि सागर पाहीं। मागत पंथ कृपा मन माहीं।।

सुनत बचन बिहसा दससीसा। जौं असि मति सहाय कृत कीसा।।

आपके भाई की सलाह पर ही वे सागर को सुखोंने के स्थान पर सागर से मार्ग के लिए विनती कर रहे है। वे अत्यंत ही दयालु है। यह बात सुनकर रावण ठहाका मार कर हंसा और कहने लगा वो ऐसे ही डरपोक स्वभाव का है तभी तो वानरों की सहायता ले रहा है।

सहज भीरू कर बचन दष्ढ़ाई। सागर सन ठानी मचलाई।।

मूढ़ मष्षा का करसि बड़ाई। रिपु बल बुद्धि थाह मैं पाई।।

और उस डरपोक विभीषण की बातों में आ कर समुंद्र से मार्ग के लिए हठ कर रहा है। तु उनकी इतनी झूठी प्रशंसा क्यों कर रहा है ? अब बस कर।

सचिव समीत विभीषण जाकें। विजय बिभूति कहाँ जग ताकें।।

सुनि खल बचन दूत रिस बाढ़ी। समय बिचारि पत्रिका काढ़ी।।

रावण बोला जिसका सलाहकार विभीषण जैसा कायर व भीरू हो वह संसार में कभी विजय व वैभव प्राप्त कर ही नहीं सकता। (रावण अभी क्रोधावस्था में है। तभी दूतों ने लक्ष्मण द्वारा दिया पत्र रावण को सौंपा।)

रामानुज दीन्ही यह पाती। नाथ बचाइ जुड़ावहु छाती।।

बिहसि बाम कर लीन्ही रावन। सचिव बोले सठ लाग बचावन।।

दूत बोले हे स्वामी! यह पत्र श्रीराम के छोटे भाई लक्ष्मण ने आपके लिए दिया है। रावण ने वह पत्र बायें हाथ में लिया और मंत्री को पढ़ने के लिए दिया।

बातन्ह मनहि रिझाइ सठ जनि घालसि कुल खीस।।

राम विरोध न उबरसि सरन बिष्णु अज ईस।।

(पत्र में था–) अरे दुष्ट! तु क्यों झूठे अभिमान के लिए अपने वंश को नष्ट करने चला है। यदि तुने प्रभु श्रीराम से वैर लिया तो तेरी रक्षा ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी नहीं कर सकेंगे।

की तजि मान अनुज इव प्रभु पद पंकज भष्ंग।।

होहि कि राम सरानल खल कुल सहित पतंग।।

प्राणों की रक्षा के लिए अब तेरे पास केवल एक ही विकल्प शेष है, कि जिस प्रकार भौंरा पुष्प से लिपटता है तु भी प्रभु श्रीराम के चरण–कमलों से लिपट जा, जैसे तेरा भाई विभीषण लिपटा है। अन्यथा अरे दुष्ट! तु भी श्रीराम के तीर से उसी प्रकार नष्ट हो जाएगा, जिस प्रकार पंतगा आग में जलकर नष्ट होता है।

सुनत सभय मन मुख मुसुकाई। कहत दसानन सबहि सुनाई।।

भूमि परा कर गहन अकासा। लघु तापस कर बाग बिलासा।।

हालांकि पत्र सुनते ही रावण अंदर तक कांप गया। परंतु मुख पर झूठी हंसी लाकर कहने लगा ये तपस्पी (लक्ष्मण) उसी तरह की डींगे हांक रहा है, जैसे

प्रभु भल कीन्ह मोहि सिख दीन्ही। मरजादा पुनि तुम्हारी कीन्ही।।
ढोल गंवार सूद्र पसु नारी। सकल ताड़ना के अधिकारी।।

हे प्रभु! यह अच्छा ही हुआ जो आपने मुझे अपनी मर्यादा बता दी–किंतु हे पालन हार ये जीवों का स्वभाव भी हो आप ही का बनाया हुआ है। सभी वैसा ही आचरण करते है। जैसे ढोलक, मूर्ख, शूद्र (नीच), पशु और स्त्री (स्वच्छंद आचरण)। आप इन सभी को उचित शिक्षा व अनुशासन दीजिये।

प्रभु प्रताप मैं जाब सुखाई। उतरिहि कटुक न मोरि बड़ाई।।
प्रभु अग्या अपेल श्रुति गाई। करौं सो बेगि जो तुम्हरि सोहाई।।

हे प्रभु! अब मैं आपकी वानर–भालु सेना को उस पार पहुंचाने के लिए सूख जाऊंगा इसमें मेरी कोई बड़ाई नहीं है अन्यथा आप जैसा उचित समझें आदेश दीजिये मैं वहीं करूंगा प्रभु का आदेश अटल है वेद भी ऐसा ही कहते हैं।

सुनत विनीत बचन अति कह कृपालु मुसुकाइ।।
जेंहि बिधि उतरै कपि कटकु तात सो कहहु उपाइ।।

सागर के क्षमाचायना व सदाचरण पर श्रीराम ने उसे क्षमा कर दिया और मुस्कराकर पूछा हे भाई! वानर–सेना सकुशल उस पर चली जाये ऐसा कोई उपाय सुझाइये।

नाथ नील नल कपि द्वौ भाई। लरिकाई रिषि आसिष पाई।।
तिन्ह कें परस किएँ गिरि भारे। तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे।।

तब समुद्र बोला हे प्रभु जी! आपकी सेना में ऐसे दो वानर वीर है, जिन्होंने बचपन में ऋषियों से यह आशीर्वाद व वर प्राप्त किया था कि वे जिस किसी शिला या पत्थर को छूएंगे वह समुद्र में तैरने लगेंगे उन दोनों भाईयों का नाम नल व नील हैं।

मैं पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई। करिहउँ बल हनुमान सहाई।।
एहिं बिधि नाथ पयोधि बँधाइअ। जेहि यह सुजसु लोक तिहुँ गाइअ।।

और मैं भी अपनी क्षमतानुसार सहायता दूंगा, इससे आप मुझ पर ऐसा अद्वितीय पुल बनवाइयें की तीनों लोक आपकी कीर्ति देख चकित रह जाये।

एहिं सर मम उत्तर तट बासी। हतहु नाथ खल नर अघ रासी।।
सुनि कृपाल सागर मन पीरा। तुरतहिं हरी राम रनधीरा।।

समुद्र ने कहा मेरे उत्तरी तट पर पापी मनुष्यों का वास है आप बाण उस दिशा में चलाकर उनका नाश कर दीजिये। श्रीराम ने ऐसा ही किया।

देखि राम बल पौरूष भारी। हरषि पयोनिधि भयउ सुखारी।।
सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा। चरन बंदि पाथोधि सिधावा।।

उत्तरी तट के उन दुष्टों के संहार पर समुंद्र अत्यंत प्रसन्न हुआ इसके बाद श्रीराम ने उन दुष्टों के चरित्र का भी वर्णन सागर को सुनाया तत्पश्चात वह

अपने धाम लौट गया।

निज भवन गवनेउ सिंधु श्रीरघपुतिहि यह मत भायऊ।
यह चरित कलि मलहर जथामति दास तुलसी गायंऊ।।
सुख भवन संसय समन दमन विषाद रघुपति गुन गना।
तजि सकल आस भरोस गावहिं सुनहि संतत सठ मना।।

सागर अपने घर लौट गया। उसकी राय प्रभु श्रीराम को अति प्रिय लगी। यह चरित्र कलियुग के सभी पापों का नाश करता है। तुलसीदास इसे स्व बुद्धिनुरूप गाते है। श्रीराम जी के गुण इतने महिमामान है कि संदेह शंकाओं का नाश कर सुख धाम प्राप्त कराते हैं। अतः तुलसीदास जी अपने मन से कहते है अरे मूर्ख! तू संसार का सारा मोह–माया–आशा–निराशा त्याग प्रभु की महिमा गा।

सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान।
सादर सुनहि ते तरहिं भव सिंधु बिना जलजान।।

सभी प्रकार की मंगल कामनाएं व उज्जवल भविष्य से परिपूर्ण है प्रभु श्रीराम का गुणगान जो प्राणी या संसारी जन यह गुणगान सुनेंगे या करेंगे वे बिना कठिन साधना या तपस्या से ही भवसागर तर जाएंगे अर्थात् मोक्ष को प्राप्त करेंगे।

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुष विध्वंसने विमलज्ञानसम्पादनो नाम पञ्चमः सोपानः सुन्दरकाण्ड समाप्त।।

श्रीराम चरित्र मानस का यह पांचवा सोपान "सुन्दर काण्ड" जिसके रचयिता "गोस्वामी तुलसीदास" है, कलियुग के सभी पापों को नष्ट करता है।

"सुन्दर काण्ड समाप्त"।

प्रसिद्ध है। उस गली में स्थित श्री हनुमान का यह मंदिर संपूर्ण बंगाल में प्रसिद्ध है। यहां वर्ष पर्यंत किसी भी समय हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं का जमावड़ा देखा जा सकता है। मंदिर की स्थापना लगभग तीन सौ वर्ष पूर्व एक सन्यासी द्वारा की गई थी। गर्भगष्ह में प्रवेश करते ही मंदिर में स्थापित प्रसन्न मुद्रा में श्री हनुमान की प्रतिमा दर्षष्टिगत होती है जो कि आत्मबल, साहस, शक्ति, अभय शांति की प्रतीक है। यहां का *"हनुमान टेम्पल ट्रस्ट"* सभी सामाजिक वर्गो के उत्थान के विभिन्न कार्यो में संलग्न है।

6. हनुमान गढ़ी

अपने स्वामी श्रीराम की नगरी अयोध्या में सरयू नदी के दाहिने तट पर ऊँचे टीले पर यह मंदिर स्थित है जो *"हनुमान गढ़ी"* के नाम से प्रसिद्ध है। उस टीले पर पहुंचने के लिए साठ सीढ़ियां चढ़नी पड़ती है। यहां स्थापित हनुमान प्रतिमा मात्र छः इंच ऊँची है जो सदैव पुष्प मालाओं से शोभित रहती है। ऐसा माना जाता है कि कैसी ही भीषण व्याधि क्यों न हो मात्र एक बार मंदिर आने व आराधना करने से दूर हो जाती है। एक बार लखनऊ तथा फैजाबाद के नवाब मंसूर अली का बेटा एक असाध्य रोग से पीड़ित था कई नीम–हकीमों से इलाज के उपरांत भी आराम नहीं मिल रहा था अन्नतः वे *"हनुमान गढ़ी"* के हनुमान की शरण में आए व आश्चर्यजनक रूप से कुछ ही दिनों में उनका बेटा पूर्णतः स्वस्थ हो गया। इससे प्रभावित हो उन्होंने 52 (बावन) बीघा भूमि मंदिर परिसर के लिए भेंट दी व श्रद्धालुओं के लिए अन्य सुविधाओं की व्यवस्था की। हिन्दओं व अन्य सभी संप्रदायों के लिए यह स्थल अत्यंत ही महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है।

7. हनुमान धारा (चित्रकूट)

सीतापुर से तीन मील दूर व कोटितीर्थ से पहाड़ के ऊपर ही ऊपर दो मील जाने पर *"हनुमान धारा"* मिलती है। यह पवित्र तीर्थ स्थल पर्वतमाला के ठीक बीच में स्थित है। यहां की प्राकृतिक छटां व सुरम्य स्थिति अवर्णनीय है। विशाल हनुमान प्रतिमा जो कि पहाड़ के सहारे टिकी है इनके भल पर दो जल कुण्ड है जो निरंतर बहते रहते है जो जल हनुमान प्रतिमा को छूता रहता है इसी कारणवश इसे *"हनुमानधारा"* नाम दिया गया है।

इस स्थान की स्थापना के बारे में जो किवंदती जन सामान्य में व्याप्त है वह यह कि *"भगवान श्रीराम के राज्याभिषेक"* के पश्चात हनुमान जी ने अपनी समस्या प्रभु राम के समक्ष रखते हुए कहा *"हे प्रभु! मुझे कोई ऐसा स्थान बतलाइए जहां लंका–दहन से उत्पन्न मेरे शरीर का ताप मिट सके, तब प्रभुराम ने उन्हें यह स्थान बतलाया"*। यहां की प्राकृतिक स्थितियां ऐसी है कि यहां किसी भवन का निर्माण नहीं किया जा सकता परंतु कुछ धर्मात्मा मनुष्यों ने श्रद्धालुओं के लिए प्रतिमा के समीप ही एक दालान बनवा दी है जिस पर श्रद्धालु विश्राम से कुछ घड़ी बैठते है।

हनुमान पंचक

इसकी रचना महाकवि श्री चतुरसिंह ने की थी। वे हिन्दी, संस्कृत, राजस्थानी आदि अनेक भाषाओं के मर्मज्ञ विद्धान थे। मेवाड़ में मीरा के पश्चात् चतुरसिंह को ही लोकप्रिय कवि के रूप में माना जाता है। आज भी उनकी मेवाड़ी रचनाएं मेवाड़ के घर–घर में गाई जाती हैं।

दोहाः– संचक सुख कंचक कवच पंचक पूरन बान।
रंचक रंचक कश्ट ना हनुमत पंचक जान।।

मत्तगयंद छंद

ग्राहि नसहि पठाहि दिवदेवमहाहि सराहि सिधारी।
वीर समीरन श्री रघुवीरन धीरहिं पीर गम्भीर विदारी।।
कंद अनंद सुअंजनिनंद सदा खलवष्दन मंदजहारी।
भूधर को घर के कर ऊपर निर्जर केजुद की जरी जारी।।1।।
बालि सहोदर पालि लयो हरि कालि पतालिहु डालि दई है।
भालि मरालिसि सीय करालि बिडालि निषालि बिहालि भई है।।
डालि डरालि महालिय राय गजालिन चालि चपेट लई है।
ख्यालिहिं षालि दई गंध कालि कपाल उत्तालि बहालि गई है।।2।।
आसुविभावसु पासु गए अरू तांसु सुहासु गरासु धरयो है।
अच्छ सुबच्छन तच्छन तोरि स रच्छन पच्छन पच्छ कर्‌यो है।।
आर अपार कु कार पछार समीर कुमार भर्‌यो हैं।
को हनुमान् समान जहान बखानत आज अमान भर्‌यो है।।3।।
अंजनि को सुत भंजन भीरन सज्जन रंजन पंज रहा है।
रूद्र समुद्रहि धुद्र कियो पुनि क्रुद्ध रसाधर ऊर्द्ध लहा है।।
मोहिन ओप कहो पतऊ तुब जोप दया करू तोप कहा हे।
गथ्थ अकथ्थ बनत्त कहा हनुमत्त तु हथ्थ समथ्थ सहा है।।4।।
भान प्रभानन कै अनुमान गए असमान बिहान निहारी।
खान लग मधवानहु को सुकियो अपमान गुमानहिं गारी।।
प्राण परान लगे लच्छमानतु आनन गानपती गिरधारी।
बान निवाय सुजान महानसु है हनुमान् करान हमारी।।5।।

दोहाः– बसुदिषि औं पौराण दष इक इक आधे आन।
सित नवमी इश इंदु दिन पंचक जन्म जहान।।

श्रीराम-स्तुति

श्री रामचन्द्र कृपालु भज मन हरण भवभय दारूणं।
नवकंच लोचन कंज–मुख, कर–कंज पद कंजारूणं।।
कंटर्प अगणित अमित छवि, नवनील नीरद सुन्दरं।
पट पीत मानहु तड़ित रूचि शुचि नौमि जनक सुतावंर।।
भजु दीनबन्धु दिनेस दानव दैत्यवंश निकंदनं।
रघुनंद आनन्दकन्द कौशलचन्द दशरथनन्दनं।।
सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारू उदार अंग विभूषणं।
आजानु भुज शर–चाप–धर, संग्राम–जित खरदूषणं।।
इति वदति तुलसीदास, शंकर–शेष–मुनि–मन रंजनं।
मम ह्रदय कंज निवास कुरू, कामादि खलदल गंजनं।।
मन जाहिं राचेउ मिलिहि सो वर सहज सुन्दर सांवरो।
करूणा निधान सुजान सील सनेह जानत रावरो।।
एहि भाँति गौरि असीम सुनि सिय सहित हिय हरषित अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मन्दिर चली।।

सोरठा

जानि गौरि अनुकूल, सिय हिय हरषु न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल, बाम अंग फरकन लगे ।।

दोहा

ध्यान राम को धरउँ चित, मुद मंगल दातार ।
लखण जानकी सहित नित, प्रनवउँ पवन कुमार।।

हनुमान बाहुक

छप्पय

सिंधु तरन, सिय–सोच हरन, रबि बाल बरन तनु।
भुज बिसाल, मूरति कराल कालहु को काल जनु।।
गहन–दहन–निरदहन लकं निःसंक, वकं, भुव।
जातुधान–बलवान –मान–मददवन पवर सुव।।
कह तुलसीदास सेवत सुलभ, सेवन हित संतत निकट।
गुन गनत, नमत, सुमिरत, जपत, समन सकल संकट विकट।।
स्वर्न सैल संकास कोटि रवि तरून तेज धन।
उर बिसाल भुज दण्ड चंद्र नख बज्र बजतन।।
पिंग नयन भष्कुटी कराल रसना दसानन।
कपिल केस करकमस लंगूर खल दल बल भानन।।

कह तुलसीलदास बस जासु उर मारूत सुत मूरति बिकट ।
संताप पाप तेहि पुरूष पहिं सपनेहुं नहिं आवत निकट।।

झूलना

पंचमुख, छः मुख भष्गु मुख्य भट असुर सुर,
सर्वसरि समर समरत्थ सूरो।
बांकुरो बीर बिरूदैत बिरूदावली,
बेद बंदी बदत पैजपूरो।।
जासु गुनगाथ रघुनाथ कह, जासुबल,
बिपुल जल भरित जग जलधि झूरो।
दुवन दल दमन को कौन तुलसीस है,
पवन को पूत रजपूत रूरो।।

धनाक्षरी

भानुसों पढ़न हनुमान गए भानुमन,
अनुमानि सिसु केलि कियो फेर फारसो।
पाछिले पगनि गम गगन मगन मन,
क्रम को न भ्रम, कपि बालक बिहार सो।।
कौतुक बिलोकि लोकपाल हरिहर विधि,
लोचननि चकाचौंधी चित्तनि रणभार सो।
बल कैंधों बीर रस, धीरज कै, साहस कै,
तुलसी शरीर धरे सबनि को सार सो।
भारत में पारथ के रथ केथू कपिराज,
गाज्यो सुनि कुरूराज दल हल बल भो।
कह्यो द्रोन भीषम समीर सुत महाबीर,
बीर–रस–बारि–निधि जाको बल जल भो।।
नाई–नाई–माथ जोरि–जोरि हाथ जोधा जो हैं,
हनुमान देखे जगजीवन को फल भो।
गोपद पयोधि करि, होलिका ज्यों लाई लंक,
निपट निसंक परपुर गल बल भो।
द्रोन सो पहार लियो ख्याल ही उखारिकर,
कंदुक ज्यों कपि खेल बेल कैसो फल भो।।
संकट समाज असमंजस भो राम राज,
काज जुग पगनि को करतल पल भो।
साहसी समत्थ तुलसी को नाई जा की बांह,
लोक पाल पालन को फिर थिर थल भो।।
कमठ की पीठि जाके गोनि की गाड़ैं मानो,
नाप के भाजन भरि जल निधि जल भो।

जाधुधान–दानव परावन को दुर्ग भयो।
महा मीन बास मिति तोमनि को थल भो।।
कुंभकरन रावन पयोदनाद ईंधन को,
तुलसी प्रताप जाको प्रबल अनल भो,
भीषम कहत मेरे अनुमान हनुमान,
सारिखो त्रिकाल न त्रिलोक महाबल भो।
दूत राम राम को सपूत पूत पौन को, तू
अंजनी को नंदन प्रताप भूरि भानु सो।
सीय सोच समन, दुरित दोष दमन,
सरन आये अवन लखन प्रिय प्राण सो।
दसमुख दुसह दरिद्र दरिबे को भयो,
प्रकट तिलोक ओक तुलसी निधान सो।
ज्ञान गुनवान बलवान सेवा सावधान,
साहेब सुजान उर आनु हनुमान सो।।
दवन दुवन दल भुवन बिदित बल,
बेद जस बावत बिबुध बंदी छोर को।
पाप ताप तिमिर तुहिन निघटन पटु,
सेवक सरोरूह सुखद भानु भोर को।।
लोक परलोक तें बिसोक सपने न सोक,
तुलसी के हिये है भरोसो एक ओर को।
राम को दुलारो दास बादेव को निवास,
नाम कलि कामतरू केसरी किसोर को।।
महाबल सीम महा भीम महा बानइत,
महाबीर बिदित बरायो रघुबीर को।
कुलिस कठोर तनु जोर परै रोर रन,
करूना कलित मन धारमिक धीर को।।
दर्जन को कालसो कराल पाल सज्जन को,
सुमिरे हरन हार तुलसी की पीर को।
सीय सुख दायक दुलारो रघुनायक को,
सेवक सहायक है साहसी समीर को।।
रचिबे को बिधि जैसे पालिबे को हरिहर,
मीच मारिबे को, ज्याईबे को सुधापान भो।
धरिबे को धरनि, तरनि तम दलिबे को,
सोखिबे कृसानु, पोषिबे को हिम भानु भो।।
खल दुख दोषिबे को, जन परितोषिबे को,
मांगिवो मलीनता को मोदक सुदान भो।

आरत की आरति निवारिबे को तिहुं पुर,
तुलसी को साहेब हठीलो हनुमान भो।।
सेवक स्योकाई जानि जानकीस मानै कानि,
सानुकूल सूलपानि नवै नाथ नांक को।
देवी देव दानव दयावने है जोरैं हाथ,
बापुरे बराक कहा और राजा रांक को।।
लागत सोवन बैठ बागत बिनोद मोद,
ताके जो अनर्थ सो समर्थ एक आंक को।
सब दिन रूरो परै पूरो जहां तांह ताहि,
जाके है भरोसो हिये हनुमान हांक को।।
सानुग सगौरि सानुकूल सूलिपानि ताहि,
लोकपाल सकल लखन राम जानकी।
लोक परलोक को बिसोक सो तिलोक ताहि,
तुलसी तमाइ कहा काहू बीर आनकी।।
केसरी किसोर बंदीछोर के नेवाजे सब,
कीरति बिमत कपि करूनानिधान की।
बालक ज्यों पालिक हैं कृपालु मुनि सिद्धता को,
जाके हिये हुलसति हांक हनुमान की।।
करूनानिधान बलबुद्धि के निधान, मोद
महिमा निधान गुनज्ञान के निधान हौ।
बाम देव रूप भूप राम के सनेही, नाम,
लेत देत अर्थ धर्म काम निरबान हौ।।
अपने प्रभाव, सीता नाथ के सुभाव सील,
लोक बेद विधि के बिदूष हनुमान हौ।
मन की बचन की करम की तिहुं प्रकार
तुलसी तिहारो तुम साहेब सुजान हौ।।
मन को अगम तन सुगम किये कपीस,
काज महाराज़ के समाज साज साजे हैं।
देवबदी छोर रनरोर केसरी किसोर,
जुग जुग जग तेरे बिरद बिराजे हैं।।
बीर बरजोर घटि जोर तुलसी की ओर,
सुनि सकुचाने साधु खलगन गाजे हैं।
बिगरी संवार अंजनी कुमार कीजे नोहिं,
जैसे तोत आये हनुमान के निवाजे हैं।।

सवैया

जान सिरोमनि हो हनुमान सदा जन के मन बास तिहारो।
ढारो बिगारो मैं काको कहा केहि कारन खीझत हौं तो तिहारो।।
साहेब सेवक हाते ते नातो कियो सो तहां तुलसी को न चारो।
दोष सुनाये तैं आगेहुं को होशियार हैं हों मन तो हिय हारो।।
तेरे थपै उथपै न महेस, थपै थिर को कपि जे घर घाले।
तेरे निवाजे गरीब निबाज बिराजत बैरिन के उर साले।।
संकट सोच सबै तुलसी लिये नाम फटै मकरी के से जाले।
बूढ भये लि मेरिहिं बार, कि हारि परे बहुतै नत पाले।।
सिंधु तरे, बड़े बीर दले खल, जारे हैं लंक से बंक मवासे।
तैं रनि केहरि केहरि के बिदले अरि कुंजर छेल छवासे।।
तोंसो समत्थ सुसाहेब सेई सहै तुलसी दुख दोष दवा से।
बानरबाज! बढ़े खल खेचर, लीजत क्यों न लपेटि लवासे।।
अच्छ विमर्दन कानन भानि दसानन आनन भा न निहारो।
बारिदनाद अंकपन कुंभकरन्न से कुंजर केहरि वारो।
राम प्रताप हुतासन, कच्छ, विपच्छ, समीर समीर दुलारो।
पाप ते साप ते ताप तिहूं तें सदा तुलसी कह सो रखबारो।।

धनाक्षरी

जानत जहान हनुमान को निवाज्यो जन,
मन अनुमानि बलि बोल न बिसारिये।
सेवा जोग तुलसी कबहुं कहा चूक परी,
साहेब सुभाव कपि साहिबी संभारिये।।
अपराधी जानि कै सासति सहस भान्ति,
मोदक मरै जो ताहि माहुर न मारिये।
साहसी समीर के दुलारे रघुबीर जू के,
बांह पर महाबीर बेगि ही निबारिये।।
बालक बिलोकि, बलि बारें तें आपनो कियो,
दीनबन्धु दया कीन्हीं निरूपाधि न्यारिये।
रावरो भरोसो तुलसी के, रावरोई बल,
आस रावरीयै, दास रावरो विचारिये।।
बडो बिकराल कलि काको न बिहाल लियो,
माथे पगु बलिको निहारि सो निर्बारिये।
केसरी किसोर, रनरोर, बजजोर बीर,
बांह पीर राहु ातु ज्यौं पछारि मारिये।।
उथपे थपनथिर थपे उथपनहार,
केसरी कुमार बल आपनो संभारिये।

राम के गुलामनि को काम तरू रामदूत,
मोसे दीन दूबरे को तकिया तिहारिये।।
साहेब समर्थ तोसों तुलसी के माथे पर,
सोऊ अपराध बिनु बीर, बांधि मारिये।
पोखरी बिसाल बांहु, बलि, बारिचर पीर,
मकरी ज्यों पकरि के बदल बिदारिये।।
राम को सनेह, राम साहस लखन सिय,
राम की भगति, सोच संकट निबारिये।
मुद मरकट रोग बारिनिधि हेरि हारे,
जीव जामवंत को भरोसो तेरो भारिये।
कूदिये कृपाल तुलसी सुप्रेम पब्बयतें,
सुथल सुबेल भालू बैठि कै बिचारिये।
महाबीर बांकुरे बराकी बांह पीर क्यों न,
लंकिनी ज्यों लात धात ही मरोरि मारिये।।
लोक परलोक हुं तिलोक विलोकियत,
तोसे समरथ चष चाहिरूं निहारिये।
कर्म, काल लोकपाल, अग जग जीवजाल,
नाथ हाथ सब निज महिमा बिचारिये।।
खास दास रावो, निवास तेरो तासु उर,
तुलसी सो, देव दुखी देखिअत भारिये।
बात तरूमूल, बांहूसूल कपिकच्छु बेलि,
उपजी सकेलि कपि केलि ही उखारिये।।
करम कराल कंस भूमिपाल के भरोसे,
बकी बर भगिनी काहू तें कहा डरैगी।
बड़ी बिराल बाल धातिनी न जात कहि,
बांहूं बल बालक छबीले छोटे छरैगी।।
आई है बनाई बेष आप ही बिचारि देख,
पा जाय सब को गुनी के पाले परैगी।।
पूतना पिसाचिनी ज्यौं कपि कान्ह तुलसी की,
बांह पीर महाबीर तेरे मारे मरैगी।।
भाल की कि काल की कि रोष की त्रिदोष की है,
बेदन बिष पाप ताप छल छांह कीं
करमन कूट की कि जन्त्र मंत्र बूट की,
पराहि जाहि पापिनि मलीन मन मांह की।।
पैहहि सजाय, नत कहत बजाय तोहि,
बाबरी न होहि बानि जानि कपि नांह की।

आन हनुमान की दुहाई बलवान की,
सपथ महाबीर की जो रहै पीर बांह की।।
सिंहिका संहारि, बल सुरसा सुधारि छल,
लंकिनी पछारि मारि बाटिका उजारी है।
लंक परजारि मकरी बिदारि बार बार,
जातुधान धारि धूरि धानी करि डारी है।।
तोरि जमकातरि मंदोदरी कठोरि आनी,
रावन की रानी मेघनाद मंहतारी है।
भीर बांह पीर की निपट राखी महाबीर,
कौन के सकोच तुलसी के सोच भारी है।।
तेरो बालि केलि बीर सुनि सहमत धीर,
भूलत सरीर सुधि सक्र रवि राहु की।
तेरी बांह बसत बिसोक लोक पाल सब,
तेरो नाम लेत रहै आरति न काहु की।।
साम दाम भेद विधि बेदहू लबेद सिधि,
हाथ कपिनाथ ही के चोंटी चोर साहु की।
आलस अनख परिहास कै सिखवन है,
एते दिन रही पीर तुलसी के बाहु की।।
टूकनि को घर घर डोलत कंगाल बोलि,
बाल ज्यों कृपाल नत पाल पालित पोसो है।
कीन्ही है संभार सार अंजनी कुमार बीर,
आपनो बिसारि हैं न मेरे हू भरोसो है।।
इतनो परेखें सब भान्ति समरथ आजु,
कपिराज सांची कहौं को तिलोक तोसो है।
सासति सहत दास कीजे पेखि परिहास,
चीरी को मनरन खेल बालकनि कोसो है।।
आपने ही पापतें त्रितापतें, कि जाति है।
औषध अनेक जन्म मन्त्र टोटकादि किये,
बादि भये देवता मनाये अधिकाति है।।
करतार, भरतार, हरतार, कर्म काल,
को है जगजाल जो न मानत इताति है ।
चेरो तेरो तुलसी तू मेरो कहो राम दूत,
ढील तेरी बीर मोहि पीरतें पराति है।।
दूत राम राय को, सपूत पूत वाय को,
समत्थ हाथ पाय को सहाय असहाय को।
बांकी बिरदावली बिदित बेद गाइयत,

तुलसी गुसांई भयो भोंडे दिन भूल गयो,
ताको फल पावत निदान परिपाक हौं।।

असन बसन हीन विबषम बिषाद लीन,
देखि दीन दबरो करै न हाय हाय को।
तुलसी अनाथ सो सनाथ रघुनाथ कियो,
दियो फल सील सिंधु आपने सुभाय को।।
नीच यहि बीच पति पाइ भरू हाईगो,
बिहाइ प्रभु भंजन बचन मन काय को।
तातें तनु पेषियत घोर बरतोर मिस,
फूटि फूटि निकसत लोन ाम राय को।।
जीओ जग जानकी जीवन को कहाइ जन,
रिबे को बारानसी बारि सुर सरि को।
तुलसी के दुहूं हाथ मोदक हैं ऐसे ठाऊं,
जाके जिये मुये सोच मरिहैं न लरिको।।
मो को झूंटो सांचो लोक राम कौ कहत सब,
मेरे मन मान है न हर को न हरि को।
भारी पीर दुसह सीरतें बिहाल होत,
सोऊ रघुबीर बिनु सकै दर करि को।।
सीतापति साहेब सहाय हनुमान नित,
ति उपदेस को महेस मानो गुरू कै।
मानस बचन काय करन तिहारे पांय,
तुम्हरे भरोसे सुर मैं न जाने सुर कैं।।
ब्याधि भूत जनित उपाधि काहु खल की,
समाधि की जै तुलसी को जानि जन फुर कै।
कपिनाथ रघुनाथ भोलानाथ भूतनाथ,
रोग सिंधु क्यों न डारियत गाय खुर कै।।
कहों हनुमान सों सुजान रामराय सों,
कृपानिधान संकर सों सावधान सुनिये।
हरष विषाद राग रोष गुन दोष मई,
बिरची बिरंचि सब देखियत दुनिये।।
माया जीवन काल के करम के सुभाय के,
करैया राम बेद कहें सांची मन गुनिये।
तुम्हतें कहा न होय हा हा सो बुझैये मोहि,
हौंहूं राहों मौन ही क्यो सो जानि लुनिये।।

"तुलसीदास कृत हनुमान बाहुक समाप्त"

सम्वत् 1664 विक्रमाब्द के लगभग गोस्वामी तुलसीदास जी को बाहुओं में वात व्याधि की गहरी पीड़ा उत्पन्न हो गई थी, फोड़े–फुंसियों के कारण सारे शरीर में असहाय पीड़ा होती थी। औषधि प्रयोग यंत्र, मंत्र प्रयोग आदि सभी उपाय करके स्वामी जी हार गए थे किंतु दर्द घटने की बजाय बढ़ता ही गया था, अंत में उसकी निवृति के लिए गोस्वामी ने हनुमान जी की वंदना प्रारंभ की। अंजनी कुमार की कृपा से उनकी सारी व्यथा नष्ट हो गई। यह उनके द्वारा रचित वही 43 पद्यों का प्रसिद्ध हनुमान बाहुक है। असंख्य हनुमान भक्त निरंतर इस स्तोत्र का पाठ करते हैं और अपने मनोवांछित मनोरथों को प्राप्त करके प्रसन्न होते हैं। इस सद्यः फलदायक स्तोत्र का श्रद्धापूर्वक पाठ करना राम भक्तों के लिए परमानंद दायक सिद्ध हुआ है।

आयुर्वेद के अनुसार वात, पित्त और कफ दोष मुख्य हैं। इन तीनों में वात ही प्रधान है। संसार के सारे कार्य वायु द्वारा ही संपन्न होते है। जीवधारियों के शरीर का संपूर्ण पोषण क्रम वायु द्वारा ही होता है। हनुमान जी पवन पुत्र हैं अतः वे वायु स्वरूप और प्रधान वायु के अधिष्ठाता हैं।

वात के अधिष्ठाता होने के कारण हनुमान जी की आराधना से संपूर्ण वात व्याधियों का नाश होता है। श्रीराम भक्त हनुमान जी सभी रोगों को नष्ट करने वाले हैं क्योंकि प्रत्येक रोग का दोष वायु के माध्यम से ही उत्पन्न होता है। यदि वात शुद्ध रूप से स्थित हो तो मनुष्य प्रायः निरोग रह सकता है।

जो असाध्य रोगी हैं और जीवन से हताश हो गए हैं उन्हें श्री कपीश्वर की आराधना अवश्य करनी चाहिए। वात व्याधि के लिए श्री पवन कुमार की उपासना एवं उनके मंत्रों का जप विशेष रूप से लाभप्रद होता है।

नासै रोग हरै सब पीरां जपत निरंतर हनुमान बीरा।।

यह कथन तुलसीदास जी का असत्य नहीं हैं।

हनुमान ज्योतिष

श्री हनुमान ज्योतिष

"हनुमान ज्योतिष" जैसा खंड इस पुस्तक में जुड़ जाने से यह ग्रंथ अद्वितीय बन गया है, सामान्य जन मानस में ***"हनुमान–ज्योतिष"*** लोकप्रिय नहीं हो पाया है इसका कारण है कि *"तथाकथित"* ज्ञानीजन इस अनुपम विद्या का प्रयोग स्वयं तक ही सीमित रखते थे। इस परम्परा को तोड़ते हुए ***"हनुमान ज्योतिष"*** को सुधि पाठकों तक पहुंचाते हुए मुझे अत्यंत ही संतोष का अनुभव हो रहा है।

प्रत्येक व साधारणतम मनुष्य के निकटतम संबंधों को ज्योतिष से जोड़ने के उद्देश्य से अत्यंत ही सरल व स्पष्ट शब्दावली का प्रयोग किया गया है।

अपने विशेष प्रयोजन के लिए इस ज्योतिष विद्या का प्रयोग ऐसे करें उदाहरणस्वरूप आप धन चिंता कर रहे है व इस संबंध में अपनी शंकाओं का समाधान चाहते है सो *"धनचिंता परीक्षा"* वाले चक्र में नैत्र मूंदकर मन में स्मरण कर तर्जनी स्थापित करें, मान लीजिये आपकी अंगुली कामदेव पर आती है तो आप पीछे दी गई ***"कामदेव कथनम्"*** सारणी में चार संख्या वाला कथन देंखे।

श्री रामचन्द्र उवाच

ऋष्यमूकगिरौ रामो हनुमन्तं स्म पच्छति।
सूर्यात्किं पठितं शिष्य तत्सर्वं कथयस्व मे।।

ऋष्यमूक नामक पर्वत पर श्रीरामचंद्र ने हनुमान जी से प्रश्न किया कि हे हनुमान! हमें उस विद्या के बारे में बताओं जो तुमने सूर्य के पास जाकर ग्रहण की हैं।

श्री हनुमानुवाच

सर्वशास्त्रं मया ज्ञातम् वेदान्तादि यथाविधि।
ज्योतिः शास्त्रं सर्वफलं किं वदामि तव प्रभो।।

तब उत्तर स्वरूप श्री हनुमान बोले कि हे रघुपति! मैं वेदांत के साथ ही अन्य सभी शास्त्र भी विधि पूर्वक सविस्तार पढ़ आया हूँ। इन सभी विद्याओं में ज्योतिष विद्या अधिक सुफलदायी है, आप जो कहें मैं उस शास्त्र पर प्रकाश डाल देता हूँ।

श्री रामचन्द्र उवाच

श्रीराम चंद्र जी बोले, सभी शास्त्रों में केवल वाद–विवाद के अन्यथा कुछ नहीं। ज्योतिषशास्त्र, भविष्यता अर्थ बोध के निमित्त है। यह शास्त्र भविष्य को उद्घाटित करता है अतः तुम ज्योतिष शास्त्र के बारे में ही बतलाओं हनुमान।

श्री हनुमानुवाच

श्रीराम चंद्र की वाणी सुन हनुमान जी भविष्यत् अर्थ ज्ञान वाले ज्योतिष शास्त्र के बारे में बतलाने लगे। हे प्रभु सुनिये–

दशकोश्ठं–समालिख्य चक्रं नामयुतं पुनः
आद्य वर्णस्वरो ग्राह्यो भविष्यति सुनिश्चितम्।।

दश कोठे वाली चक्राकृति बनाकर पुनः नाम लिखने तथा उस कोष्ठ में जो नाम लिखा हो उसके आदि वर्ण से आदि स्वर से भविष्यत् जो फल होगा, वह फल निश्चित जाना जा सकता है।

अथ चक्रसंग्रह

गमनागमनञैवकृषि र्व्यापार एव च। गङ्गा प्राप्तिश्च रोगैर्हि मष्त्युचिंता तथैव च।।सेवासाहित्यवासश्च तन्त्रीचिंता धनस्य च। मनः काम तथा रोगो धनोत्पत्तिकर स्तथा।। वादो विवादः सङ्गश्च युद्धं मेलनमेव च। यात्रै प्राप्तिश्च विश्वासस्थानं नष्टनिधिस्तथा।।ग्राहको भीति गर्भो च चिन्ता बन्धनमेव च। विश्वासविद्यादूताश्र संबंधों राज्यमेवच। सन्तानसत्रयोद्वाहा विक्रयप्रणयौ तथा कुशलं च क्रमेणैषां चक्राण्युक्तानि नामभिः। चक्रकोष्ठेंऽगुलिं स्थाप्य कुर्यादत्र परीक्षणम्।।

प्रस्थान व यात्रादि के लिए व अन्य कार्यो के लिए जो चक्र दिखाये गए है, उन चक्रों में बने कोष्ठकों में विभिन्न नाम लिखे है। जो व्यक्ति अपने कार्य

विशेष के परिणाम के बारे में जानने का इच्छुक हो तो उस कार्य विशेष चक्र के नामों पर आंखे मूंदकर अंगुली स्थापित करें। जो नाम आए उस नाम की सारणी व संख्यानुसार अपने कार्य परिणाम के बारे में जाना जा सकता है।

अथ मश्त्युचिंता परीक्षा
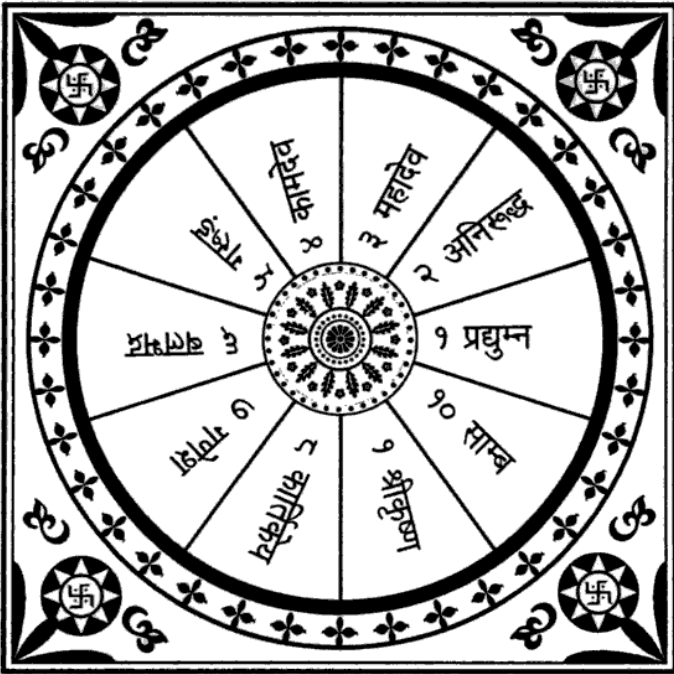
मष्त्यु चिन्तापरीक्षायमितस्तच्चिन्तयेद् बुधः। गरूडः शंकरश्चैवगणेशः कार्तिकस्तथा। श्री कृष्ण श्चापि प्रघुमने बलभदश्च सांबकः। अनिरूद्ध कामदेव एभ्यः स्यान्मष्त्युनिश्चयः।।

जो मनुष्य अत्यंत ही गंभीर रोग से पीड़ित हो। इस सम्बंध में समाधान मष्त्यु या नवजीवन के बारे में जानने के लिए उपरोक्त चक्र में अंगुली स्थापित करें व परिणाम जाने।

अथ धनचिंता परीक्षा

प्रघुम्नो ह्यनिरूद्धञ महादेवो रीतश्वरः। गरूडो बलभद्रच्श्र गणेशः कार्तिकस्तथा ।। श्रीकृष्णसाम्बौ कथितौ जानीयाच्य शुभाशुभम्।।

जिस किसी मनुष्य को धन के सम्बंध में किसी प्रकार की चिन्ता हो, या धन प्राप्त करना चाहता हो वह इस चक्र में अंगुली रख अंक के अनुरूप फल जान सकता है।

अथधनागमन परीक्षा
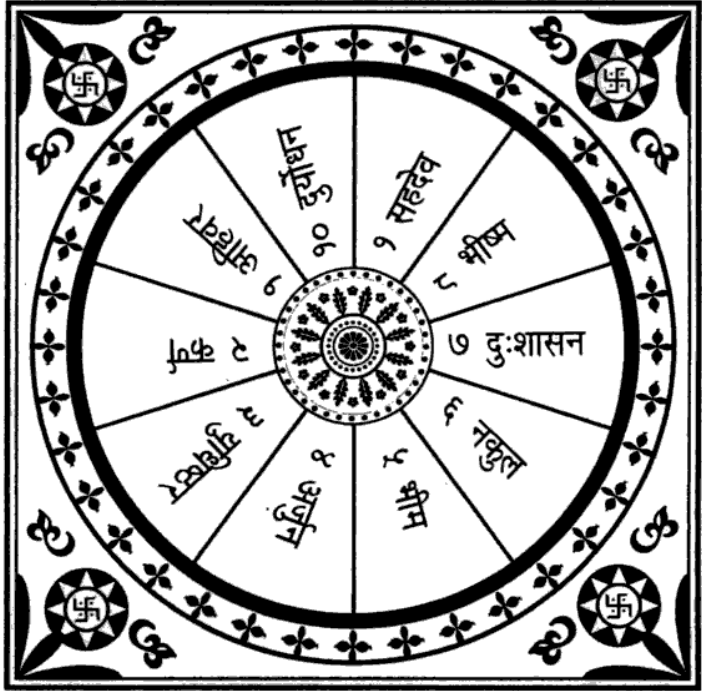
गणेशः कार्तिकेयच्श्र श्री कृष्णों बलभद्रकः। प्रघुम्नो ह्यनिद्धच्श्र साम्बो वै मीनकेतनः। गरूडच्श्र महादेवः क्रमात्सर्वं विचारयेत्।।

जो व्यक्ति अपने रोजगार साधन को लेकर चिंतित हो वह रोजगार के बारे में अपनी शंका का समाधान अंगुली स्थापित कर नाम के अनुरूप संख्या से फल जान सकता है।

अथ विवाद परीक्षा
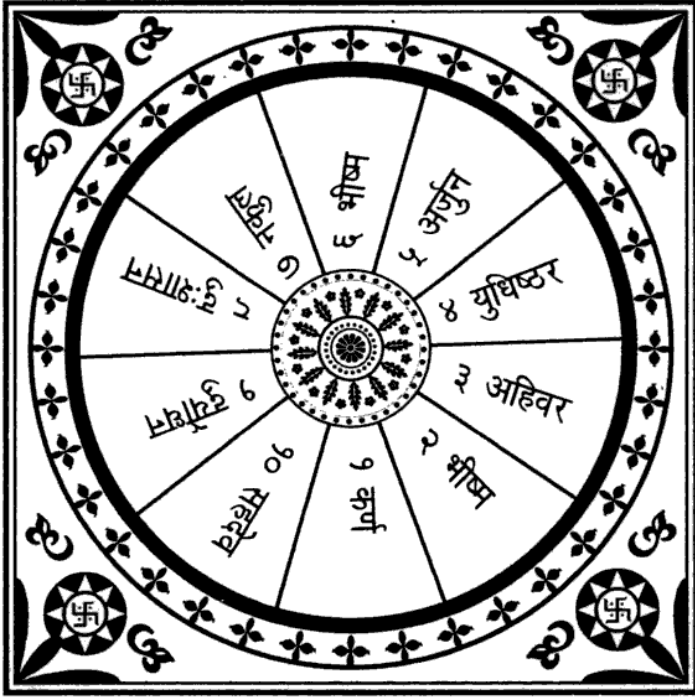
अहीश्वरच्श्रराधयो धर्मराजोऽर्जुनस्तथा। भीमच्श्र नकुलश्रैव तथा दुःशासनः स्मष्तः।।
गांगेयः सहदेवच्श्र तथा दुर्योधनो मतः। शुभाशुभं फलं तेषां क्रमपूर्वं विचरयेत्।।

किसी भी प्रकार के वाद–विवाद व मुकदमें में फंसा मनुष्य यदि वाद–विवाद के फल को जानना चाहता है तो वह इस चक्र द्वारा अपने कार्य के परिणाम को जान सकता है इस हेतु अंगुली स्थापित करें।

अथ युद्ध परीक्षा

कर्णो गङ्गाकुमारोप्यहिवरश्च युधिष्ठिरः। अर्जुनो भीमसेनो नकुलो दुःशासनस्तथा। दुर्योधन सहदेव एभिः फलमुदाहरेत्।।

जो क्षत्रिय या वीर पुरूष युद्ध भूमि में जाने को है तो वह भावी रणनीति के लिए उपरोक्त मंत्र में अंगुली स्थापित कर यह जान ले कि क्या रणनीति लाभकारी होगी।

अथ मेलन परीक्षा
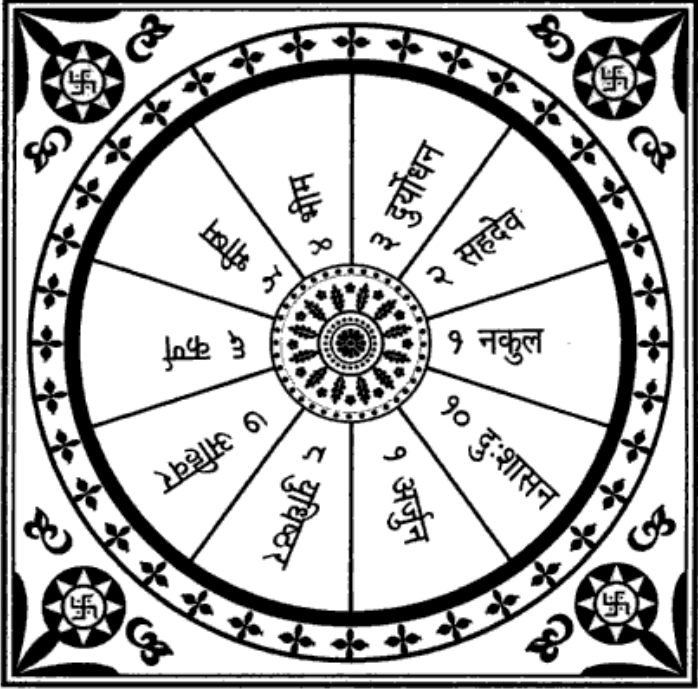
दुःशासनोह्यर्जुनश्च्श्र गांगेयो नकुलस्तथा। सहदेवो धर्मराजो दुर्योधनवष्कोदरौ।।
अहीच्श्ररस्तथा कर्णः क्रमादेतैर्विचारयेत्।।

जो कोई किसी प्रिय या अन्य इच्छित व्यक्ति के मिलन के समय के बारे में जानना चाहता हो उपरोक्त चक्र में अंगुली स्थापित कर नामानुरूप सारणी में संख्या देखें व फल जाने।

अथ प्राप्ति परीक्षा

नकुलः सहदेवच्श्रदुर्योधनवष्कोदरौ। गंगापुत्रः कर्ण देवोऽहिधर्मोऽर्जुन एव च।।
दुःशासनच्श्र दशभि रेतत्सर्वमुदाहरेत्।।

यह चक्र व्यक्ति को किसी वस्तु विशेष की प्रापित के बारे में पूर्व सूचना देने में सहायक हे इस हेतु व्यक्ति अंगुली रखकर चक्र के नाम व अंक के द्वारा वस्तु की प्राप्ति के बारे में जान सकता है।

अथ शंका परीक्षा
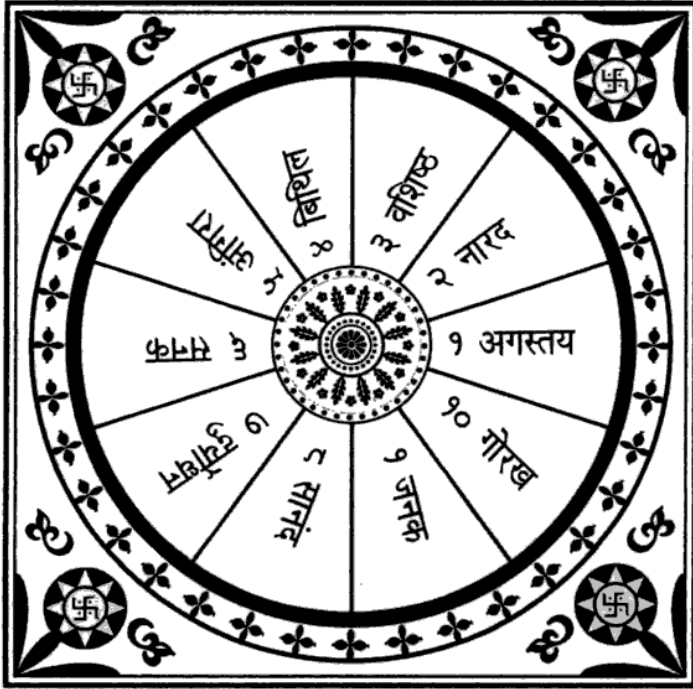
अर्जुनो भीमसेनच्श्र यमौ दुर्योधनस्तथा। दुःशासनच्श्र गांगेयराधेयो च युधिष्ठिर :।। अहीश्वरः क्रमादेतः फलं चक्रे विचारयेत्।।

जिस किसी सज्जन को किसी बात, व्यक्ति या स्थान के बारे में संदेह घेरे हुए हो, वह इस चक्र में अंगुली स्थापित कर परिणाम द्वारा अपनी शंका का समाधान कर सकता है।

अथ स्वस्थान परीक्षा
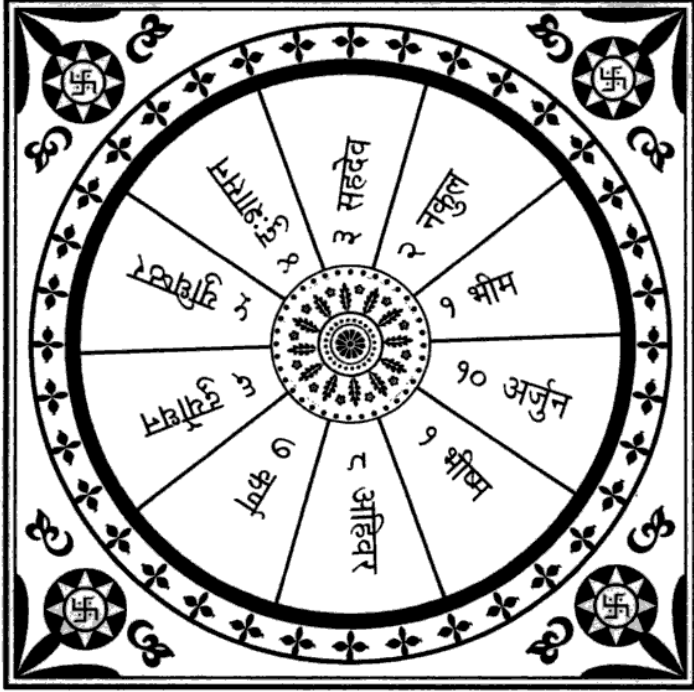
अगस्त्यो नारदश्चैव वसिष्ठो बिथिलस्तथा। अङ्गि रा: सनको दुर्वासा: सानन्दक एव च।। जनको गोरखश्चैव जानीयात्तै:शुभाशुभम्।।

जो मनुष्य स्व स्थान या स्वभूमि के बारे में कोई आशंका रखता है। कहीं अन्यंत्र जाने या वापस लौटने का विचार करता है तो इस चक्र द्वारा वह अपनी सभी समस्याओं का समाधान अंगुली स्थापित कर फलाफल जान कर सकता है।

अथ नष्टद्रव्य परीक्षा
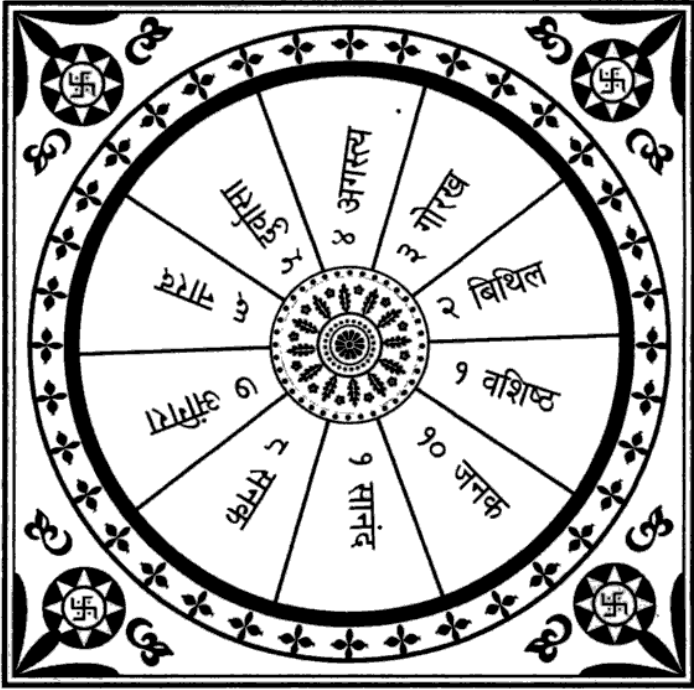
भीमच्श्र माद्रीतनयौ दुःशासन युधिष्ठिरौ। दुर्योधनच्श्र राधेयोऽहीश्वर च्श्र सरिज्जनुः।।
सव्यवसाची च दशमः क्रमात्सर्वं फलंवदेत्।।

जिस व्यक्ति का द्रव्य या मुद्रा खो गई हो या अन्य कारण वश नहीं मिल रही हो तो वह व्यक्ति इस चक्र में अंगुली स्थापित कर नाम के अनुरूप संख्या देख परिणाम जान सकता हैं।

अथ भीति परीक्षा
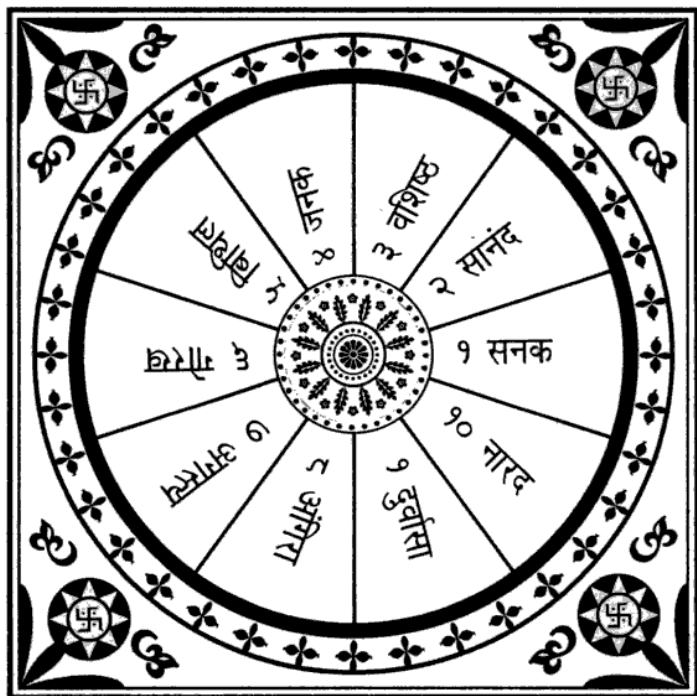
वसिष्ठो बिथिलच्श्रैव गोरखोऽगस्त्यकस्तथां दुर्वासा नारदच्श्रैव ह्यंगिराः सनकस्त था। सानंदो जनकच्श्रैव क्रमात्सर्वं विचारयेत्।।

जो कोई किसी पुरूष के बारे में यह जानने के लिए कि उसका संग क्या फल देगा इस चक्र का प्रयोग कर सकता है इसके लिए अंगुली स्थापित करने के बाद नाम व संख्या के अनुसार फल जाने।

अथ विश्वास परीक्षा
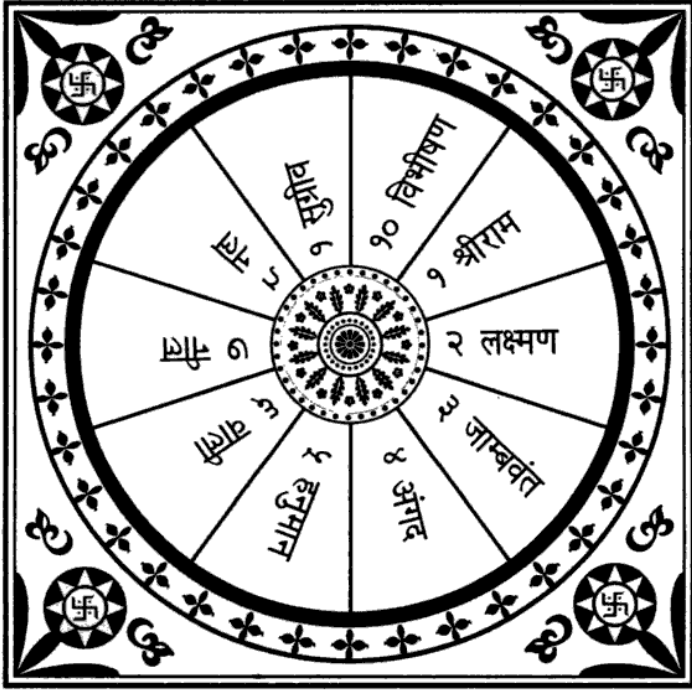
तादौ सनकसान्दौ वसिष्ठजनको तथा। बिथिलो गोरखच्श्रैव ह्यगस्त्यांगिरसौ तथा।। दुर्वासा नारदच्श्रेव फलं ब्रूयाच्छुभाशुभम्।।

जो व्यक्ति अपने किसी कार्य या विचार के लिए किसी व्यक्ति को विश्वास में लेना चाहता है तो वह इस चक्र के द्वारा यह जा सकता है कि वह मनुष्य विश्वास योग्य है या नहीं! इसके लिए वह अंगुली स्थापित कर यह जान सकता है विधि पूर्वानुसार है।

अथ विद्या परीक्षा
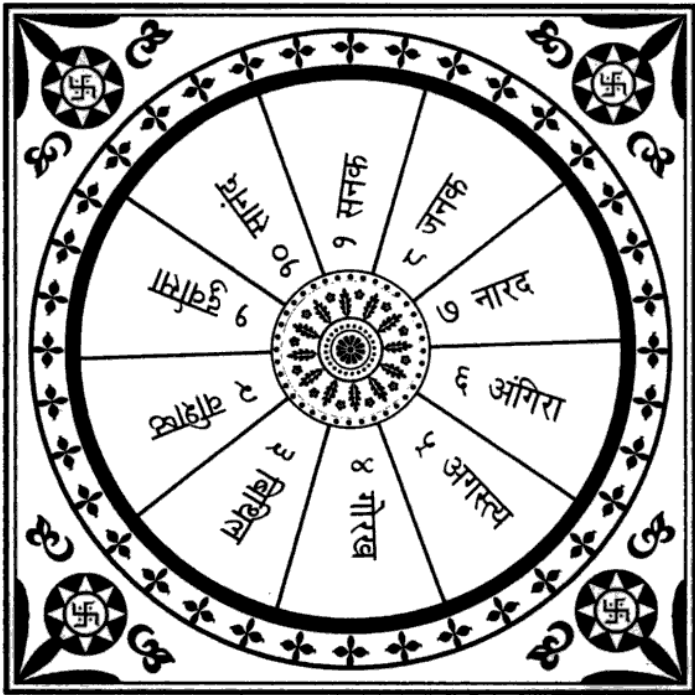
श्रीरामो लक्ष्मणच्श्रैव जाम्बवानंगदस्तथा। हनूमद्वालिनो नीलो नलः सुग्रीवकस्तथा ।। विभीषणः क्रमादेतैः फलं सर्वमुदाहरेत्।।

जो विद्यार्थीगण या मेधावी जन अपनी विद्या के सम्बंध में परीक्षा करना चाहे तो इस चक्र में तर्जनी स्थापित कर नामानुरूप व अंकानुसार परिणाम जान सकता है।

अथ संबंध परीक्षा

दुर्वासाच्श्र वसिष्ठच्श्र बिथिलो गोरखस्तथा।। अगस्त्य च्श्रांगिराच्श्रेव नारदो जनकस्तथा।। ततः सनकसानन्दों क्रमात्सर्व विचारयेत्।।

जो व्यक्ति संबंध स्थापित करने का इच्छुक हो, वह इस चक्र द्वारा यह जान सकता है कि उसका सम्बंध कहा उचित होगा। इसके लिए तर्जनी चक्र में स्थापित कर नाम व संख्यानुसार सम्बंध के बारे में विस्तार से जान सकता है।

अथ राज्यपरीक्षा

दुर्वासा नारदच्श्रेवसानन्दः सनकस्तथा। जनकच्श्र वसिष्ठश्र बिथिलो गोरखस्तथा।।
अगस्त्यच्श्रां गिराच्श्रेव यथोक्तफलमादिशेत्।।

जो कोई व्यक्ति किसी राज्य पर अधिकार के संबंध में या राज्य विस्तार के बारे में जानना चाहता है तो वह चक्र में तर्जनी स्थापित कर राज्याधिकार की भावी स्थिति जान सकता है इसके लिए नाम व अंकानुसार विवरण देंगे।

अथ संतान परीक्षा

विभीषणश्च्श्र सुग्रीवः श्रीरामो लक्ष्मणस्तथा। जांबवांनगदश्चैव हनूमद्वालिनौ नलः।।
नील एभिः क्रमादब्रूयाद्विचार्यहि फलाफलम्।।

जो दंपति संतान प्राप्ति के इच्छुक हो वह इस चक्र के माध्यम से यह जान सकते है कि संतान कब प्राप्त होगी व कैसा होगा ? इस हेतु चक्र में तर्जनी स्थापित कर अंक व नामानुरूप विवरण देख सकते है।

अथ संचय परीक्षा
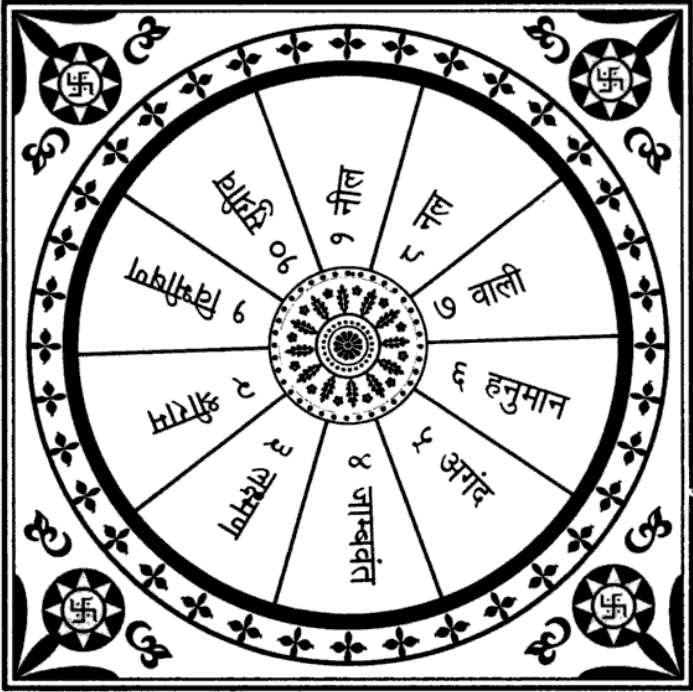
अंगिरा जनकच्श्रैव नारदः सनकस्तथा।। सानन्दोऽत्रिसुतच्श्रेव वसिष्ठाो बिथिलस्तथा।। गोरखोऽ गस्त्य एतैस्तु क्र मात्सर्वं विचायेत्।।

व्यक्ति की सदैव से ही धन या अन्य उपयोगी धातु व वस्तु के संचय की मनोवषत्ति रही है। यह चक्र व्यक्ति को इस संबंध में पूर्व जानकारी देता है जो व्यक्ति यह जानना चाहे कि उसे इस संचय की क्या व्यवस्था करनी चाहिये इसके लिए चक्र में तर्जनी स्थापित कर अंकानुसार व नामानुरूप परिणाम जान सकता है।

अथ विवाह परीक्षा

विभीषणो रामचन्द्रो लक्ष्मणो जांबवांस्तथा।। अंगदो हनुमान्वाली नलनीलसुकंठकाः।।
एतैश्चक्रमगतैः सर्वं शुभाशुभफलं वदेत्।।

जो नर–नारी अपने विवाह के संबंध में परीक्षा करना चाहे तो इस चक्र द्वारा भविष्य दर्पण देख सकते है इस हेतु तर्जनी को चक्र में स्थापित कर नामानुरूप व अंकानुसर स्थिति जानें।

अथ विक्रय परीक्षा
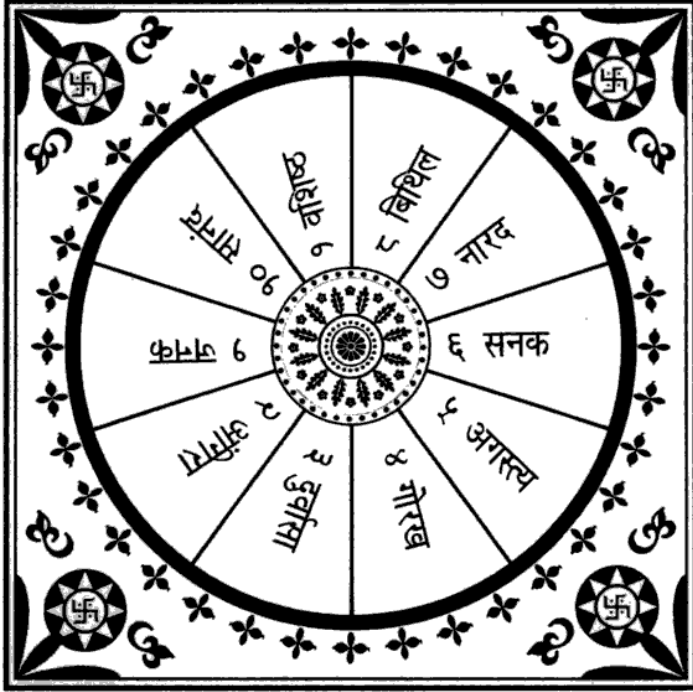
बिथिलोगोरखच्श्रैव ह्यगस्त्यांगिरसौ तथा।। नार दो जनकच्श्रेव सानन्दस्तु वसिष्ठकः।। दुर्वासाः सनकच्श्रेव क्रमादेतेः फलं वदेत्।।

व्यापारी गण या अन्य सभी प्रकार के विक्रय कार्य में संलग्न व्यक्ति विक्रय की उपयुक्त दशाओं के बारे में विस्तार पूर्वक चक्र में अंगुली स्थापित कर नाम के अनुसार अंक के द्वारा जान सकते है।

अथ प्रणय परीक्षा
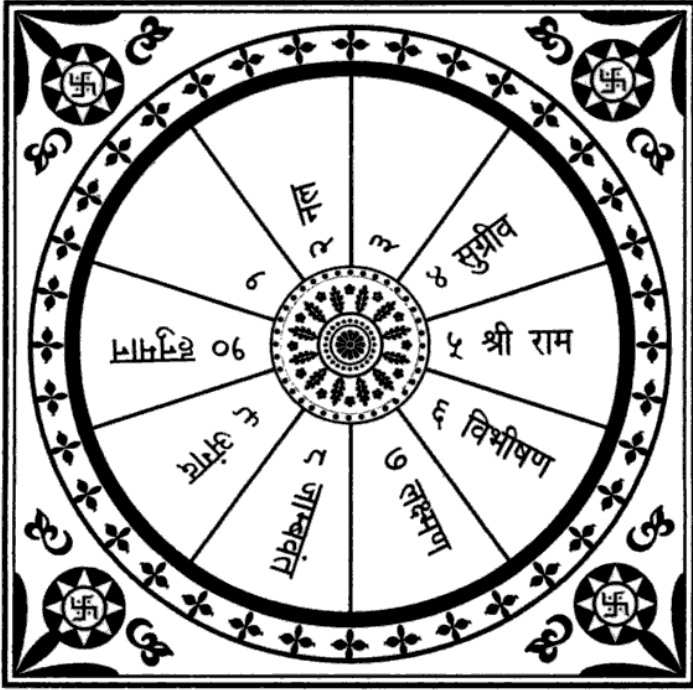
जनको ह्यंगिराश्चैव दुर्वासा गोरखस्तथा।। अगस्त्यः सनकश्चैव नारदो बिथिलस्तथा।। तथा वसिष्ठसानन्दौ जानीयाच्च शुभाशुभम्।।

जो मनुष्य प्रणय निवेदन करने वाले हो वे इस चक्र द्वारा प्रणय के धुंधले दृश्य को उजला कर सकते है। इसके लिए अंगुली को चक्र में रखकर आगे दिए विवणों में नाम व अंकानुसार स्थिति जान सकता है।

अथ गमन परीक्षा

वालिनंनलनीलौ च सुग्रीवं रामचन्द्रकम्। विभीषणं लक्ष्मणं च जांबवन्तं तथांगदम्। हनुमन्तं समालिख्य यात्रागमनमादिशेत्।।

जो मानव अपने किसी विशेष प्रयोजन को पूर्ण करने के लिए प्रस्थान करने वाले हो उनको यह चक्र भावी स्थिति से अवगत कराने में अचूक है। व्यक्ति को चाहिये कि तर्जनी चक्र में स्थापित करें व नाम व अंकानुसार फलाफल जाने।

अथ आगमन परीक्षा
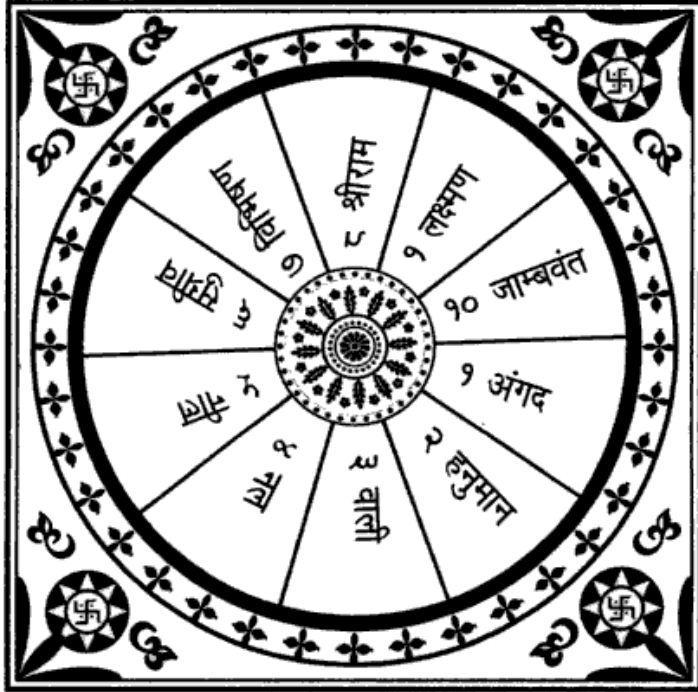
आगमं चिन्तयेदत्र विलम्बं शीघ्रतां तथा। हनूमानू नीकनलौ विभीषण सुकण्ठकौ।।
लक्ष्मणोरामचन्द्रच्श्रह्मंगदो जांबवांस्तथा। वाली चैतेषु वक्ष्यामि क्रमेण गणयेद्बुधः।।

जो किसी प्रियजन या अन्य इच्छित व्यक्ति के परदेश से आने की प्रतिक्षा कर रहा हो तो चक्र के प्रयोग द्वारा यह ज्ञात कर सकता है कि आने वाला कब आएगा शीघ्र या विलंब से। इसके लिए आंखे मूंदकर अंगुली चक्र पर रखें एवं नाम व संख्यानुसार परिणाम जाने।

अथ कृषिकार्य परीक्षा
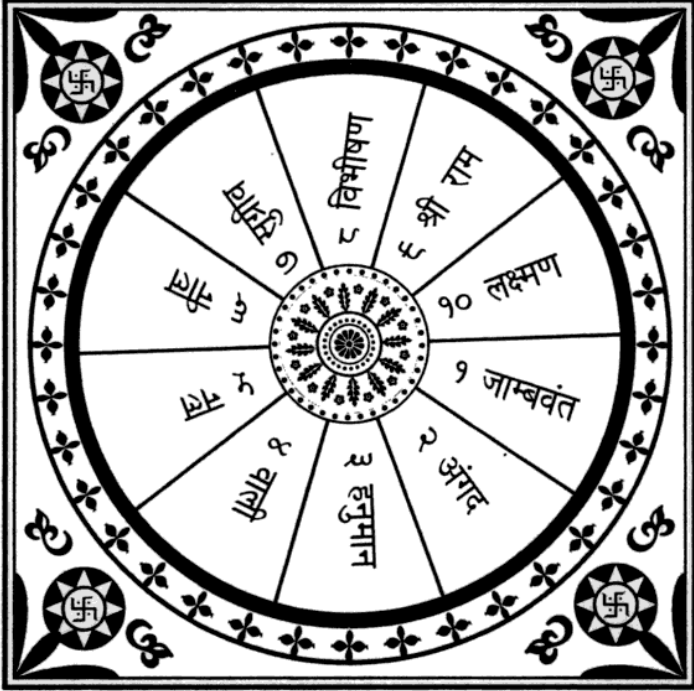
कृषिकर्मपरीक्षादि यत्नतच्श्रिन्तयेद्बुधः। अंगदोहनमांच्श्रेव वाली च नलनीलकौ।। सुग्रीवो रावणभ्राता श्रीरामो लक्ष्मणस्तथा। जांबवांच्श्र क्रमादेतैः फलं ब्रूयाच्छु शुभाशुभम्।।

कृषि संबंधी सभी कार्यो में संलग्न व्यक्ति वर्षा व अन्य लाभों से अवगत हो सकता है यदि वह चक्र का प्रयोग करे। इसके लिए तर्जनी द्वारा स्थापित नाम के अनुसार संख्या देखें।

अथ व्यापार परीक्षा

जांबवानंगदश्चैव हनुमान्वालिसंज्ञकः।। नलो नीलश्च सुग्रीवो विभीषणनष्पात्मजाः।। लाभालाभं शुभं दष्टा यत्नतः परिवर्जयेत्।।

नव उद्यमी जो किसी व्यापार को करने का जोखिम उठाना चाहते है या स्थापित उद्यमी भी यदि व्यापार संबंधी विश्वसनीय जानकारी चाहते हैं तो पहले मन में इस संबंध में विचार लायें तत्पश्चात चक्र में अंगुली स्थापित करें व नाम संख्यानुरूप फलाफल जाने।

अथ देवेष्ट परीक्षा

देवोऽयं परितुष्टः स्याद्यदि पच्छंति मानवाः। कामच्श्रगरूडच्श्रैव कार्तिकेयो गणेश्वरः।।महादेवच्श्र श्रीकृष्णोऽरूिद्धस्तपिता तथा। साम्बच्श्रबलभद्रच्श्रफल मेभिरूदाहरेत्।।

जो कोई मनुष्य अपने इष्टदेवता की आराधना द्वारा होने वाले शुभ परिणामों से परिचित होना चाहता है या यह जानना चाहता है कि उसके इष्ट कौन है तो इसके लिए चक्र में अंगुली स्थापित कर शुभ फल प्राप्त कर सकता है।

अथ साहित्य परीक्षा
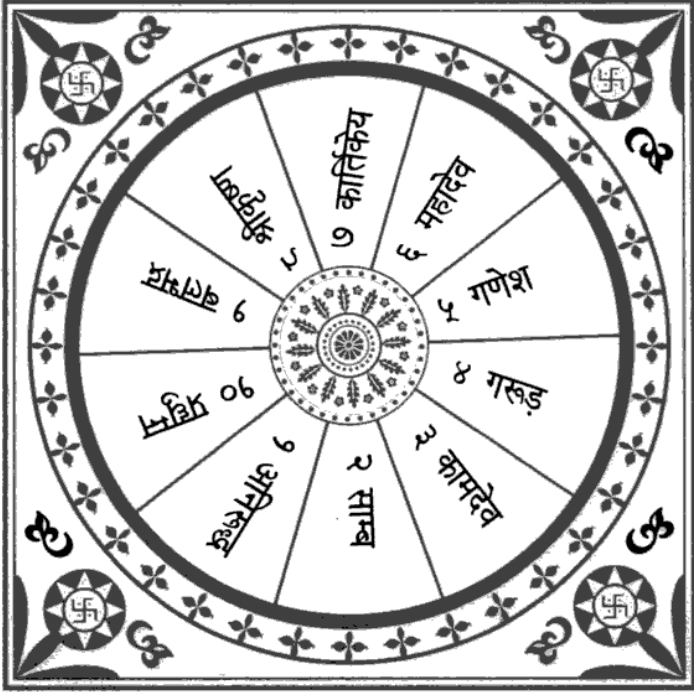
सांबः कामश्चगरूडो माहदेवश्च कार्तिकः गणेश्वरश्च श्रीकृष्णो बलः प्रघुम्न एव चः अनिरूद्ध क्रमादेतेः फलं ब्रूयाच्छुभाशुभम्।।

ये चक्र नवसाहित्यकारों को मार्गदर्शन देने व स्थापित साहित्यकारों की साहित्य संबंधी समस्याओं का समाधान करने में सहायक है। इस हेतु अंगुली का चक्र में संस्थापन करें व नाम संख्यानुसार परिणाम जाने।

अथ वासनिरूपण परीक्षा
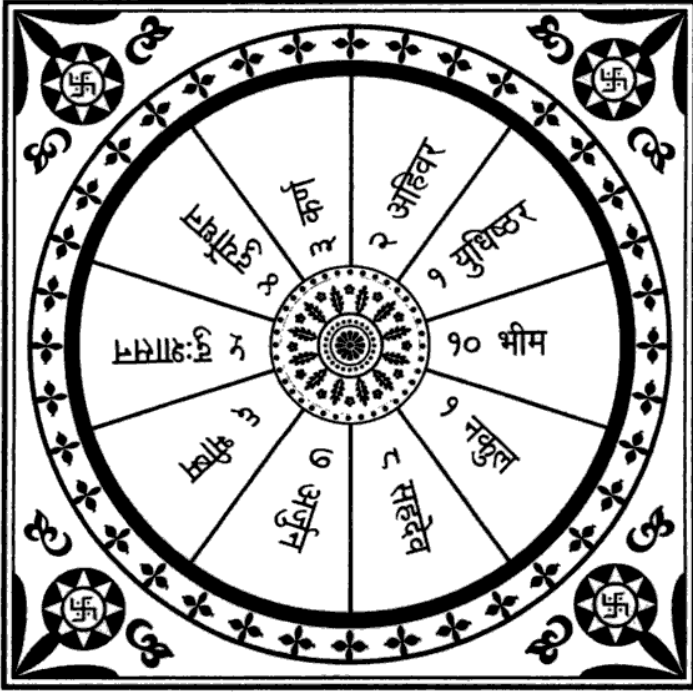
अनिरूद्धच्श्र सांबच्श्रकामो गरूड एव च। गणेश्वरो महादेवः कार्तिकः कृष्ण एव च।। बलभ्रद्रच्श्र प्रघुम्नो मजानीयात् स्थितिकर्मणि।।

किसी स्थान पर बसने के शुभ–लाभ परिणामों को जानने का इच्छुक व्यक्ति इस हेतु चक्र में तर्जनी संस्थापित कर नाम व संख्यानुसार स्थान के बारे में जान सकता है।

अथ मंत्री परीक्षा

युधिष्ठिरच्श्राहिवरः कार्तियसुयोधनौ। दुःशासनच्श्र गांगेयो ह्यर्जुनः सहदेवकः।।
नकुलो भीमसेनच्श्र क्रमान्मन्त्रिविचारणम्।।

यदि कोई व्यक्ति राज में अपनी भागीदारी अर्थात् मंत्री बनने के योगों के बारे में जानना चाहता हो तो चक्र में अंगुली स्थापित कर यह जान सकता है इसके लिए नाम व संख्यानुसार संयोग जानें।

अथ मनः कामपरीक्षा

आर्दो बलच्श्र प्रघुम्नोऽनिरूद्धः साम्ब एव च। कामदेवोऽथ गरूडो महादेवगणेश्वरौ।।
कार्तिके चच्श्र श्रीकृष्णो जानीयाच्च शुभाशुभम्।।

मानव मन कामनाओं का घर है। नित नयी भावनाएं मन में उपजती है परंतु वे सब की सब पूर्ण नहीं होती अतः यह जानने के लिए कि कामना का क्या परिणाम होगा चक्र में अंगुली संस्थापित कर नामानुसार व संख्यानुसार परिणाम जाने।

अथ रोग परीक्षा
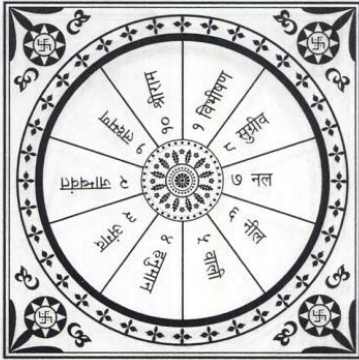
कार्तिकेयच्श्र श्रीकृष्णो बलः प्रद्युम्न एव च। अनिरूद्धच्श्र साम्बच्श्र कामदेवः खगेश्वरः।। महादेवो गणेश्च्श्र क्रमपूर्व शुभं वदेत्।।

जो मनुष्य रोगी है, किसी व्याधि से घिरे है। वे अपने रोग निवारण के बारे में उपरोक्त चक्र के माध्यम से विश्वसनीय जानकारी प्राप्त कर सकते है इसके लिए चक्र में हस्त स्थापित कर नामानुरूप परिणाम जाने

अथ वाद परीक्षा

लक्ष्मणो जांबवानेव ह्यंगदोहनुमांस्तथा।। वाली नीलो नलश्चैव सुकण्ठ विभीषणौ।।
रामचंद्रः क्रमोदेभिर्जानीयाद्वै शुभं फलम्।

अपवाद, आफत व कष्ट ग्रस्त व्यक्ति कब निवारण को प्राप्त होगा यह जानने के लिए चक्र में हस्त स्थापित कर आपत्ति निवारणार्थ विधि विधान नामानुरूप व संख्यानुसार देखें।

अथ संग परीक्षा
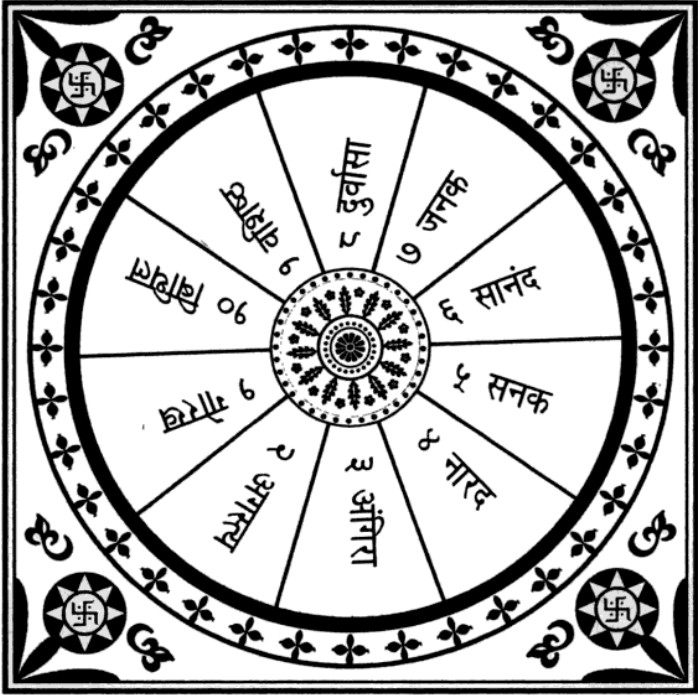
गङ्गापुत्रश्च दुशासनोऽर्जुनोऽहिवरस्तथा। नकुलःसहदेवश्च भीमो दुर्योधनस्थथा।।
कर्णो युधिष्ठिरश्चैव कृमपूर्वं विचारयेत्।।

मनुष्य जीवन में व्यक्ति को कितने ही मित्र व संगी साथियों का साथ मिलता है परंतु सभी का साथ शुभफलदायक नहीं होता अतः यह जानने के लिए कि किस व्यक्ति विशेष का सग आपको लाभ देगा। इसके लिए चक्र में तर्जनी का संस्थापन कर नामानुरूप व संख्यानुसार फल व स्थिति जानें।

अथ ग्राहक परीक्षा

गोरखच्श्राप्यगस्त्यच्श्र ह्यंगिा नारदस्तथा। सनकच्श्राथ सानन्दो जनको दुर्वासक स्तथा।। वसिष्ठोबिथिलादत्तः कृमात्सर्वं वदेत्फलम्।।

ग्राहक को देवतुल्य स्थान दिया गया है। किसी वस्तु के प्रति ग्राहक की मनोवृत्ति कैसी रहेगी व ग्राहक की संख्या संबंधी सभी समाधान इस चक्र में मन में यही विचार लाकर तर्जनी स्थापन पश्चात नामानुरूप व संख्यानुसार किया जा सकता है।

अथ दूत परीक्षा
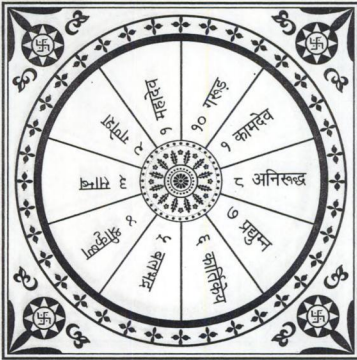
सानन्दःसनक च्श्रैवदुर्वासा जनकस्तथा। वसिष्ठो बिथिलच्श्रेव गोरखोऽगस्त्य एव च।। अंगिरा नारदच्श्रेव कृमादेतैर्विचारयेत्।।

अपने किसी कार्य की क्रियान्विती के लिए मनुष्य को कई बार दूत या गोइदा बैठाना या नियुक्त करना पड़ता था। इस संबंध में चक्र में अंगुली स्थापित कर नाम व संख्यानुसार परिणाम द्वारा यह जाना जा सकता कि कहां दूत पैठाने से लाभ होगा।

अथ कुशल परीक्षा
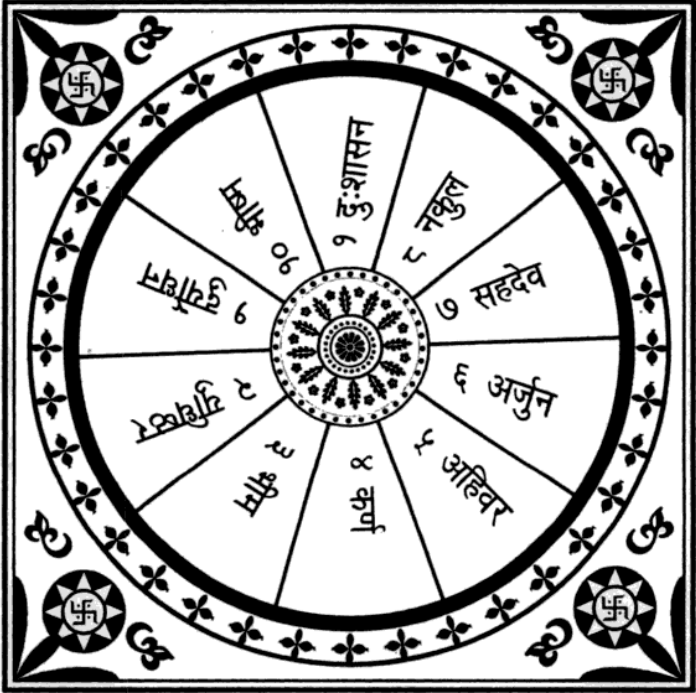
महादेवो गणेशच्श्र साम्बः श्रीकृष्ण एव च। बलभद्रः कार्तियः प्रघुम्नस्तत्सुतस्था।।
काम देवच्श्र गरूडः कृमात्सर्वं विचारयेत्।।

दूरस्थ बैठे प्रियजनों, मित्रों व रिश्तेदारों के कुशलक्षेम जानने को मन में सदैव उत्सुकता बनी रहती है। अपनी इस आशा की पूर्ति मनुष्य चक्र में अंगुली स्थापित कर संख्या व नाम के अनुसार परिणाम द्वारा कर सकता है।

अथ चिन्ता परीक्षा

**दुर्योधनोऽजातशत्रु भीमो कर्णः फणीश्वरः। अर्जुनः सहदेवो नकुलो दुःशासनस्तथा।।
गंगापुो यथापूर्वं फलमेतै विंचारयेत्।।**

मनुष्य जीवनपर्यंत चिन्ताग्रस्त रहता है, क्योंकि चिन्ता मनुष्य जीवन का अभिन्न अंग है। हम इस चिन्ता का पूर्ण निवारण न सही परंतु इसका प्रभाव काफी हद तक कम कर सके है। इसके लिए हमें चिंता विशेष के बारे में पूर्ण जानकारी आवश्यक है जो हमें उपरोक्त चक्र में तर्जनी रख नाम व संख्यानुसार देखने से ज्ञात होगी।

आगे नामों के अनुसार सारणियां दी जा रही है प्रत्येक सारणी में 10 क्रम है। चक्र में जिस नाम पर अंगुली आई हो, उसी नाम के लिए दी गई सारणी में संख्यानुसार परिणाम जाने।

श्री रामचन्द्र वचन

विद्याविवाहसन्तानगर्भाच्श्र गमनानि च।। गंगाप्राप्तिर्गतच्श्रैव कृषिकर्म तथैवच।। वाणिज्यमपवादच्श्र एतच्चिन्तयं शुभाशुभम्।।

1. आप व्यापारी कर्म में मन लगायें, विद्यार्जन से वांछित लाभ नहीं है।
2. विवाह में पर्याप्त विलंब का योग है।
3. पुत्र प्राप्ति संदिग्ध है, असंभव नहीं।
4. गर्भ में बालक शिशु है।
5. अभी प्रस्थान का कार्यक्रम स्थगित करें, लाभ होगा।
6. गंगा प्राप्ति की कामनापूर्ति योग है।
7. जिस की खोज है उसने दक्षिण में गमन किया है आने में विलंब होगा।
8. यद्यपि खेती लाभकर है, परंतु पानी की समस्या रहेगी।
9. इस वस्तु का व्यापार न करें, हानि के योग है।
10. यह कष्ट लंबे समय तक बना रहेगा।

लक्ष्मण वचनम्

अपवादोद्वाहविद्याः सन्तानं गर्भ एव च। गमनागमने चैव गंगाप्राप्तिस्तथैव च।। वाणिज्यं जानीयाच्छुभलक्षणम्।।

1. यह कष्ट शीघ्र ही दूर होगा।
2. इस विवाह का योग पूर्व की ओर है परंतु विलंब अवश्यंभावी है।
3. यह विद्या लाभकारी है, अर्जन कर पारंगत बनिये।
4. पुत्र प्राप्ति के योग है लेकिन विलंब से।
5. इस गर्भ में कन्या रूपी लक्ष्मी है।
6. यह मनुष्य उत्तर दिशा में गया है।
7. पूर्व दिशा में गमन का विचार सही नहीं है।
8. गंगा प्राप्ति के योग अधिक है।
9. कृषि कार्य अत्यंत ही लाभकारी है।
10. यह व्यापार लाभ में चलेगा।

अंगद वचनम्

अपवादः कृषिर्वाणिज्यं विद्यालाभ एव च। उद्वाहगर्भप्राप्ति च गमनागमनं तथा। गंगाप्रप्तिः कृमेणैवं फलानि दश कीर्तयेतू।।

1. इस कष्ट के निवारण के याग है परंतु कुछ धन खर्च के बाद।
2. कृषि के लिए सभी परिस्थितियां अनुकूल है।
3. इस व्यापार में संलग्न होने से लाभों की प्राप्ति होगी।
4. विद्यार्जन आपके लिए विशेष फलदायी है।
5. जिस स्थान की खोज में आप है, वह शीघ्र मिलेगा। जो लाभ देगा।

2. तुम कृषि कार्य निश्चित हो करें लाभ है।
3. इस व्यापार में तुम्हे धन व नाम की प्राप्ति होगी।
4. यह कष्ट दूर होने से द्रव्य अड़चन है।
5. विद्या से मिलने वाले लाभ निश्चित है परंतु विलंब अवश्यंभावी है।
6. इस विवाह में परपुरूष बाधा बन रहा है।
7. सुन्दर, श्रेष्ठ व आज्ञाकारी संतान के योग है।
8. पुत्र रत्न के गर्भ में होने की प्रबल संभावना है।
9. गंगाप्राप्ति सुनिश्चित है।
10. प्रस्थान में विलंब बिल्कुल ठीक नहीं है शीघ्र करें।

वालिकयनम्

गमनंजाह्नवीप्राप्तिः कृषिर्व्यापार एव च। विद्याऽपवादोद्वाहाच्श्र सन्तानं गर्भ एव च।। आगमच्श्रात्र विज्ञेयो फलादेशोऽशुभः स्मष्तः।।

1. गमन का विचार त्यागे ये अशुभ फलदायी है।
2. मष्त देह के गंगा में विसर्जन का योग है।
3. कृषि कर्म में पर्याप्त अनाज न होगा, सभी परिस्थितियां प्रतिकूल है।
4. यह व्यापार विनाशकारी है सो न करें।
5. विद्यार्जन से इच्छित लाभ न मिलेगा।
6. यह कष्ट प्रलयंकारी है, प्रभाव दिखलायेगा।
7. विवाह के तत्काल योग किंचित भी नहीं है।
8. संतान सुख मिलना भाग्य में नहीं है।
9. गर्भ में मष्त शिशु है।
10. यह प्राणी दक्षिण में गया है। वापस नहीं लौटेगा।

नलकथनम्

गंगाप्राप्तिच्श्र गमनमागमः कृषिरेव च। वाणिज्यमपवादच्श्र विद्योद्वाहच्श्र सन्ततिः।। गर्भ चिंता प्रयत्नेन फलंन ब्रूयाच्छुभाशुभम्।।

1. गंगा प्राप्ति मृत्यु पश्चात होना तय है।
2. जहां भी जाने का मन हो सो जायें लाभ होगा।
3. यह प्राणी पश्चिम दिशा में गया है शीघ्र आएगा।
4. कृषिगत परिस्थितियां अनुकूल है। वर्षा अच्छी होगी।
5. इस प्रकार का व्यवसाय अनष्टि का घोतक है।
6. कष्ट निवारण के योग शून्य है।
7. विद्या प्राप्त भलें ही करें, शुभ न होगी।
8. विवाह में पर्याप्त विलंब है।
9. संतान प्राप्ति में इष्ट आराधना सहायक है।
10. गर्भस्थ शिशु के जीवित रहने के क्षीण योग है।

6. धन का अभाव लंबे समय तक घेरे रहेगा।
7. मष्त्यु अभी विलंब से आएगी।
8. साहित्य संबंधी कोई भी कार्य लाभकारी नहीं है।
9. यह स्थान शीघ्र त्यागे वांछित सफलता की प्राप्ति होगी।
10. तुम इष्ट के रूप में शालग्राम की आराधना करों।

सुग्रीव कथनम्

सन्तानं गर्भचिन्ता च गंगाप्राप्स्तिथैवच।। गमनामनं चैव कृविषर्लाच्छनमेव च।। वाणिज्यविद्योपयमाः शुभाशुभमुदाहरेत्।।

1. संतान सुख शीघ्र मिलेगा।
2. गर्भस्थ शिशु भाग्यहीन है।
3. गंगा प्राप्ति की संभावना अत्यंत संदिग्ध है।
4. उत्तर के अन्यथा सभी दिशाओं में अनिष्ट होगा।
5. दक्षिण में यह प्राणी गया है मिलने की संभावना नहीं है।
6. कृषि संबंधी कार्य में श्रम से लाभ निश्चित है।
7. यह कष्ट इष्ट के व्रतोपवास से टलेगा।
8. आपका भाग्य इस व्यापार से चमक उठेगा।
9. विद्या प्राप्ति में कई तरह की अड़चने होगी।
10. विवाह के योग विलंब से है।

प्रघुम्न कथनम्

धनंमनोऽभप्सितं च बन्धनं रोग एवं च। उद्यमो मष्त्युचिन्ता च कुशलं देवसेवनम्।। साहित्यं वसतिर्ज्ञेयाब्रूयादेतत्पफलं शुभम्।।

1. यह व्यापार मूलधन की भी समाप्ति कर देगा।
2. यह कार्य करना आपको विशेष फल देगा।
3. इस बन्धन से मुक्ति शीघ्र ही होग।
4. यह रोग अत्यंत पीड़ा दायक है। परंतु निवारण होगा।
5. रोजगार की संभावना प्रबल है।
6. तुम्हारी मष्त्यु होने को है, ईश्वर को भजो।
7. इस चिन्ता से शीघ्र मुक्ति मिलेगी।
8. महालक्ष्मी का पूजन करें। सब कष्ट दूर होंगे।
9. साहित्य से ही भला होगा, साहित्य कर्म करें।
10. यह स्थान राजसी सुख प्रदान करेगा।

अनिरूद्ध कथनम्

वासो धनं मनस्कामो बन्धनं रोग एव च।। उद्यमच्श्रैष्टदेवस्य सेवा कुशलमेव च। साहित्यं धिनंप्रश्नफलं ब्रूयाद्यथायथम्।।

1. यहं स्थान निवास के लिए अति शुभफलदायी है।

2. धन प्राप्ति में पर्याप्त विलंब होगा।
3. बिना फल की इच्छा के किया गया, कर्म फलदायी है।
4. अधिक चिन्ता न करें, बंधन में देरी नहीं है।
5. यह रोग पिताशय में पथरी का है शीघ्र निरोग काया मिलेगी।
6. पर्याप्त सुविधाओं वाला सुखद रोजगार मिलेगा।
7. मनोकामना पूर्ति का एक मात्र उपाय है इष्ट साधना।
8. उस स्थान पर सभी कुशलपूर्वक है, व्यर्थ चिन्ता न करें।
9. साहित्य कर्म दीर्घावधि तक लाभदायी नहीं है।
10. अंत समय अर्थात् मष्त्यु सन्निकट है।

श्रीकृष्ण कथनम्

बन्धनं रोग उद्योगः कुशलं मष्त्युरेव च। सेवा साहित्यवादौ च धनं च मनसेप्सितम्।। क्रमात्फलाफलं सर्वमेतेषां फलमादिशेत्।।

1. सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान शीघ्र ही विस्तार पूर्वक होगा।
2. यह रोग कफ संबंधी है जो शालग्राम की आराधना द्वारा ही दूर होगा।
3. रोजगार की असीम व प्रबल संभावनाएं है, परंतु कुछ समयान्तराल से।
4. सभी समाचार कुशल आनंद के है, व्यर्थ चिंता न करें।
5. दूर–दूर तक मृत्यु (काल) का भय नहीं है। कल्याण होगा।
6. इष्ट के रूप में विष्णु की आराधना से मनोकामना पूर्ण होगी।
7. साहित्य के अच्छे योग बनते है इसमें मित्र भी सहयोग करेंगे।
8. यह स्थान शुभफलदायक वाला है अच्छे व सद्पुरूषों का साथ होगा।
9. धन के आने के मार्ग में रोड़े को हटाने हेतु महालक्ष्मी पूजन लाभकारी है।
10. यह कामना पूर्ति सच्ची लगन व मेहनत से पूर्ण होगी।

कामदेव कथनम्

सेवासाहित्यवासाच्श्र धन चिन्ता तथैव चं मनस्कामोबन्धनं च रोगोद्योगसुखानि च। मष्त्युचिन्ता भवेद्येषां ते योऽदः फलमादिशेत्।।

1. इष्ट के रूप में माँ दुर्गा की आराधना से मनवांछित फल मिलेगा।
2. साहित्य कार्य यद्यपि लाभकारी है, परंतु विलंब से होगा।
3. यह स्थान पूर्व में सद्जनों का निवास था, अतः यहां निवास सुफलदायी है।
4. व्यापार के रूप में धातु कर्म करें लाभ होगा।
5. माँ लक्ष्मी की ताम्र प्रतिमा की पूजा करें लाभ होगा।
6. यह बन्धन छुटना कठिन उपक्रम है, असंभव नहीं।
7. यह नाड़ी संबंधी रोग स्वदेश में लौट, चिकित्सा लेने से दूर होगा।
8. पूर्व में किया रोजगार फिर करें लाभ होगा।
9. उस प्राणी का समाचार लो, उसे कष्टों ने घरों है।

10. मृत्यु अवश्यंभावी है जो सन्निकट है अतः इष्ट आराधना व दान पुण्य में समय व्यतीत करें।

गणेश कथनम्

उद्योगः कुशलं नित्यं मष्त्युः सेवा स्थितिस्तथा। धनप्राप्तिच्श्र साहित्यं मनस्कामस्तथैव च।। बन्धनं व्याधिसहितमेतेषां फल मादिशेत्।।

1. रोजगार के स्थायी साधन पर्याप्त विलंब से मिलेगा।
2. यह स्थान आपके लिए मंगलकारक होगा।
3. मष्त्यु का भय न करें, अभी काल निकट नहीं है।
4. इष्ट के रूप में तुम ताम्रप्रतिमा रूप में शालग्राम की आराधना करों।
5. यह स्थान अशुभ है व तुम्हारे लिये अमंगलकारी रहेगा।
6. लक्ष्मी जी रूष्ट है, धन–धान्य की प्राप्ति के लिए महालक्ष्मी पूजन करें सफलता मिलेगी।
7. तुम्हारी परिस्थितियां साहित्य कर्म के अनुकुल नहीं है, वांछित अभीष्ट नहीं मिलेगा।
8. यह मनोकामना पूर्ण होना असंभव है।
9. इस कारागष्ह से मुक्ति स्वप्न मात्र है।
10. यह रोग नाड़ी संबंधी है जो अत्यंत कष्टदायक होता है।

महादेव कथनम्

कुशलं मष्त्युचिन्ताच धनचिन्ता तथैवच। साहित्ससेवावासाच्श्र मनस्कामच्श्र बन्धनम्।। उद्यमो दशमः प्रोक्तो विचार्य फलमादिशेत्।।

1. उस स्थान विशेष की चिन्ता न करें वहां सभी कुशल पूर्वक है।
2. सभी प्रकार के सुखों का भोग करें अभी काल (मृत्यु) दूर है।
3. धन प्राप्ति का साधन मित्र हो सकता है प्रयास करें।
4. साहित्य का ही योग है जो फलवर्द्धक व मंगलकारी है।
5. इष्ट के रूप में तुम "मृन्मय देव" की आराधना करें कल्याण होगा।
6. यह स्थान निवास, व्यापार व अन्य सभी दृष्टिकोणों से सही है।
7. आपकी यह कामना पूर्ण होगी, परंतु अपनी ओर से श्रम में कमी न रखें।
8. यह बंधन कठोर है, परंतु द्रव खर्च से मुक्ति के योग है।
9. यह रोग पित्त में पथरी का है जो साध्य है, शीघ्र आरोग्य को प्राप्त करोगे।
10. रोजगार की सभी समस्याएं सुलझेंगी कार्य में नियमितता रखें।

सांबकथनम्

साहित्यं वासकार्यं च कुशलं मानेसच्छितम् बन्धनं रोग उद्योगो निधनं सेवनं तथा।। धनचिन्ता च यस्यैते प्रश्नास्तेषां फलंवदेत्।।

1. लेखन में आपका भाग्य रंग दिखायेगा अतः साहित्य कर्म में लेखन को

चुने।

2. यह स्थान प्रतिष्ठित व सुरम्य है सभी नक्षत्रों के अनुकूल है अतः वहीं वास करें।
3. उस स्थान पर संबंधियों में मतभेदों के कारण स्थिति विकट है, समाचार लें।
4. रहवासीय स्थान से उत्तर में गमन करें, लाभकारी है।
5. यह बंधन या कारागष्ह पूर्वजन्मों का परिणाम है अतः मुक्ति न मिलेगी।
6. यह रोग श्वास संबंधी है, उचित उपचार से आरोग्य के प्रबल योग है।
7. स्वदेश में रोजगार मिलना असंभव है विदेश प्रस्थान करें।
8. काल निकट है अतः दुष्कर्मो को त्याग सद्कर्म करें।
9. महादेव ही आपकी समस्याओं का समाधान करेंगे अतः आराधना करें।
10. धनाभाव तब तक बना रहेगा जब तक दक्षिण की ओर गमन न करोगे।

बिशिल कथनम्

शंकाविक्रयचिंताश्च वासःस्थानं तथैव च। विश्वासः किंकरो राज्यं समयः प्रलयस्तथा।। द्रव्याणां ग्राहका नूनं भविष्यंति न संशयः। एतेषां तु फलं ज्ञात्वा वदेत्सर्वं शुभाशुभम्।।

1. यह चिंता करने योग्य मामला ही नहीं है अतः शंका रहित रहें।
2. विक्रय का विस्तार समय की मांग कर रहा है धैर्य रखें।
3. यह संबंध रहवासीय स्थल से उत्तर–पूर्व में उचित रहेगा।
4. अब यह स्थान शुभफलदायी है अतः त्याग न करें।
5. यह व्यक्ति कभी भी विश्वास भंग न करेगा।
6. यह स्थान दूत नियुक्ति के लिए यथोचित है।
7. यह स्थान विशेष या राज्य मंगलमय है अतः त्याग न करें।
8. शुभ समय का शुभागमन कुछ विलंब से होगा, धैये अनिवार्य है।
9. यह संकटग्रस्ता निवारण की और अग्रसर है व्यर्थ चिंता से कुछ प्राप्त नहीं ।
10. यह व्यापार ग्राहकों को आकर्षित करने में सफल है।

कार्तिकेय कथनम्

व्याध्युद्योगौ सेवनं च मष्त्युः साहित्यमेव च। कुशलं वसतिर्द्रव्य मनोऽभिलषितं तथा।। बन्धनं च विजानीयाच्छुमाशुफलं वदेत्।।

1. यह गुदासंबंधी रोग है जो असाध्य नहीं कहा जा सकता पर्याप्त उपचार लें आराम होगा।
2. तुम्हारा रोजगार धातु व्यापार में ही निश्चित है।
3. महाशक्ति तुम्हारी आकांक्षाओं की पूर्ति करेगा।
4. यमराज की दषष्टि अभी दूर है अतः सांसारिक कर्तव्यों का निर्वाह करें।
5. साहित्य कर्म में रूचि को बढ़ाये यह कर्म ही नाम व फल दिलायेगा।

6. उस स्थान पर स्थिति विवादस्पद बनी हुई है, समाचार प्राप्त करें।
7. यह स्थान किसी भी स्थिति में लाभकारी नहीं है त्यागने से लाभ होगा।
8. धनागमन के योग समूल नष्ट हो चुके है।
9. इस कामना के लिए शक्ति पूजा करें, वांछित फल मिलेगा।
10. बंधन मुक्ति के सभी उपक्रम असफलता को प्राप्त होंगे।

वसिष्ठ कथनम्

शंकासम्बन्धस्थानानि तथा विश्वासकिं करौ। राज्यं च समयश्चैव विक्रयस्तु ६ ानस्य च।। ग्राहकः प्रलयश्चान्त्यः फलायेतान्युदाहरेत्।।

1. शंका व्यर्थ है, यथार्थ में इसका अस्तित्व नहीं है।
2. यह संबंध तुम्हारे व दूसरे पक्ष के लिए कुशलता लायेगा।
3. पश्चिमोत्तर में गमन करें आर्थिक व पारिवारिक समस्याएं सुलझेगी।
4. यह मनुष्य विश्वसनीय है इस पर अवश्य भरोसा करें।
5. यह स्थान दूत नियुक्ति के बिल्कुल भी अनुकूल नहीं है।
6. यह स्थान पूर्व में दुर्जनों का स्थान था अतः शुभ फल नहीं देगा।
7. सुखमय समय आने को है धैर्य रखें।
8. यह वस्तु विक्रयशील नहीं है व ग्राहक न मिलेंगे।
9. ग्राहक दिशाहीन हो चुका है तुम्हारी दिशा न आएगा।
10. यह कष्ट अल्पकालीन है जो यज्ञ–हवन से नष्ट होगा।

गरूड़ कथनम्

निधनं सेवनं वासो धनचिन्ता मनोरथः।। बन्धनं व्याधिरूद्योगः साहित्यं कुशलं तथा।। विचार्य फलमेतेषां पष्च्छकाय निवेदयेत्।।

1. यह रोग कष्टदायक अवश्य है, परंतु मष्त्यु के आसार नहीं है।
2. स्वदेवता या इष्ट के रूप में ताम्र गणेश का पूजन विशेष फलदायक है।
3. यह स्थान मंगलकारी है परंतु प्रभावदीर्घकालीन है।
4. धनागमन के लिए तैयार रहें शीघ्र मिलेगा।
5. यह धन कामना असंभव नहीं परंतु अत्यंत दुष्कर अवश्य है।
6. यह बंधन दीर्घकालीन नहीं है शीघ्र छुटकारा मिलेगा।
7. त्वचा संबंधी यह व्याधि लंबे समय तक टिकी रहेगी।
8. रोजगार के लिए तुम व्यर्थ उठा–पठक न करें, समय आने पर स्वतः मिलेगा।
9. साहित्य सष्जन से सभी कामनाओं की पूर्ति होगी।
10. वह स्थान सुरक्षित है चिन्ता न करें।

सनन्दन कथनम्

दूतः प्रलयविश्वासौ राज्यं समय एव च। विक्रव्यवस्तु द्रव्यं च स्वस्थानं संगतिस्तथा।। संबंधश्च तथैतेषां फलं सर्वं विचारयेत्।।

1. इस स्थान पर दूत भेजने से उद्देश्य की प्राप्ति निश्चित है।

2. यह कष्ट समाधान के लिए महेश्वर की आराधना उचित है।
3. यह मनुष्य भरोसेमंद है, धोखा नहीं देगा।
4. यह राज्य शुभ फलाफल दायी है अतः यहां कार्य करना सही है।
5. यह समय शुभ चल रहा है।
6. इस वस्तु के विक्रय के सभी उपक्रम नाकाम होंगे।
7. यह द्रव्य लाभ देगा निश्चित समझें।
8. यही स्थान लाभ देगा और स्थान पर जाने का विचार त्यागें।
9. इस मनुष्य की मित्रता से तुम्हे अत्याधिक सुफल मिलेंगे।
10. यह संबंध स्थापित करने से भाग्य में सुख आएगा।

अर्जुन कथनम्

पष्ठलग्नरिमुक्तिर्वै मिलनं संग एव च।। विवादः समरश्रिन्ता मन्त्रो यात्रा धनागमः।। नष्टद्रव्यस्यापिगमश्रैवं सर्वं फलं वदेत्।।

1. यह शत्रु प्रचंड शक्तिवान है, प्रबल सामर्थ्य से ही विजय मिलेगी।
2. यह मित्र मिलने में जानबूझकर विलंब कर रहा है।
3. यह मनुष्य पाखंडी व दगाबाज है इसका संग कदापि न करें।
4. इस विवाद में तुम्हारी हार होगी।
5. यह युद्ध करना उद्देश्यहीन है अतः न करें।
6. भविष्य को सामने रखने के स्थान पर वर्तमान उद्देश्य को लेकर कार्य करें।
7. मंत्र–साधना आपके लिए लाभकारी हैं।
8. इस मनुष्य से कुछ मांगना स्वयं को लज्जित करना है।
9. लक्ष्मी रूष्ट है, अतः धनागमन नहीं होगा।
10. यह खोई हुई वस्तु या द्रव्य ढूंढ़ना समय नष्ट करना है यह पुनः न मिलेगी।

सनक कथनम्

विश्वासदूतराज्यानि समयो ग्राहकस्तथा। स्थानप्रलयचिन्ताश्च सम्बंधो विक्रयस्तथा। शुभं वा यदि वाऽनिष्टं ज्ञात्वा फलमुदाहरेत्।।

1. यह व्यक्ति सत्यनिष्ठ है इस पर विश्वास कर तुम लाभ में रहोंगे।
2. किसी भी स्थान पर दूत न नियुक्त करें, लाभ न होगा।
3. यह दुःखदायी राज्य है यहां रहने से अनिष्ठ होगा।
4. समय कष्टदायी चल रहा है अतः दुःखों का आगमन होगा।
5. ग्राहक विभिन्न कारणों से रूष्ट रहेगा, अतः व्यवहार में नम्रता लाकर कुछ समाधन होगा।
6. यह स्थान छोड़ देना ही सर्वाधिक हितकारी होगा।
7. यह कष्ट तुम्हारे पापों का ही परिणाम है अतः पश्चाताप करें।

8. यह कार्य अत्यंत ही सरलता से सफलता को प्राप्त करेगा।
9. इस संबंध के निर्माण में धन बाधा बन रहा है अतः धन व्यय कर संबंध बनेगा।
10. विक्रय की सभी संभावनाएं धूमिल हो चली है।

युधिष्ठिर कथनम्

मन्त्री चिंता विवादश्च युद्धं नष्ट धनं तथा। मिलनं याचनं प्राप्तिः पष्ठगारिविमोचनम्।। संगतिश्च तथैतेषां जानीयात्क्रमगं फलम्।।

1. तुम मंत्रित्व प्राप्त करोगे, अपने कर्तव्यों का सही निर्वाह करना।
2. इस चिन्ता से मुक्ति लंबे समय बाद मिलेगी।
3. यह विवाद निश्चित रूप से तुम्हारे पक्ष में सिद्ध होगा।
4. यह युद्ध करने में पराजय का वरण होगा सो न करें।
5. यह रूपया मिलने की अच्छी संभावना है, संबंधियों से पूछताछ करें।
6. इस व्यक्ति से तुम्हारा मिलन दुष्कर कृत्य है।
7. यह व्यक्ति कृपण प्रवृत्ति का है सो इससे कुछ न मांगे।
8. सफलता प्राप्ति के पूर्ण योग है पूर्ण चित्त से कार्य में लगे रहें।
9. यह शत्रु पीछा न छोड़ेगा इससे सामना करने में ही भलाई है।
10. यह मनुष्य संगी साथी बनने के योग्य है, इसका साथ करें।

नारद कथनम्

राज्येष्टंसमयः स्थानं तथा ग्राहकविक्रयौ। शंका प्रलयसम्बन्धौ विश्वासः किंकरस्तथा।। यथातथं फलं ब्रूयाच्छुभं वा यदि वाऽशुभम्।।

1. इस राज्य में अधिक समय तक रूकना कष्टों को निमंत्रण देने के सदृष्य है।
2. इस समय दुःखों का चक्रव्यूह तुम्हे घेरे रखेगा।
3. इस स्थान में प्रेत–छाया है इसे छोड़ दें लाभ होगा।
4. गया हुआ ग्राहक वापस लौटेगा धैर्य रखें।
5. यहां विक्रय में कई प्रकार की बाधाएं उत्पन्न होगी, अन्य स्थान पर विक्रय कार्य करें।
6. यह शंका सत्य है निवारणार्थ प्रयास करें।
7. यह संबंध स्थापित होते ही अनिष्ट की छाया घेर लेगी अतः यह संबंध न करें।
8. कष्ट का निवारण सभी पक्षों की सुलह से होगा।
9. यह दुष्ट व्यक्ति है विश्वास न करें, पछतावा होगा।
10. उस स्थान पर दूत भेजने से बात उजागर होने का भय है।

अगस्त्य वचनम्

स्वस्थानं ग्राहकच्श्रैव तथा चक्रयविक्रयौ।। संबन्धः प्रलयच्श्रिन्ता विश्वासः किं करस्तथा।। राजकार्य क्रमादेतत्फलं सर्वमुदाहरेत्।।

1. यह स्थान छोड़ने से तुम्हे सफलता के सोपान मिलेंगे।
2. इस वस्तु के ग्राहक जुटाने में मुश्किलें आएंगी।
3. इस व्यापार में लाभ की संभावनाएं अपार है।
4. यह वस्तु विक्रय में समय का अधिक ध्यान रखना धैर्य रखें।
5. यह संबंध न करने में ही तुम्हारा भला होगा।
6. यह स्थान अर्थात् स्वस्थान न छोड़े, आगे सफलता मिलेगी।
7. यह चिंता तुम्हे भविष्य का दष्य्य दिखला रही है इस चिन्ता पर विशेष ध्यान दें।
8. यह व्यक्ति धूर्त व चालाक है इसका कदापि विश्वास न करें।
9. इस समय दूत का कहीं भी जाना उचित नहीं।
10. यह कार्य करने से तुम्हे राजा के तुल्य सम्मान व प्रतिष्ठा मिलेगी।

सहदेव वचनम्

यात्रा प्राप्तिच्श्र नष्टत्वं पृष्ठलग्नो विपक्षकः। मिलनं संगतिच्श्रिन्ता विवाहः सौहृदं रणः।। एतत्फलं वदेल्लोके यत्र तत्र शुभाशुभम्।।

1. यह मनुष्य याचना करने पर भी कुछ न देगा।
2. यह वस्तु पाना दीर्घावधि बाद जाकर संभव हो पाएगा।
3. यह वस्तु पुनः प्राप्त करने के लिए भूमि निरीक्षण करें, सफलता मिलेगी।
4. इस शत्रु को पीछा छुड़ाने के लिए इस पर आक्रमण करें।
5. यह मिलन होना ईश्वर की इच्छा पर निर्भर है।
6. यह प्राणी सत्संगी है, इसका संग करने से लाभ होगा।
7. यह चिंता छोड़े, इस चिंता का समाधान हो चुका है।
8 इस विवाद का परिणाम शत्रु पक्ष में होगा।
9. यह मित्र भला नहीं है दुष्ट है।
10. यह युद्ध न करने में ही तुम्हारा हित है।

अंगिर : कथनम्

समयः प्रलयश्चैव ग्राहकः क्रयविक्रयौ। स्थानसंबन्धशंकाच्श्र विश्वासः किंकरस्तथा।। राजकार्यंतथैतानि फलानीमा निचादिशेत्।।

1. यह समय शनि छाया का है अनिष्ट होगा।
2. यह कष्ट की बैला कुछ समय की है।
3. ग्राहकों की रूचि तुम्हारी और आप ही बढ़ेगी।
4. यह वस्तु, विक्रय करने मे तनिक भी परेशानी न होगी।
5. यह स्थान मंगलकारी है।
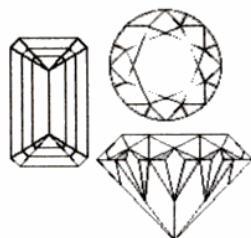
यंत्र विभाग

आध्यात्मिक साधना सिद्धि केन्द्र ने देश के विभिन्न विशेषज्ञों, कर्मकाण्डी ब्राह्मण पंडितों द्वारा शुभ नक्षत्र, शुभ मुहूर्त्त में कामना प्रदायक यंत्रों को, समस्या निवारण यंत्रों के निर्माण कर प्राण–प्रतिष्ठित किया जाता है। विश्व भर से लाखों व्यक्ति घर बैठे डाक द्वारा यंत्र आदि प्राप्त कर अपने जीवन को सफलता पूर्वक जी रहे हैं। आध्यात्मिक साधना सिद्धि केन्द्र ने लगभग 351 प्रकार के यन्त्रों का निर्माण कर उन्हें प्राणप्रतिष्ठित कर जनता तक निःस्वार्थ पहुंचा रहा है।

रत्न विभाग

रत्न धारण करने के इच्छुक व्यक्ति को चाहिये कि वह किसी विद्वान ज्योतिषी से रत्न की परीक्षा करवा ले। तत्पश्चात् असली रत्न को कुछ दिन किसी कपड़े में लपेट कर अपनी भुजा पर बांध दें। रत्न का उचित परिणाम दिखाई देंने पर उसे अंगूठी, लॉकेट, पेंडल आदि में जड़वा .कर शुभ मुहूर्त में प्राण–प्रतिष्ठित, शुद्ध करवा कर धारण कर लें। इच्छुक व्यक्ति संस्थान को पत्र लिखकर भी असली एवं प्रामाणिक रत्न प्राप्त कर सकते हैं।

मंत्र-तंत्र-अनुष्ठान विभाग

यदि आप किसी भी प्रकार का अनुष्ठान करवाना चाहते हैं, तो यह कार्य आध्यात्मिक साधना सिद्धि केन्द्र, जोधपुर में भी संभव है। इसके लिए आप जोधपुर फोन पर भी सम्पर्क कर सकते हैं एवं अपनी 2 रंगीन फोटो, अपना एवं पिताजी का नाम, गौत्र (यदि ज्ञात हो) भेजें।

प्रकाशन विभाग

डॉ. राधाकृष्ण श्रीमाली जी लगभग 30 वर्षो से पुस्तक लेखन का कार्य कर रहे हैं एवं लगभग 132 पुस्तकों का लेखन कर देश के ज्योतिशियों की

अग्रणी पंक्ति में स्थित हैं। डायमंड पॉकेट बुक्स, दिल्ली, मनोज पब्लिकेशन्स दिल्ली, राज पॉकेट बुक्स दिल्ली, कुसुम पॉकेट बुक्स, विवेक पॉकेट बुक्स, साधना पॉकेट बुक्स, रणधीर पॉकेट बुक्स, आदि से विशेष लोकप्रिय पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं और निरन्तर हो रही है। हिन्द पॉकेट बुक्स दिल्ली, से वार्षिक राशिफल निरन्तर प्रकाशित हो रहा है। जो कि भारत में ही नहीं विदेशों भी लोकप्रिय हो गया है। श्रीमालीजी की लेखनी में एक जादू है जिसमें पाठक सम्पूर्णता, सहजता, सरलता एवं रोचकता पाता हैं। गूढ़ से गूढ़ रहस्य भी आपकी सरल भाशा से सहज हो पाता है।

मीडिया विभाग

इस विभाग के अन्तर्गत ओडियो विजूअल अथवा स्लाईड शो के माध्यम से ज्योतिष एवं पराविज्ञान, वास्तु आदि की जानकारी दी जाती हैं। देश के अन्य भागों से एवं विदेशों से ज्योतिष, वास्तु एवं पराविज्ञान आदि विषयों पर विडियों कैसेट बनाकर भेजने की सुविधा भी प्रदान की जाती है। ज्योतिष, वास्तु एवं पराविज्ञान आदि विषयों पर सरकारी एवं प्राईवेट चैनल पर कार्यक्रम बनाकर प्रसारित करवाये जाते हैं।

डॉ॰ राधाकृष्ण श्रीमाली जी द्वारा प्रस्तुत दो टी. वी. सीरियल "ग्रहों का खेल" आस्था चैनल पर एवं "ज्योतिष आध्यात्म" संस्कार चैनल पर 20 मई 2001 से निरन्तर प्रत्येक रविवार को प्रसारित हो रहा है। इन धारावाहिकों में ज्योतिष, वास्तु, आध्यात्म, यंत्र–मंत्र–तंत्र के गूढ़ रहस्यों का उजागरण करते हैं। डॉ. श्रीमाली जी साथ ही देश–विदेश में फैली ज्योतिश एवं पराविज्ञान पर आधारित सभी विषयों की भ्रांतियों का, अंधविश्वासों का निराकरण भी करते हैं।

यदि किसी व्यक्ति को विशेष मंत्र या स्तोत्र की विधि की आवश्यकता है, तो वह संस्थान के द्वारा उचित मूल्य पर वह कैसेट प्राप्त कर सकता है। विडियो कैसेट के माध्यम से विभिन्न अनुष्ठान करने की विधि, पूजा पद्धतियाँ आदि समझाई जाती है। कई प्रकार की साधनाओं की विडियों कैसेट बनाकर उपलब्ध करवाई जा रही है। इस विभाग द्वारा श्रीसूक्त एवं दीपावली पूजन कैसेट की भारत ही नहीं विदेशों तक में धूम मची हुई है। बहुत से कैसेट इस विभाग ने जारी की है और निरन्तर कैसेट निकालने की तैयारियाँ चल रही है।

कम्प्यूटर विभाग

यह विभाग इन्टरनेट के माध्यम से ज्योतिष, वास्तु एवं यंत्र–तंत्र–मंत्र की सेवाएँ देने के कार्यक्रम बना रहा है। इन्टरनेट के माध्यम से आप निम्न

सेवाएँ प्राप्त कर सकेंगे–
आपका दैनिक भविष्य, सप्ताहिक भविष्य, मासिक राशिफल, मुखाकृति (फेस रीड़िग) से भविष्य ज्ञान, ज्योतिष और उससे संबंधित पूर्ण जानकारी, तिल, मस्से, त्वचा, स्वप्न–शकुन, शुभ कार्यों के लिए मुहूर्त, शादी विवाह के लिए कुण्डली मिलान, प्रश्न कुण्डली द्वारा भविष्य ज्ञान आदि जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

शिक्षण विभाग

डॉ. श्रीमालीजी शीघ्र ही देश के विभिन्न शहरों में ज्योतिष, वास्तु आध्यात्म को सिखाने के लिए एक विशेष दल का निर्माण कर रहे हैं। जिसके अन्तर्गत जो भी व्यक्ति इन विषयों पर जानकारी या सीखना चाहते हैं या भाग लेना चाहते हैं तो केन्द्र पर सम्पर्क कर सकते हैं।

साधना महोत्सव विभाग

इस विभाग के अन्तर्गत विभिन्न त्यौहारों पर जैसे होली, दीपावली, नवरात्रि, ग्रहण, शिवरात्रि आदि विभिन्न धार्मिक पर्व पर साधना–सिद्धि महोत्सव का आयोजन किया जाता है। इन शिविरों के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए जोधपुर में सम्पर्क कर सकते हैं। विशेषतया नवरात्रि एवं दीपावली महोत्सव के अन्तर्गत आध्यात्मिक साधना सिद्धि केन्द्र, जोधपुर के अन्तर्गत नवरात्रि में सम्पूर्ण नौ दिन एवं दीपावली पर सम्पूर्ण रात्रि दीपावली महोत्सव मनाया जाता है। जिसमें डॉ. श्रीमालीजी स्वयं देश–विदेश से आये साधकों को पूजन करवाते हैं। यदि आप भी चाहें तो 17 अक्टूबर से 9 दिन तक नवरात्रि महोत्सव में एवं 13 नवम्बर को दीपावली महोत्सव में भाग ले सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए जोधपुर में सम्पर्क करें। इन महोत्सवों में जोधपुर में ठहरने एवं खाने–पीने की विशेष व्यवस्था रहती है।

समस्या-समाधान शिविर विभाग

यह विभाग पिछले 17 वर्षों से कार्य कर रहा है जिसके अन्तर्गत डॉ. श्रीमाली जी विभिन्न शहरों में समस्या–समाधान शिविर का आयोजन करते हैं। जिसके अन्तर्गत डॉ. श्रीमाली जी जनता की जन्मपत्रिका, हस्तरेखा आदि के द्वारा उनकी समस्या का समाधान करते हैं। समाधान यंत्र, रत्न, पिरामिड चिकित्सा, मंत्रों आदि किसी के भी द्वारा किया जाता है। इस विभाग के अन्तर्गत विभिन्न शहरों के स्वयं सेवी शिष्य अपने शहर में शिविर रखने के लिए डॉ. श्रीमाली जी से समय लेकर सारी व्यवस्थांए करवाते हैं।

सम्मेलन विभाग

इस विभाग के अन्तर्गत विभिन्न शहरों में ज्योतिश, वास्तु एवं आध्यात्म के सम्मेलन किये जाते हैं। पिछले वर्ष 2000 में 18, 19 एवं 20 अगस्त को बिड़ला मातुश्री सभागार (बोम्बे हॉस्पीटल) मुम्बई में ऐतिहासिक सम्मेलन का आयोजन डॉ. श्रीमालीजी के द्वारा किया गया। जिसमें उद्घाटन महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री विलासराव देशमुख ने किया। इनके अलावा महाराष्ट्र सरकार के नौ मंत्रियों एवं कई फिल्मी हस्तियों ने अपना योगदान दिया। इस सम्मेलन में देश–विदेश के लगभग 500 ज्योतिषियों ने भाग लिया। दूसरा सम्मेलन मुम्बई में ही कल्याण में 30, 31 एवं 1 जनवरी 2001 को किया गया था। ऐसे कई सम्मेलनो के आयोजन का कार्य प्रगति पर है। इन सम्मेलनो का आयोजन के प्रबंध का कार्य श्री कमल श्रीमाली एवं सुरेश श्रीमाली जी करते हैं एवं शिष्य समीति करती है।

उक्त जानकारी हमने अपने जीवन में डॉ. राधाकृष्ण श्रीमाली जी के साथ रहकर एवं अनेक समारोह महोत्सव में भाग लेकर प्राप्त की है।

उत्तम मोटवानी (मोरिशस), रमेश सिंघल (वाशिंगटन, अमेरिका)
के. के. मिश्रा (कानपुर) श्याम दुबे (भोपाल)
आर. पी. सिंह (लखनऊ) स्मृति सिंह (मुम्बई)

श्री हनुमान चालीसा

दोहा

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुर सुधारि।
बरनऊं रघुवर बिमल जस, जो दायक फल चारि।।
बुद्धिहीन तनु जानि के, सुमिरौं पवन कुमार।
बल बुधि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस विकार।।

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुं लोक उजागर।।
राम दूत अतुलित बल धामा। अंजनि–पुत्र पवनसुत नामा।।
महावीर विक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी।।
कंचन बरन विराज सुवेसा। कानन कुण्डर कुचित केसा।।
हाथ वज्र अरू ध्वजा बिराजै। कांधे मूंज जनेऊ सोजै।।
संकर सुवन केसरी नन्दन। तेज प्रताप महा जग वन्दन।।
विद्यावान गुनी अति चातुर। राम काज करिवै को आतुर।।
प्रभु चरित्रा सुनिबै को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया।।
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। विकट रूप धरि लंक जरावा।।
भीम रूप धरि असुर संहारे। रामचन्द्र के काज संवारे।।
लाय सजीवन लखन जियाये। श्री रघुबीर हरषि उर लाये।।
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई।।
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं। अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नार सादर सहित अहीसा।।
जम कुबेर दिग्पाल जहां ते। कवि कोबिद कहि सकै काहं ते।।
तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा। राम मिलाय राज पद दीन्हा।।
तुम्हरो मंत्रा विभीषण जाना। लंकेश्वर भय सब जग जाना।।
जुग सहस्त्र जोजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लांधि गये अचरज नाहीं।।
दर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।
राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिन पैसारे।।
सब सुख लहै तुमहारी सरना। तुम रक्षक काहू को डरना।।

दशाफल दर्पण

जीवन में पग-पग पर महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तदशा व ग्रहों के गोचर का फल ज्ञान होता है। प्रमुखतः विशोंतरी, अष्टोतरी व योगिनी दशाएं प्रचलित हैं। किन-किन दशाओं में किन-किन ग्रहों का क्या-क्या फल प्राप्त होता है, यह इस पुस्तक में समझाया गया है। अशुभ दशा में इनसे होने वाले अशुभ फलों से कैसे बचा जा सकता है, व क्या उपाय किये जा सकते हैं। दशान्तर्दशा कैसी निकाली जाय समझाया गया है।

तन्त्र रहस्य

ज्योतिष व तंत्र का अर्थ पारस्परिक सम्बन्ध, कुण्डली परिचय, धन योग दुर्लभ तांत्रिक वस्तुएं, विशेष यंत्र, बांध, तंत्र शक्ति आदि व रसायन क्रिया, बायो केमीकल तंत्र, वशीकरण, सम्मोहन, उच्चारण, विद्वेषण पर गंभीरता से विचार किया गया है। सरल, कम खर्चीले उपाय कर प्रत्येक व्यक्ति इनसे लाभ उठाकर अपने जीवन में शुभ परिवर्तन कर सकता है।

अंक ज्योतिष

जीवन में पग-पग पर अंक अपना प्रभाव छोड़ते हैं। मात्र जन्म तिथि के आधार पर, जन्म, मास, तिथि, वार से अपना भूत, वर्तमान, भविष्य जाना जा सकता है। इसमें हस्तरेखा या जन्मपत्री की आवश्यकता नहीं रहती। अनुकूल वस्त्र, भोजन, व्रत उपासना से भविष्य संवारा जा सकता है। भविष्य में होने वाले रोग व उपचार का ज्ञान किया जा सकता है।

भारतीय ज्योतिष

ज्योतिष फलित का आधार गणित है। इस पुस्तक में दो भाग कर जन्मपत्री बनाने का विधान, रीति एवं द्वितीय भाग में उनके पक्ष पर विचार किया गया है। गणित व फलित दोनों में दुरुहता को दूर कर मूल्य श्रीगणेश को याद किया जाता है जिससे जो भी कार्य करें उसमें विघ्न न आये और वह कार्य सफल हो। इसी के बारे में सम्पूर्ण विवरण दिया गया है गणेश उपासना एवं पूजा विधि पुस्तक के अन्तर्गत।

मंत्र शक्ति से कामना सिद्धि

आज के अर्थ विषमता के युग में, भौतिकता की श्रीवृद्धि व आवश्यकताओं की पुर जोर मांग में हम किस प्रकार साधारण मंत्रों का प्रयोग दैनिक जीवन में कर अभिलाषाओं व इच्छाओं की पूर्ति कर सकते हैं। मंत्र शक्ति रोग निवृत्ति, धनागम, मंत्र चिकित्सा, मानसिक शान्ति, प्रेतात्माओं से छुटकारा, शत्रु नाश, हानि को लाभ में बदलने, दैनिक शक्ति, पूजन, विवाह, दरिद्र नाश के सरल-सुगम उपाय सुझाये गये हैं। ***मूल्य : 40 रुपये पृष्ठ 125***

स्तोत्र शक्ति

इस पुस्तक में बिना तांत्रिक क्रिया किए यंत्रों के मात्र मंत्र माध्यम से, स्तोत्रों के माध्यम से जीवन में कैसे परिवर्तन कर सकते हैं समझाया गया है। जीवन में भिन्न-भिन्न ग्रहों के प्रभाव से होने वाले दुष्प्रभावों को स्तोत्र माध्यम से ग्रहों को अनुकूल बनाया जाय। काली उपासना, बगलामुखी, नवग्रह शांति, महामृत्युंजय हनुमन्त उपासना, संतान प्राप्ति, आदित्य हृदय स्तोत्र, आदि से जीवन में पग-पग पर लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

मूल्य : 30 रुपये पृष्ठ 168

ग्रह गोचर

इस पुस्तक में मूलतः ग्रह कहाँ-कहाँ, किस-किस भाव में क्या-क्या फल देते हैं? ग्रह युति क्या प्रभाव देती है? ग्रहों का मैत्री भाव कितना प्रभावी होता है? उच्च-नीच के ग्रहों का क्या प्रभाव है? तथा ग्रह सदैव चलायमान है, अतः प्रत्येक ग्रह भिन्न-भिन्न राशियों में चलकर कितना प्रभाव देते हैं, तथा दशा-अन्तर्दशा का उसमें कितना सहयोग रहता है? इस पर विशेष बल दिया है। भारत वर्ष में बिकने वाली सर्वाधिक पुस्तकों में से यह एक है।

मूल्य : 40 पृष्ठ 148

यन्त्र सिद्धि

विपत्ति के समय मंत्र सूक्त, स्तुति, अष्टकारी के साथ-साथ यंत्रों का उपयोग, महत्ता पर जोर दिया गया है। इनमें प्रमुखतः बगलामुखी, श्रीयंत्र, गणेश यंत्र, दुर्गा, गायत्री, सूर्य यंत्र के साथ-साथ मंत्र-यंत्र शक्ति में सहयोगी प्रक्रियाएं, स्वर व व्यंजन का प्रभाव, संकट नाश हेतु अनुष्ठान के साथ-साथ अनुभवसिद्ध मंत्र-यंत्र दिये गये हैं।

मूल्य : 30 रुपये पृष्ठ 128

दुर्गा उपासना

उपासना क्रम में इस महत्वपूर्ण पुस्तक में दीपक, आचमन, आसन पूजा, आह्वाहन, संपूर्ण पूजन, कलश स्थवन, पुण्याह वाहन, वेदोक्त देवी पूजन, अथाग्न्युत्तारव विधि शाप विमोचन, नष्वर्ग विधि, अग्नि स्थापन, पूर्णाहूति, दुर्गा गायत्री, क्षमाष्व स्तोत्र, शान्ति पाठ, वर प्राप्ति, काली स्तवन, ध्यान, मंत्र शक्ति में सहयोगी प्रक्रियाओं का दिग्दर्शन करवाया गया है। ***मूल्य : 25 रुपये पृष्ठ 160***

गायत्री उपासना

उपासना सीरीज में गायत्री उपासना एक प्रायोगिक पुस्तक है। इसमें शांति पाठ, देव पूजन, गणेश स्तवन, गायत्री मंत्र की व्याख्या, स्वरूप, संकल्प, गायत्री स्तोत्र, विश्वामित्र संहितोक्त, गायत्री कवच, गायत्री महात्म्य, यज्ञ नियम, पूजन सामग्री, पुष्पांजलि गायत्री पूजा, हवन, जाप, ध्यान आदि पर विधिवत् प्रकाश डाला गया है।

मूल्य : 60 रुपये पृष्ठ 160

डॉ. राधाकृष्ण श्रीमाली ज्योतिष, तंत्र, मंत्र और वास्तु के स्थापित हस्ताक्षर हैं। अनेक दशकों में आपने देश को सैकड़ों पुस्तकें दी हैं। आपकी रचनाओं और खोजों के चलते ही आपको दर्जनों बार सम्मानित किया जा चुका है। वे सिर्फ कर्मकांडी नहीं है, बल्कि अनुभववाद भी भरोसा करते हैं। हनुमानतंत्र साधना डॉ. श्रीमाली की ऐसी ही पुस्तक है, जिसमें खोज और अनुभवों का सम्मिश्रण है। इसलिए यह पुस्तक संग्रहणीय तो है ही आध्यात्मिक यात्रा के लिए जरूरी भी है।

A.H.W. Sameer Series

डायमंड पॉकेट बुक्स

ISBN: 81-7182-992-9
Rs. 75/-